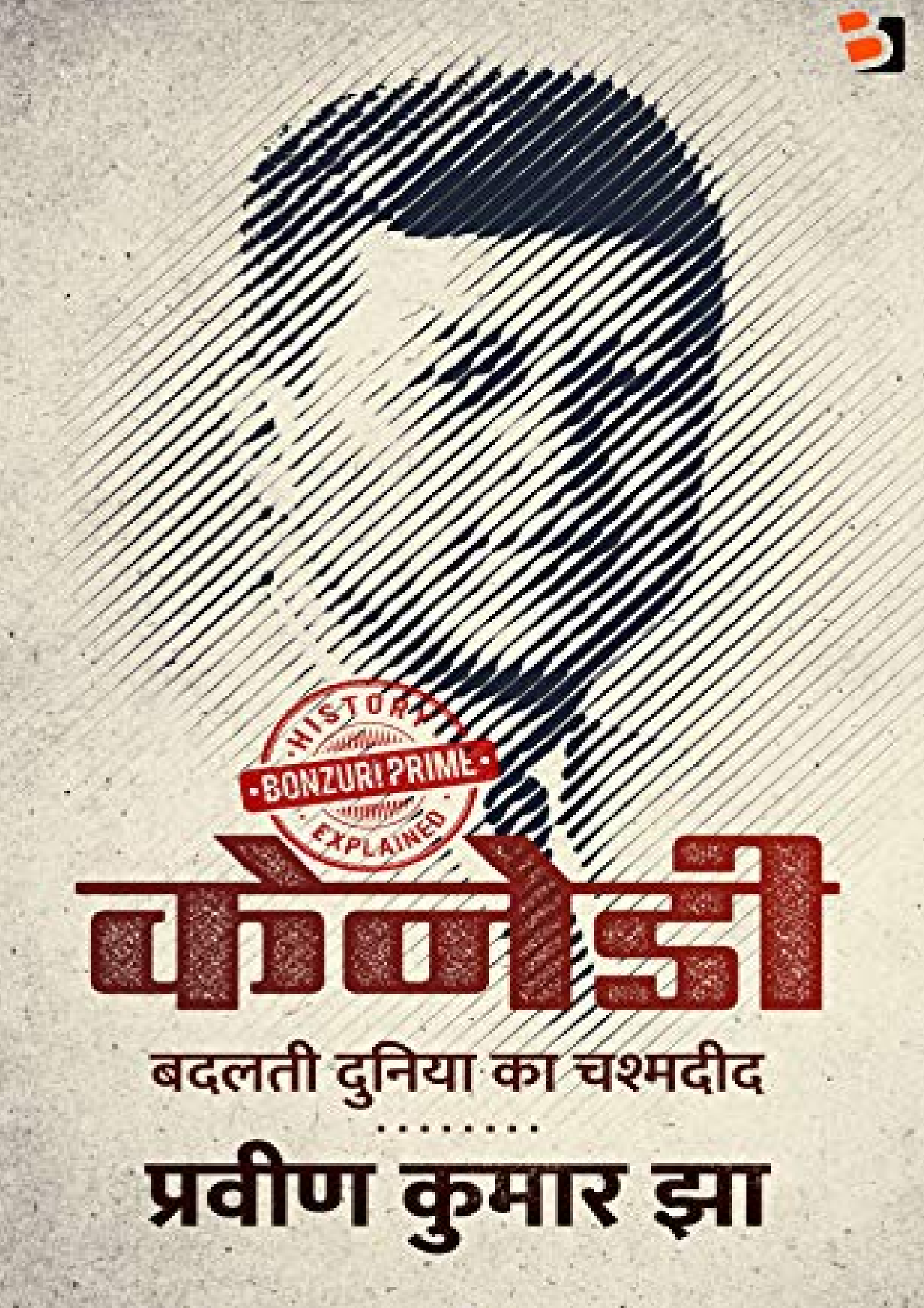

HISTORY
BONZURI PRIME
EXPLAINED

कैनेडी

बदलती दुनिया का चश्मदीद

प्रवीण कुमार झा

सामग्रियाँ

कॉपीराइट

एक और मृत्यु

जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा

शराबबंदी

महामंदी : द ग्रेट डिप्रेशन

माफ़िया

मेरा बेटा राष्ट्रपति बनेगा!

अमरीकी लोकतंत्र

मैन्हैटन प्रोजेक्ट

द्वितीय विश्व युद्ध

शीत युद्ध

लाल रंग का भय: द रेड स्केयर

ख़ुस्चेव

रॉक एंड रोल

जैक और जैकी

फ़िदेल कास्त्रो

प्रेसिडेंट केनेडी

हूवर

बॉबी

बे औफ पिग्स

गोरे और काले

होफ़्फ़ा और मार्लिन मुनरो

वियतनाम

परमाणु प्रलय

भारत चीन युद्ध

मार्टिन लूथर किंग

केनेडी की हत्या

उपसंहार

कुछ संदर्भ:

केनेडी
लेखक: प्रवीण कुमार झा
ASIN: B088NBZHZD
© प्रवीण कुमार झा

प्रथम संस्करण : मई 2020

प्रकाशक: बोंज़ुरी प्रोजेक्ट

ईमेल: doctorjha@gmail.com

आवरण: Zodel Studios

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक के लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुन: प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

एक और मृत्यु

16 जुलाई, 1999

कहते हैं दुनिया की कई मृत्यु एक दूसरे से जुड़ी होती है। भूत में भी, भविष्य में भी। यह कहानी जो मैं लिख रहा हूँ, सैकड़ों बार कही जा चुकी है, लिखी जा चुकी है, पढ़ी जा चुकी है। यह भारत की कहानी भी नहीं है। लेकिन, ऐसी कहानियाँ बार-बार सामने आती है। जैसे द्वितीय विश्व-युद्ध की कहानी। जैसे रूस की क्रांति की कहानी। जैसे शीत-युद्ध की कहानी। जैसे ओसामा बिन लादेन की कहानी। चार्ल्स शोभराज की कहानी। राजकुमारी डायना की कहानी। ईदी अमीन की कहानी। नक्सलबाड़ी की कहानी। इमरजेंसी की कहानी। ये कहानियाँ दुनिया को गढ़ती है, और दुनिया इन कहानियों को।

उस दिन मानहट्टन में वैसी ही उमस और झीनी बारिश थी, जैसी अक्सर होती है। बंबइया मौसम। एक दिन पहले ही जॉन ने अपने पैर का पलस्तर कटवाया था। टखनों में अब भी मोच थी। लेकिन अपनी बहन रोरी की शादी के लिए निकलना था। जॉन नौसिखिया पाइलट तो थे ही, और रईस अलग। मानहट्टन से पुल पार कर न्यू जर्सी और वहाँ उनका अपना 'पाइपर साराटोगा 'जहाज तैयार था। आठ बजे रात तक उनकी पत्नी भी अपनी बहन के साथ पहुँच गयी और साढ़े आठ बजे जहाज लेकर जॉन उड़ गए।

अब एक नौसिखिए पाइलट, जिसका प्रशिक्षण भी ठीक से पूरा नहीं हुआ था, उसको इतनी रात उड़ने कैसे दिया गया, यह कोई नहीं जानता। कभी-कभी आप उस ऊँचाई पर होते हैं कि उड़ना यूँ भी बस एक छोटी छलाँग ही होती है। जैसे संजय गांधी की छलाँग?

जॉन, उनकी पत्नी कैरोलिन और उनकी साली लॉरेन न्यू जर्सी से उड़े। उनका सफर लंबा नहीं था, लेकिन समंदर के किनारे यूँ भी हवा रुख़ बदलती रहती है। पाइलट बताते हैं कि ऐसे इलाकों में लैन्डिंग कठिन होती है, और बार-बार नीचे जाकर, वापस ऊपर उठना होता है। ऐसा करते समय अगर जरा भी दिशा बदली, तो जहाज पर ऐसा टॉर्क दबाव लगता है कि वह गोल-गोल कलाबाजियाँ लेने लगती है; और नियंत्रण से बाहर हो जाती है। ऊपर से धुँध और अंधेरा अलग। जॉन का जहाज सभी रडारों से अचानक गुम हो गया। वह कभी लैन्ड हुआ ही नहीं।

अमरीका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन को खबर पहुँची। उन्होंने तुरंत जहाज ढूँढने के लिए विशेष टीम लगा दी। विपक्षियों ने इस शक्ति के दुरुपयोग की आलोचना भी की। लेकिन, यह कोई साधारण व्यक्ति तो था नहीं। इसे लोग अमरीका का युवराज कहते थे, जिसका भविष्य राष्ट्रपति बनना ही था। भले ही स्वयं क्लिंटन परिवार के लिए यह रास्ते का काँटा भी हो सकता था।

दो दिन तक कहीं कुछ अता-पता नहीं चला। फिर कुछ जहाज के अवशेष मिले। पाँच दिन बाद गोताखोरों को समुद्र-तल में वह कॉकपिट मिला, जिसमें उनके लाश अब भी यथावत बैठे थे। बहन की शादी तो पहले ही रुक गयी थी, वहाँ अब सामूहिक मातम मन रहा था, जिसमें राष्ट्रपति दंपति भी पहुँचे।

आखिर यह घोषणा हो गयी- 'जॉन एफ. केनेडी जूनियर की हवाई दुर्घटना में मृत्यु'

और इस तरह केनेडी परिवार की रहस्यमय मौतों में एक नाम और जुड़ गया। और ये सभी मौत जैसे एक दूसरे से जुड़े थे। मृतक के पिता जॉन एफ. केनेडी सीनीयर, और चाचा बॉबी केनेडी की हत्या हुई थी, जबकि यहाँ तो दुर्घटना थी। लेकिन, जैसे यह सब विधान था।

अब इस बात को बीस साल से ऊपर हो गए। एक अफ़वाहबाज गिरोह ने हाल में खबर फैलाई की उस प्लेन-क्रैश में असल केनेडी मरे ही नहीं। वह जिंदा हैं, और उनके पास कई रहस्य हैं। डोनाल्ड ट्रंप के साथ अगले चुनाव में वह नजर आएँगे।

इस बकवास से बस एक बात साबित होती है कि अमरीका केनेडी नाम अब तक नहीं भूला। जबकि उस नाम का व्यक्ति अमरीकी इतिहास का सबसे कम उम्र का और सबसे कम समय तक कुर्सी में रहने वाला राष्ट्रपति था।

जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा

अमरीका परदेशियों का देश है। आप भारत में कहीं भी खड़े हों, उनकी सात क्या, पिछली सौ पुश्तें भारतीय ही होगी। अमरीका में शायद ही कोई मिले जिसकी सात पुश्तें पक्की अमरीकी रही हो। यहाँ तक कि राष्ट्रपति भी विदेशी मूल के ही रहे हैं। डोनाल्ड ट्रंप के दादा जर्मन थे, तो बैरक ओबामा के पिता केन्या के। जब-जब राष्ट्रपति चुनाव होते हैं, तो यह कुंडली निकाली भी ज़रूर जाती है। जैसे भारत में जाति निकाली जाती है, अमरीका में भी खानदान उधेड़ा जाता है। यह सिद्ध करना होता कि वह पक्का अमरीकी है।

अगर यह सिद्ध हो गया, तो फिर धर्म की बारी। तुलसी गबार्ड हिन्दू हैं, यह बात चुनावी मुद्दा बन जाएगी। ईसाई में भी कौन सा ईसाई? कैथोलिक या प्रोटेस्टेंट?

अमरीकी इतिहास में आज तक एक ही कैथोलिक राष्ट्रपति हुए- जॉन एफ. केनेडी। वही ऐसे राष्ट्रपति भी हुए जिन्होंने अपने आइरिश मूल को तुरुप का पत्ता बनाया। लेकिन, वह आधुनिक अमरीका के इकलौते राष्ट्रपति हुए, जिनकी हत्या कर दी गयी। यानी आज तक किसी

कैथोलिक राष्ट्रपति ने कार्यकाल पूरा नहीं किया (या नहीं करने दिया गया?)।

इसकी जड़ों में चलते हैं।

जब अमरीका की खोज 1492 ई. में कोलंबस ने की, तो रोमन पोप ने पूरे अमरीका को कैथोलिक बनाने की मुनादी कर दी। लगभग सौ वर्षों तक स्पैनिश फौज ने यहाँ के मूल रेड इंडियन समुदाय का विनाश कर कैथोलिक ईसाई धर्म का परचम लहराया। लेकिन उनकी पकड़ उत्तर अमेरिका में कम ही थी।

सत्रहवीं सदी की शुरुआत में कुछ सौ ब्रिटिश प्रोटेस्टेंट 'मेफ्लावर 'जहाज पर अमरीका पहुँचे। और फिर अंग्रेज़ों की टोलियाँ आनी शुरू हुई। ये मूलत: प्रोटेस्टेंट थे। ये अपने साथ उत्तरी आयरलैंड के बंधुआ मजदूर भी लेकर आए थे। ये आइरिश मूल के गरीब लोग अमरीका के खेतों में जान डालने लगे। वहीं ब्रिटिश-स्कॉटिश मूल के सामंतों की सत्ता पूरे अमरीका में पसरने लगी।

इन सामंतों की दूर लंदन में बैठे ब्रिटेन की तख़्त से अन-बन होने लगी। ब्रिटेन चाहता था कि अमरीका को चूस कर उसके शाही खजाने भरे जाएँ। अमरीकी सामंतों को ब्रिटिश संसद में अधिकार नहीं दिया जाता, और कर खूब वसूला जाता। उन्होंने कहा कि हम बिना अपने प्रतिनिधित्व के एक पैसा नहीं देंगे (No Taxation Without Representation)। और जब ब्रिटेन ने अमरीका में बाहर की चाय बेचनी चाही, तो रेड इंडियन के भेष में उस चाय के जहाज पर आक्रमण कर दिया गया, और सारी चाय समंदर में फेंक दी गयी। 1773 का यह विद्रोह 'बॉस्टन टी पार्टी' कहलाया।

ब्रिटिश फौज के ही एक अफसर जॉर्ज वाशिंगटन फौज छोड़ कर वर्जीनिया के खेतों में खेती-बाड़ी करने चले गए थे। लेकिन देश के हालात कुछ ऐसे बने कि उन्हें विद्रोहियों का नेतृत्व करना पड़ा, और अंग्रेज़ फौज को हरा कर अमरीका आजाद हुआ। यह साल था- 1783.

उस वक्त 13 कॉलोनी में बँटा अमरीका 'यूनाइटेड स्टेट्स 'कहलाने लगा, जो नाम अब तक है। हालांकि उस वक्त न्यूयॉर्क वाले 'न्यूयॉर्कर 'और

वर्जीनिया वाले 'वर्जीनियन 'ही कहलाते। एक साझी अमरीकी विरासत का कंसेप्ट आने में देर थी। दक्षिण-पश्चिम के कई राज्य जैसे टेक्सास, कैलिफ़ोर्निया, फ़्लोरिडा, नेवादा आदि तो अमरीका के हिस्से थे ही नहीं। कुछ खरीदे गए और अधिकतर मेक्सिको से लड़ाई कर जीते गए। और यह बहुत पुरानी बात नहीं है। उन्नीसवीं सदी (1848) में जाकर मेक्सिको से कैलिफ़ोर्निया और अरिजोना जैसे बड़े राज्य छीने गए हैं। आज हालत यह है कि मेक्सिको वालों को धकिया कर एक छोटा सा देश बना दिया गया है, और दीवाल बनाया जा रहा है।

लेकिन, जब अमरीका के पुराने शाही ब्रिटिश रीति-रिवाजों के साथ जब दक्षिण के ये खेतिहर 'काउ बेल्ट 'सरीखे राज्य मिले, फिर तो द्वंद्व होना ही था। संस्कृति का द्वंद्व। वंश का द्वंद्व। नस्ल का द्वंद्व। धर्म का द्वंद्व। वही द्वंद्व कि आखिर कौन कितना अमरीकी है। यह मंथन-युद्ध ही कहलाया- 'अमेरिकन सिविल वार'।

इस पूरे काल-क्रम में एक महत्वपूर्ण बात यह हुई कि एक मूल कैथोलिक अमरीका धीरे-धीरे प्रोटेस्टेंट-बहुल अमरीका बनता चला गया। और आज इतना समतावादी होकर भी, न एक महिला राष्ट्रपति दे पाया, न केनेडी के पहले या बाद कोई कैथोलिक राष्ट्रपति, और न कोई सौ फीसदी अश्वेत राष्ट्रपति।

◆ ◆ ◆

अमरीका सिर्फ गोरों की धरती नहीं थी। अमरीका तो रेड इंडियन की धरती थी, जो उन्नीसवीं सदी तक घट कर महज दो प्रतिशत रह गए थे। लेकिन, उनसे कहीं बड़ी जनसंख्या थी अफ्रीकी अश्वेतों की। वे लगभग 15 % जनसंख्या थे, लेकिन उनकी गिनती नहीं थी। वे तो गुलाम थे। आयरिश मजदूरों की जगह इन अफ्रीकियों ने बहुत पहले ले ली थी। उनके पास कोई अधिकार

नहीं था। गुलाम बनाना कानूनी था, और वे दो सौ वर्षों से अमरीकी खेतों में काम कर रहे थे, अमरीका की राजधानी में इमारतें बना रहे थे, अमरीका को उद्योग का केंद्र बना रहे थे। पीढ़ी-दर-पीढ़ी।

अब्राहम लिंकन से बहुत पहले 1822 ई. में ही अमरीकी राष्ट्रपति जेम्स मुनरो ने उनको मुक्त करने का सोचा। उत्तर के राज्यों से उन्हें मुक्त भी किया गया। लेकिन अब वे जाए कहाँ? वापस अफ़्रीका? उन्हें तो अपने पूर्वजों का गाँव-घर भी मालूम नहीं। फिर जेम्स मुनरो और कुछ धनी सामंतों ने अफ़्रीका में जमीन तलाशनी शुरु की। पश्चिमी अफ़्रीका में जमीन खरीद कर एक देश बनाया- लिबेरिया ('लिबरेशन 'शब्द से)। और राजधानी बनी मुनरो के नाम पर— मुनरोविया। उसे अमरीका का झंडा भी मिला, जो आज तक है। वहीं आजाद अफ़्रीकियों को भेजा जाने लगा। लेकिन पीढ़ीयों के गुलाम को अगर अचानक आजाद कर दिया जाए, तो क्या वह जी पाएगा? वह तो अपने मालिक को ढूँढेगा, जो उसे आदेश देता रहे। यह सपना टूट गया। पहली कुछ खेपों के बाद कोई गया ही नहीं। आज वे अमरीकी गुलाम वंशज उस देश में महज पाँच प्रतिशत रह गए हैं।

कुछ वर्षों बाद (1840 ई.) ही आयरलैंड में अकाल पड़ा। यह आलू की फसल की बीमारी थी, जिससे गाँव के गाँव भूखे मरने लगे। इसकी वजह से आयरलैंड से एक पलायन फिर से हुआ। उसी भुखमरी से भाग कर दो खेतिहर भी अमरीका आए। एक का नाम था— पैट्रिक केनेडी। और दूजे का— थॉमस फिज्जेराल्ड। इन्हीं दो भागे हुए असहाय कैथॉलिक परिवारों के मिलन से अमरीका का सबसे ताकतवर परिवार जन्म लेने वाला था।

वहीं दूसरी ओर इलिनोइस के एक वकील वर्षों से राजनीति में अपनी जगह तलाश रहे थे और बार-बार अपनी कोशिशों में हार रहे थे। आखिर 1861 ई. में वह अमरीका के राष्ट्रपति बन गये। उनका नाम था— अब्राहम लिंकन। उनके आते ही अमरीका का सांस्कृतिक द्वंद्व युद्ध में तब्दील हो गया।

जहाँ उत्तर के अमरीकी राज्य औद्योगिक क्रांति में प्रगति कर रहे थे, दक्षिण अब भी खेती-बाड़ी में लगा था। उत्तर प्रगतिवादी था, और दक्षिण रुढ़िवादी। उत्तर ने ग़ुलाम मुक्त कर दिए थे, और दक्षिण की तो

रोटी ही ग़ुलामों पर निर्भर थी। दक्षिण ने उत्तर से खुद को अलग कर लिया। जब लिंकन कुर्सी पर बैठे, अमरीका दो फाँक में बँट चुका था। दूसरे फाँक ने अपना राष्ट्रपति भी चुन लिया था— जेफरसन डेविस।

लिंकन का राष्ट्रपति काल (चार साल,42 दिन) तो युद्ध लड़ते ही निकल गए। 1863 ई. में गेटिसबर्ग में हज़ारों लाशों के बीच खड़े होकर लिंकन ने कहा,

“हमारे पूर्वजों ने एक ऐसे देश की कल्पना की थी, जहाँ आजादी होगी, हर इंसान बराबर होगा। आज इस युद्ध में हमारे देश की परीक्षा है कि क्या हम इसे बचा पाएँगे? क्या इन शहीदों के खून बरबाद चले जाएँगे? हम यह प्रतिज्ञा करते हैं कि ईश्वर के आशीर्वाद से एक नए देश का निर्माण करेंगे; एक ऐसी सरकार का, जो जनता की होगी, जनता के लिए होगी, और जनता के द्वारा होगी; और हमारा अमरीका कभी इस धरती से खत्म नहीं होगा।”

लिंकन कोई देव-तुल्य व्यक्ति नहीं थे। वह एक साधारण वकील, लेकिन चालाक राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने सभी तरह की कूटनीतिक चालों से न सिर्फ गृह-युद्ध जीता बल्कि कम समर्थकों के बावजूद ग़ुलामी प्रथा के ख़िलाफ़ संविधान में बदलाव कराया। कुछ विपक्षियों को प्रलोभन देकर मिलाया, और कुछ को वोटिंग के समय गायब रहने पर मना लिया।

एक वकीली पेंचों से भरा कथन जो उस वक्त संसद में कहा गया, “गोरे और काले एक नहीं हैं। यहाँ तक कि हर गोरे भी एक नहीं हैं। मनुष्य कभी एक समान हो भी नहीं सकते। यह भेद तो रहेगा ही। लेकिन, देश के कानून की नजर में सभी एक होने चाहिए।”

जब सौ साल बाद रॉबर्ट (बॉबी) केनेडी अश्वेतों के अधिकार के लिए अपनी बात रख रहे होंगे, तब उन पर यही तंज किया जाएगा, “लिंकन भी नीग्रो को गोरों के बराबर नहीं मानते थे। तुम कौन होते हो यह मानने वाले?”

अमरीका की धरती पर यह गोरे-कालों की लड़ाई लंबी चलेगी। लिंकन की तो गोली मार कर हत्या की ही गयी, केनेडी बंधु की भी की जाएगी। जैसा पहले कहा है, हर ऐसी मौत एक दूसरे से कहीं न कहीं जुड़ी होगी।

THE ASSASSINATION OF PRESIDENT LINCOLN.

◆ ◆ ◆

शराबबंदी

जब आइरिश आए तो शराब भी लाए। कहते हैं, आइरिश के तो खून में शराब बहता है। यूरोप के किसी भी शहर में अगर बढ़िया शराब पीनी हो, तो जैसे भारत में पंजाबी ढाबे होते हैं, वहाँ आइरिश पब होते हैं। यह कहा जाता है कि जिस आइरिश के घर में शराब की टंकी (स्टॉक) भरी न हो, वह पक्का आइरिश नहीं। एक संत ब्रिजित की किंवदंती है कि उन्होंने सड़क पर पड़े कुष्ठ-रोगियों के लिए पानी को बीयर में बदल दिया था। ऑस्कर वाइल्ड जैसे महान् साहित्यकार आइरिश पब में ही बैठ कर सृजन करते रहे। गिनिस बीयर और दुनिया के बेहतरीन व्हीस्की आयरलैंड से ही तो आते हैं। और बिना आइरिश व्हीस्की के आप आइरिश कॉफी नहीं बना सकते। तो यह उनकी जीवन-शैली है।

जब केनेडी के पूर्वज बॉस्टन में आए, तो उन्होंने धीरे-धीरे शराब का धंधा सँभाल लिया। एक आइरिश होने के नाते यह उनका धर्म था, और ताकत का जरिया भी। बड़े-बड़े रसूखदार से लेकर गरीब तक उन्हें सलाम करते थे। पैट्रिक जोसफ केनेडी (राष्ट्रपति केनेडी के दादा) बॉस्टन के कद्दावर डेमोक्रैट नेता बन कर उभरे। उन्होंने एक हार्वर्ड के चिकित्सक महिला से विवाह भी कर लिया, और इस तरह आयरलैंड से पलायित यह परिवार अमरीका के रईस और इज्जतदार परिवारों में गिना जाने लगा।

आइरिश में एक और शातिर गुण है, जिसे 'आइरिश स्विच 'कहते हैं। यह राजनीति के लिए सबसे जरूरी अवयव है। आप किसी से बात करते रहिए, किसी और का हाथ अपने हाथ में लिए, किसी तीसरे पर नजर बनाए हुए। जॉन फिज्जेराल्ड (राष्ट्रपति केनेडी के नाना) के विषय में कहा जाता कि वह तो उड़ती चिड़िया से भी अपने लिए वोट डलवा लें। उनका तो सीनेटर बनना तय ही था, वह बॉस्टन के मेयर भी बन गए।

गृह-युद्ध के बाद अमरीका अब वह छलाँग ले रहा था, जो उसे महाशक्ति बनाने वाला था। विज्ञान की ओर। बॉस्टन में ही एम.आइ.टी. और हार्वर्ड जैसे संस्थान थे, जहाँ इंजीनियरिंग के उस्ताद तैयार हो रहे थे। एलीशा ग्रे और ग्राहम बेल टेलीफ़ोन बनाने की रेस में थे, तो थॉमस अल्वा एडिसन हर साल कुछ नया खोज करते जा रहे थे। निकोला टेस्ला जैसे मेकैनिकल वैज्ञानिक भी थे, तो उधर ओहायो में राइट बंधु ने पहला हवाई जहाज बना लिया। अमरीका का पेटेंट ऑफ़िस धड़ा-धड़ पेटेंट दर्ज कर रहा था, और हर नयी खोज पर अमरीका का अधिकार होता जा रहा था। 1896 तक हेनरी फोर्ड ने पहली कार भी अमरीका की सड़कों पर दौड़ा दी।

जब अमरीका तेज गति से औद्योगिक प्रगति कर रहा था, यूरोप विश्व-युद्ध में उलझने की तैयारी कर रहा था। भोगौलिक दूरी की वजह से अमरीका को यह आजादी थी, कि वह किसी भी बाहरी युद्ध से लगभग दूर ही रहा। वहाँ जो युद्ध हुए, घर में ही हुए। यह बात जेम्स मुनरो ने बहुत पहले कह दिया था कि हम यूरोप के झगड़ों में अपनी नाक नहीं घुसेड़ेंगे और यूरोप यहाँ न घुसेड़े, जिसे 'मुनरो डॉक्ट्रिन 'कहा जाता है। तब तो माहौल ऐसे बने कि अमरीका को गाहे-बगाहे अपनी नाक घुसेड़नी ही पड़ी। पहले विश्व-युद्ध के अंत में ही जर्मनी से सीधी भिड़ंत हो गयी। इसका प्रतिफल यह हुआ कि अमरीका ने युद्ध के हथियार बनाने शुरु कर दिये, और हज़ारों युद्ध-विमान बना कर रख लिए। राष्ट्रपति वूड्रो विल्सन ने युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र समूह (लीग ऑफ नेशन्स) की नींव भी रख दी, और इस तरह अमरीका अब विश्व में न सिर्फ दखल दे रहा था, बल्कि गाइड करने लगा था।

वूड्रो विल्सन ने उसी वक्त एक और धमाका किया, जिससे अमरीका में एक नए पक्ष का उदय होने वाला था। 17 जनवरी, 1920 से अमरीका में शराब-बंदी हो गयी। अमरीका में शराब-बंदी?

इस फैसले से जनता में खलबली तो मची ही, लेकिन शराब की काला-बाज़ारी का धंधा बुलंद हुआ। राष्ट्रपति केनेडी के पिता 'पापा जो 'अभी शराब-व्यापार में अपनी पकड़ मजबूत कर ही रहे थे, इस फैसले ने धंधा चौपट करने की बजाय उन्हें नया अवसर दे दिया।

अमरीका में एक नये शक्ति-केंद्र की शुरुआत हुई- माफ़िया!

◆ ◆ ◆

शराब आइरिश और जर्मन लोग बनाते होंगे, पीते तो अमरीकी हैं। हर पाँचवा अमरीकी 'बडवाइजर 'बीयर की छोटी-छोटी कैन लिए मिल जाता है। कॉलेज के विद्यार्थी बीयर पीकर कक्षाओं में बैठते हैं। अमरीका आने वाले अंग्रेज़ वे शाही ड्यूक परिवार के लोग नहीं थे, वे तो वहाँ के खेतिहर या छुटभैये जमींदार सरीखे लोग थे। सुबह-शाम शराब पीते थे।

जब पहला 'मेफ्लावर 'जहाज अमरीका आया, तो वह बीयर के बड़े-बड़े बैरल से भरा हुआ था। जॉर्ज वाशिंगटन ने जब आजादी की लड़ाई लड़ी तो हर फौजी को रोज आधा गिलास रम (या व्हीस्की) का राशन मिलता। अब्राहम लिंकन तो खुद ही शराब बेचते थे। वह इकलौते राष्ट्रपति थे जिनके पास शराब बेचने का लाइसेंस था। केनेडी परिवार की गाथा तो लिख ही रहा हूँ। हद तो यह थी कि डॉक्टर प्रिस्क्रिप्शन में शराब लिखते थे कि इससे दर्द कम हो जाएगा, नींद अच्छी आएगी। यहाँ बस इम्पोर्टेड बोतलबंद शराब की बात नहीं, बल्कि लोग अपने घरों के बाहर एक लकड़ी का बड़ा बैरल रखते थे, कि खेत से काम कर आए और मग में भर-भर कर 'सिडार 'या बीयर पीया। मछुआरे चोरी-छुपे अवैध शराब अपने जूतों में छुपा कर भी बेचते, और तभी शब्द जन्मा- 'बूटलेगर 'यानी अवैध शराब बेचने वाला।

लेकिन दास-प्रथा खत्म करने के बाद अब अमरीका को इस शराब-प्रथा पर चोट करना था। यह लहर चलने लगी कि यह हमारी अमरीकी संस्कृति नहीं है, यह बाहर के लोग लाए हैं।

इसकी शुरुआत उन्नीसवीं सदी में 'वाशिंगटोनियन 'नामक समूह ने की। उन्होंने एक नुक्कड़ नाटक खेला— 'टेन नाइट्स इन अ बार-रूम 'जिसमें शराब में धुत्त पिता को घर बुलाने एक बच्ची आती है, और वह खुद शराब में धुत्त बेहोश गिर जाती है। यह बाद में फ़िल्म भी बनी। लोग आपस में बैठ कर अपने शराब पीने के बुरे अनुभव शेयर करते जो कन्सेप्ट दशकों बाद 'अल्कोहल अनोनिमस 'समूह ने अपनाया। स्कूली बच्चों तक ने एक शराब-विरोधी समूह बना लिया जिसका नाम था— कोल्ड वाटर आर्मी।

लेकिन सबसे महत्वपूर्ण रहा महिलाओं का सत्याग्रह। अब तक अमरीकी महिलाएँ घरेलू काम-काज ही देखती थी। उनका राजनीति में लगभग शून्य हस्तक्षेप था। उस समय बच्चे भी सात-आठ होते। पति शराब के सलून (बार) में दोस्तों के साथ धुत्त पड़ा है, और पत्नियाँ बच्चे सँभाल रही हैं।

उस समय एलीजा जॉन थामसन और सेंट फ्रांस विलार्ड जैसी महिलाओं ने शराब-विरोधी मुहिम चलायी। वे शराब की दुकानों के सामने बैठ कर ईसाई प्रार्थना करने लगती। शहर-दर-शहर महिलाओं की टोलियाँ यह सत्याग्रह करने लगी। यह महात्मा गांधी के पैदाइश से पहले की बात है, और इस लहजे में सत्याग्रह की शुरुआत पहले अमरीकी महिलाओं ने शराब-दुकानों के सामने की। उनके संगठन का नाम था- वूमेन क्रिश्चियन टेम्परेट यूनियन। इन महिलाओं ने स्कूल की किताबों में शराब के भीषण दुर्गुण छपवाए। बच्चों ने किताबों में सचित्र पढ़ा कि शराब से कैसे शरीर बरबाद होता है। हालांकि इन महिलाओं में कुछ को पकड़ कर शराब से नहला देने जैसी घटनाएँ भी हुई।

वहीं दूसरी ओर शराबखाने बढ़ते ही जा रहे थे। बीसवीं सदी की शुरुआत तक अमरीका में तीन लाख वैध और लाखों अवैध शराबखाने खुल गए। शराबखाने में ही अखबार मिलता, किताबें रखी होती, लोग मिलते, नौकरियों के प्रस्ताव मिलते, यहाँ तक कि मुफ्त खाना मिलता। मुझे एक

खानदानी बार-टेंडर ने बताया था कि खाने में जान-बूझ कर नमक अधिक डालते कि लोग खूब बीयर पीएं।

फिर यह सत्याग्रह हिंसक हो गया। कैरी नेशन नामक एक अधेड़ महिला एक हाथ में कुल्हाड़ी लिए निकलती और बार के सभी बोतल-शीशे तोड़ कर आ जाती। उनका परिवार शराब की गिरफ्त में खत्म हो गया था, और वह पागलों की तरह शराबखानों पर आक्रमण कर रही थी। उनको जेल में बंद करते, वह फिर कुल्हाड़ी लेकर निकल जाती। उनकी देखा-देखी कई महिलाएँ कुल्हाड़ी लेकर शराबखाने तोड़ने लगी।

मूल बात यह थी कि शराब से सरकार को मोटा टैक्स मिलता था। यह अमरीका का पाँचवा सबसे बड़ा उद्योग था। एडॉल्फ बुश जैसे शराब सरगना की जेब में कई सीनेटर थे। अमरीका ने एक हल सोचा कि आयकर बढ़ा दिया जाए, और शराब बंदी कर दी जाए। यही बात भारत में गांधी जी ने भी असहयोग आंदोलन के समय कही कि टैक्स की भरपाई शराबखाने की बजाय आयकर से की जाए। हेनरी फोर्ड और कार्नेगी जैसे पूँजीपतियों ने शराब-बंदी का समर्थन किया कि उनके मजदूर शराब में धुत्त रहते हैं।

लेकिन, शराब पर 'फुल ऐन्ड फाइनल 'चोट जर्मनी के आक्रमण ने की। जब प्रथम विश्वयुद्ध में वह अमरीका से भिड़ने आ गए तो जर्मन-संस्कृति के ख़िलाफ़ देश खड़ा हो गया। जर्मन शराब की दुकानों को तोड़ा गया, जर्मन टेक्स्ट-बुक जलाए गए, जर्मन अमरीकियों की सामूहिक हत्या भी की गयी।

और तभी इस चरम राष्ट्रवाद की हुंकार बनी— 'तुम्हें यह जर्मन शराब पसंद है या अमेरिका?'

हज़ारों महिलाओं ने शराब के ख़िलाफ़ वाशिंगटन में मार्च किया। आखिर शराब-बंदी पर संविधान की मुहर लग ही गयी।

मुहर तो लग गयी, लेकिन लागू होते ही शिकागो में गोलियाँ चली। शराब छुपा कर बेचने वाले गैंग सक्रिय हुए। न्यूयॉर्क के एक वेश्यालय के बाउंसर रहे इतालवी अल कपोन शिकागो के शराब माफिया जॉन टोरियो के बॉडीगार्ड बने। और बाद में अपने प्रतिद्वंद्वी गैंगों का खात्मा कर शराब

माफ़िया के गॉडफादर बन बैठे। अब उनके संबंध शिकागो के मेयर से लेकर 'पापा जो 'केनेडी तक से थे। कुछ दशकों में ये माफ़िया यह भी तय करने वाले थे कि अमरीका का राष्ट्रपति कौन बनेगा।

लेकिन, उस वक्त शराब-बंदी के बाद आयी दुनिया की सबसे विकराल आर्थिक मंदी— द ग्रेट डिप्रेशन!

◆ ◆ ◆

महामंदी : द ग्रेट डिप्रेशन

अक्तूबर, 1929

आप जब चढ़ाई चढ़ते चोटी पर पहुँच जाते हैं, तो आगे एक ही रास्ता होता है— नीचे उतरना।

अमरीका ने दास-प्रथा और शराब-बंदी के बाद नैतिक ऊँचाई तो पा ही ली थी। खुले बाज़ार और आधुनिक तकनीकों के बल पर वह तेजी से दुनिया का सुपरपावर बन रहा था। यूरोप प्रथम विश्व-युद्ध की मार से उबर रहा था, रूस में नयी-नयी साम्यवाद की पौध खिली थी, इंग्लैंड अपने उपनिवेशों पर पकड़ खो रहा था, और अमरीका इन सबसे दूर एक नयी उन्नत दुनिया बसा रहा था।

एडिसन ने विद्युत-क्रांति ला दी थी। गाँव-गाँव तक बिजली पहुँच रही थी। छोटे हवाई-जहाज उड़ने लगे थे। घर ही नहीं, अब गाड़ियों में रेडियो बजने लगे थे। हर औसत अमरीकी फोर्ड और क्राइसलर गाड़ी खरीदता जा रहा था। दुनिया में पहली बार इस तरह के खुले बाज़ार थे कि सामान उठाओ, पैसे बाद में देना। क़िश्तों में देना। क्रेडिट पर सामान बिक रहे थे।

अब यह चीजें आम हैं, लेकिन उस वक्त यह अजूबी बात थी। अमरीका के हर मिल, हर फैक्ट्री, हर कंपनी में धड़ल्ले उत्पादन चल रहा था। दाम के लिए प्रतिद्वंदियों में होड़ मची थी, और ग्राहकों को फायदा ही फायदा।

दूसरी तरफ, न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज जनता के लिए खुल गया था। इससे पहले यह कुछ बड़े व्यापारी लोगों का आपसी लेन-देन समूह था। अब तो हर ऐरा-गैरा किसी कंपनी का छोटा मालिक बन सकता था। सरकार ने अपनी एक 'लिबर्टी बॉन्ड 'जारी कर दी थी, जिसमें ठीक-ठाक ब्याज मिलता। स्वयं चार्ली चैपलिन इसका विज्ञापन कर रहे थे।

यह एक ऐसे अमरीका की शुरुआत थी, जिसका बच्चा-बच्चा पैसे से खेलना सीख जाएगा।

लोग सुबह चाय पर अखबार में स्टॉक मार्केट देखते। ऑफिस में शेयर के दाम पूछते रहते। शाम को 'वाल स्ट्रीट 'का हाल पूछते। कुछ न्यूयॉर्क के इर्द-गिर्द जम गए थे, और रोज वाल-स्ट्रीट पहुँच जाते। सिटी बैंक के मालिक चार्ल्स मिशेल ने पूरे देश में शेयर दलाल ऑफिस खुलवा दिए। वहाँ जाकर लोग लॉटरी की टिकट की तरह शेयर खरीदते। यहाँ तक कि छोटे-मोटे दुकानों में टेलीग्राफ़ से, हर रोज एक शेयर बाज़ार के दामों की पट्टी आती और लोग उसे देखने उमड़ पड़ते।

बहुत जल्द शेयर दलालों ने मार्जिन पर बेचना शुरु कर दिया। आप दस प्रतिशत पैसा लगाइए, नब्बे प्रतिशत वह लगाएँगे। फायदा बाँट लिया जाएगा। अब जिसके पास चालीस सेंट भी जेब में पड़े थे, वह भी शेयर खरीद रहा था। हर अमरीकी अब पूँजीपति था। गृहणियाँ भी शेयर खरीद रही थी, किसान भी, यहाँ तक कि अमरीकी राष्ट्रपति भी। एक अभिनेता थे ग्राउशो मार्क्स, उन्होंने तो अपना सर्वस्व शेयर में लगा दिया था। आखिर यह हर दिन, हर साल ऊपर ही जा रहा था। जे पी मॉर्गन बैंक तो इसका केंद्र था। कहीं कोई रिस्क नहीं नजर आ रहा था। आखिर, इससे पहले इतिहास में कुछ ऐसा हुआ भी तो नहीं था।

जोसेफ केनेडी उर्फ 'पापा जो '(राष्ट्रपति केनेडी के पिता) ने इस बुलबुले के भ्रम को बहुत जल्दी भाँप लिया। उनकी डेमोक्रैट नेता फ्रैंकलिन रूजवेल्ट से ख़ास दोस्ती थी, लेकिन फिलहाल वह विपक्ष में थे। राष्ट्रपति

तो पिछले तीन टर्म से रिपब्लिकन ही थे। उस वक्त हर्बर्ट हूवर राष्ट्रपति थे। पापा जो ने बाज़ार का पैसा उठा कर अचल संपत्ति में लगाना शुरु किया। जैसे हॉलीवुड कंपनियों में, इमारतों में, दुकानों में। यहाँ तक कि अमरीका की सबसे बड़ी निजी इमारत जो शिकागो में थी, उसे भी उन्होंने खरीद लिया। और यह सब पैसा वह छोटे शेयर निवेशकों के मार्फ़त वसूलते। उन्हें शेयर बेचते, और फायदा संपत्ति में लगाते जाते। वह बाज़ार को उठाना-गिराना खूब जानते थे, और नेटवर्क तो तगड़ा था ही। यह कयास लगाना ग़लत न होगा कि वह बाज़ार में भ्रष्टाचार ले आए, हालांकि यह नियमों के दायरे में ही था।

नियम तो कुछ थे ही नहीं। राष्ट्रपति हूवर को अमरीका का स्वर्णिम भविष्य दिख रहा था, वह कभी शेयर बाज़ार को छेड़ने की बात नहीं सोचते। मार्च 1929 में एक बड़े बैंक के मालिक पॉल वार्बर्ग ने चेताया कि बाज़ार सँभालना जरूरी है, लेकिन उन्हें सबने धत्ता बताया और उन्हें इस्तीफ़ा देना पड़ा।

23 अक्तूबर, 1929 को पहली बार स्टॉक मार्केट नीचे गिरा। लोगों को लगा कि यह मामूली करेक्शन है। 24 अक्तूबर (गुरुवार) को बाज़ार तेज़ी से गिरने लगा। यह 'ब्लैक थर्सडे 'अप्रत्याशित था और हज़ारों लोग न्यूयॉर्क की सड़क पर खड़े चिंतित थे कि क्या उन सबके पैसे डूब गए? अगले हफ्ते तक बाज़ार चारों खाने चित था। विंस्टन चर्चिल ने अपनी बड़ी संपत्ति यहाँ लगा रखी थी, वह इंग्लैंड से भागे आए। मानहट्टन की एक इमारत की 44वीं मंजिल से कूद कर एक महिला ने जान दे दी। अभिनेता ग्राउशो मार्क्स अपना सब कुछ गँवा बैठे। यहाँ तक कि भूतपूर्व राष्ट्रपति कूलीज़ तक अपने हज़ारों डॉलर गंवा बैठे। अगले दो साल में दो हज़ार बैंक कंगाल हुए, लोगों के सारे पैसे उन बैंकों के साथ हवा हो गए। हज़ारों लोग नौकरी से निकाले गए। बचे सिर्फ 'पापा जो 'जैसे लोग जो अपना पैसा जमीन या इमारतों में लगाते रहे।

यह 'ग्रेट डिप्रेशन 'कहलाया, जो आठ दशक बाद (2007-9) वहीं न्यूयार्क में भिन्न रूप में दुबारा आया।

उस वक्त अमरीका का पूँजीवाद धड़ाम से गिरा, और इसने यूरोप में भी हलचल मचा दी। वहाँ के बैंक भी एक-एक कर गिरने लगे। खुली और

वैश्विक अर्थव्यवस्था जैसी बातों का मज़ाक बनने लगा; अब सभी एक मजबूत और कड़े फैसलों वाला नेता ढूँढ रहे थे। हिटलर-मुसोलिनी जैसे फ़ासिस्टों और स्तालिन जैसे कम्युनिस्टों को सत्ता मिलने में सुविधा हो गयी।

अमरीका में बारह साल बाद डेमोक्रैट सत्ता में आए। रूज़वेल्ट राष्ट्रपति बने। उन्होंने मंदी खत्म करने के लिए अरिजोना में एक बड़ा बाँध बनवाना शुरु किया, जहाँ सैकड़ों लोगों की नौकरी लग गयी। इसी तरह कहीं गड्ढा खुदवाना, कहीं शहर की सफाई कराना शुरु कर नौकरियाँ भरी गयी। अब उन्होंने स्टॉक मार्केट को सरकारी नियंत्रण में ले लिया।

लेकिन, ऐसा कौन व्यक्ति होगा, जो स्टॉक मार्केट की गड़बड़ियों और भ्रष्टाचार को सँभाल लेगा? ऐसा तो वही हो सकता है, जो यह सब खुद कर चुका हो।

रूज़वेल्ट ने अपने आइरिश मूल दोस्त और पूर्व शराब-व्यापारी जोसफ़ केनेडी (पापा जो) को इस स्टॉक-एक्सचेंज कमीशन का अध्यक्ष बना दिया!

◆ ◆ ◆

माफ़िया

मंदी क्यों आयी? इसका तर्क यह दिया जाता है कि अमरीका ने जरूरत से ज्यादा उत्पादन कर लिया था, और बिक्री हो नहीं रही थी। लेकिन, 'पापा जो 'ने मंदी में न सिर्फ कमाया, अपने दोस्त को राष्ट्रपति की कुर्सी तक पहुँचाया, खुद स्टॉक-एक्सचेंज के सरदार बने। अफ़वाह यह भी रही कि अवैध शराब-बिक्री में माफ़िया गिरोह को विलायती शराब मँगवाने में सहयोग दिया, लेकिन यह बात सिद्ध नहीं हो पायी।

हा! मंदी से उबारने के लिए, तेरह साल की शराब-बंदी को खत्म करते हुए राष्ट्रपति रूज़वेल्ट ने कहा, "अब बीयर पीने का सही वक्त है"

पापा जो (जोसेफ़) केनेडी एक रहस्य थे, और आज तक हैं। उनके फ़ाइल केनेडी के पुस्तकालय में बंद पड़े हैं, और तब तक नहीं खुलेंगे जब तक कोई दूसरा केनेडी राष्ट्रपति बन कर नहीं आता।

अमरीका में बड़े परिवार घटने लगे थे, लेकिन जोसेफ केनेडी के नौ संतान थे, बारह कमरों का हडसन नदी किनारे बंगला था। शराब-बंदी के पहले विदेशी शराब के व्यवसाय थे, और शराब-बंदी खुलते ही उन्हें आयात का लाइसेंस मिला। राष्ट्रपति रूजवेल्ट दिन-पर-दिन अपंग होते जा रहे

थे, व्हीलचेयर पर आ गए थे, और यूरोप विश्व-युद्ध की ओर बढ़ रहा था। पापा जो उनके दायें हाथ थे और उनकी उस कुर्सी पर नजर थी।

शराब-बंदी के दौरान केनेडी हॉलीवुड फ़िल्में बनाने लगे थे, और उस वक्त की सबसे कीमती अभिनेत्री ग्लोरिया सैमसन उनके बिस्तर पर होती। एक रिकॉर्ड था कि अमरीका का सबसे मँहगा टेलीफोन कॉल केनेडी और सैम्सन की एक रात की बातचीत का था। यह एक सामंती मानसिकता का परिवार था, जहाँ युवतियाँ आती-जाती रहती और पिता-पुत्र सभी उन्हें शिकार बनाते। बड़े बेटे 'जो जूनियर 'को राष्ट्रपति बनना था, उससे दो साल छोटे जॉन एफ. केनेडी को उनका दायाँ हाथ बनना था, छोटे रॉबर्ट को बायाँ हाथ। इन केनेडियों को किसी माफिया की तरह अमरीका पर राज करना था।

शराब-बंदी के दौरान असल माफिया-राज भी आ चुका था। 'माफिया' शब्द का जन्म इटली के एक द्वीप सिसली में हुआ था। 'माफियोसो 'का शब्दार्थ दबंग है। उन्नीसवीं सदी में वहाँ से कुछ परिवार अमरीका की धरती पर भी आ गए। उन्हीं में एक बच्चा था अल कपोन!

अलफॉन्सो कपोन की शुरुआत न्यूयॉर्क की सड़कों पर छोटी-मोटी चोरी से हुई, और पहला मुक्का उसने अपने स्कूल-टीचर को लगाया। स्कूल से निकाले जाने पर वह एक बड़े गैंग का हिस्सा बना, जो बर्फ का धंधा करते थे। उन्ही दिनों एक विपक्षी गैंगस्टर की बहन को छेड़ने की वजह से उस पर चाकू से हमला हुआ, और वह 'स्कार-फेस 'कहलाने लगा। बदला लेने के लिए जब उसने एक बड़े गैंगस्टर से पंगा लिया तो उस पर जान का खतरा बन पड़ा। वह न्यूयॉर्क से शिकागो आया और वहाँ के सबसे बड़े डॉन जॉन टुरियो का अंगरक्षक बना। जब टुरियो पर उनके प्रतिद्वंद्वी मरीनो के लोगों ने हमला किया, तो टुरियो मरते-मरते बचा। टुरियो अपना कारोबार अल कपोन को सौंप कर इटली लौट गए।

अब अल कपोन शिकागो का राजा था, और शराब-बंदी के बाद अवैध शराब के धंधे का सरगना। पापा जो केनेडी भी उस वक्त शिकागो में व्यवसाय कर रहे थे, और उनके पास पहले से ही शराब का सबसे बड़ा स्टॉक था। मुझे केनेडी और कपोन का रिश्ता बताने की जरूरत नहीं। केनेडी तो स्टॉक-मार्केट के 'बिग बुल 'थे, शराब तो बस खानदानी पेशा

था। हाँ! अल कपोन अब सफेद फेडोरा टोपी, सूट-बूट, और क्यूबन सिगार के साथ हॉलीवुड फ़िल्मों के लिए एक आइकन बन गया था। गैंगस्टर फ़िल्में खूब चलने लगी और पापा जो केनेडी फ़िल्में बनाने लगे।

शिकागो में एक और सांस्कृतिक बदलाव हुआ। अल कपोन ने एक 'स्पीकइजी 'बार का कंसेप्ट लाया। ये गैंगस्टरों का बार था, जहाँ शराब-बंदी के दौरान भी शराब मिलती, नृत्य होता, और ऊपर लड़कियाँ भी मिलती। शिकागो के मेयर से लेकर पुलिस तक अल कपोन की जेब में थे। उसी समय अमरीका में अश्वेतों का संगीत जैज्ज भी आया। बड़े-बड़े जैज्ज संगीतकार जैसे लुईस आर्मस्ट्रॉन्ग अल कपोन के बार में बजाते। लोग कहते हैं कि अगर अल कपोन न होता, तो शायद आज जैज्ज न होता!

अल कपोन का कद बढ़ता जा रहा था। वह प्रति वर्ष सौ मिलियन डॉलर बना रहा था, और गरीबों के लिए मुफ्त रसोई खोल कर उनका रॉबिनहुड बन गया था। हर्बर्ट हूवर जब राष्ट्रपति बने तो उन्होंने अल कपोन पर शिकंजा कसने का निर्णय लिया। वह जनता का नायक बनता जा रहा था, और अब उसे खलनायक बनाना था।

1929 के वैलेंटाइन डे के दिन शिकागो में गैंगस्टर मरीनो के सात लोगों को कुछ पुलिस वाले (?) रोकते हैं, और मशीन-गन से दिन-दहाड़े उड़ा डालते हैं। जाहिर है, वे पुलिस वाले नहीं थे। बात तो यही निकली कि अल कपोन अपने बॉस पर हुए हमले का बदला ले रहा था। जो भी हो, अल कपोन को अमरीका का 'मोस्ट वांटेड 'अपराधी करार दिया गया। कुछ ही महीनों में पापा जो केनेडी के स्टॉक-मार्केट तिकड़म बढ़ने शुरु हुए, और अमरीका 'ग्रेट डिप्रेशन 'में चला गया।

अल कपोन पर कोई न कोई आरोप तो सिद्ध करना था। शराब-बंदी के समय अमरीका में नया-नया इन्कम टैक्स आया था। पहले इन्कम-टैक्स नाम की चीज थी नहीं। लागू होने पर भी कोई भरता नहीं था। अल कपोन ने भी कभी नहीं भरा था। यही केस बनाया गया। न हत्या का, न तस्करी का, न अवैध शराब का, अल कपोन पर मुकदमा हुआ टैक्स-चोरी का।

पहले कुछ साल तो कपोन ने पंचसितारा होटल की तरह अटलांटा जेल में बिताए। वहाँ सब इंतजाम था और धंधा भी चल रहा था। जब रुजवेल्ट और केनेडी का राज आया, तो उन्होंने कपोन को अमरीका के सबसे खूँखार जेल में भेज दिया। यह नया-नया बना जेल सान-फ्रांसिस्को खाड़ी में अल्काट्राज़ द्वीप पर था। वहाँ अल कपोन के साथ इतनी ज्यादती हुई कि उसे सिफिलिस गुप्त-रोग हो गया, और वह खत्म हो गया।

अल कपोन की छवि आज भी गॉडफादर और स्कार-फेस फ़िल्मों से लेकर माइकल जैक्सन की फेडोरा टोपी तक दर्ज़ है, लेकिन क्या वह बस शराब-बंदी के दौरान खड़ा किया गया एक कठपुतली था?

खैर, पापा जो केनेडी के माफिया संबंध दुबारा उभरेंगे, जब उनका बेटा अमरीका का राष्ट्रपति बनने वाला होगा। फिलहाल तो 'पापा जो 'लंदन में अमरीका के राजदूत बन कर जा रहे थे, और हिटलर वहाँ बम गिराने वाला था। द्वितीय विश्व-युद्ध शुरू हो रहा था।

◆ ◆ ◆

मेरा बेटा राष्ट्रपति बनेगा!

“मेरा बेटा राष्ट्रपति बनेगा।”

पापा जो केनेडी ने अपने पहले बेटे ‘जो जूनियर ’के जन्म पर ही यह बात कह दी थी। लेकिन, बच्चे को राष्ट्रपति बनाते कैसे हैं? पूँजीपति देश में यूँ भी रईस ही राष्ट्रपति बनते हैं। एक आर्थिक महाशक्ति का गरीब राष्ट्रपति भला विसंगति न होगी?

केनेडी परिवार की तुलना अगर गांधी-नेहरू परिवार से करें, तो वहाँ भी मोतीलाल नेहरु के समय से यह ‘ग्रूमिंग ’शुरु हो गयी। इस मामले में नेहरू परिवार अधिक सफल रहा कि तीन पीढ़ियों तक प्रधानमंत्री बने। ये परिवार चाँदी के चम्मच लिए बच्चों से भरे शाही परिवार थे। यह भी इत्तेफाक है कि जिस तरह केनेडी परिवार में हत्याएँ और हवाई दुर्घटना हुई, उसी तरह नेहरु परिवार में भी।

जो केनेडी जूनियर और जॉन एफ. केनेडी, दोनों भाईयों में बड़े भाई अधिक काबिल दिखते। पढ़ाई में भी, डील-डौल में भी, खेल में भी, और राजनीति में भी। स्कूल से लेकर कॉलेज तक बड़े भाई के नेपथ्य में ही

छोटे भाई रहे। बड़े भाई दबंग भी थे, जो छोटे भाई को पछाड़ने, दो-चार मुक्के लगाने, खेल में हरा कर उपहास करने, और स्कूल में धौंस जमाने में लगे रहते। अनुज जॉन केनेडी अक्सर बीमार रहते, और पतले-दुबले भी थे। उन्हें बोर्डिंग स्कूल भेजा जाता, वह बीमार होकर घर पर पड़े रहते। उनका राष्ट्रपति बनना नामुमकिन था, बड़े भाई को ही यह सौभाग्य मिल सकता था।

पापा जो केनेडी ने कैथोलिक होने के नाते खासा भेदभाव झेला था। जैसा पहले लिखा है, कि अमरीका में प्रोटेस्टेंट समुदाय का ही दबदबा रहा है और कैथोलिक राष्ट्रपति कभी बने ही नहीं। इसलिए, यह जरूरी था कि बेटों को टॉप-क्लास बनाया जाए। हर चीज में अव्वल। 'जो जूनियर' वाकई अव्वल थे भी, और जॉन भी उनके पिछलग्गू बन कर हार्वर्ड तक पहुँच गए।

ये बीस-बाइस साल के लड़के थे, जो राष्ट्रपति बनने की दिशा में बढ़ रहे थे। जॉन कमजोर ज़रूर थे, लेकिन लड़कियाँ उन पर फिदा थी। यह भी पापा जो की ट्रेनिंग का ही हिस्सा था। वह तो नौ बच्चों के पिता बनने के बाद भी, बुढ़ापे में हॉलीवुड सुंदरियों के साथ रात बिताते। बेटों में भी वही चरित्र आया। जॉन एफ. केनेडी के किसी कॉलेज पार्टी का ज़िक्र आता है, जहाँ जितनी लड़कियाँ आयी, सभी उनके आगोश में रह चुकी थी। अकूत धन, सुंदर युवक, हार्वर्ड की पढ़ाई, आइरिश चरित्र, और अमरीकी चाल। आखिर कौन इन्हें नहीं चाहेगी?

'पापा जो 'केनेडी पैरवी लगा कर इंग्लैंड में अमरीका के राजदूत बने। एक आइरिश होने के नाते इंग्लैंड से छत्तीस का आँकड़ा था, लेकिन एक अमरीकी राजदूत बनते ही वहाँ शान बढ़ गयी। महाराज-महारानी और राजकुमारी के साथ केनेडी परिवार भोजन कर रहे थे। उधर वैटिकन के पोप के साथ इस कैथोलिक रईस का भी साक्षात्कार हुआ।

जॉन एफ. केनेडी इन दिनों अपने पिता के साथ थे, और यूरोप घूम रहे थे। फ्रांस, मुसोलिनी, हिटलर, सब की दुनिया करीब से देखते अपनी डायरी लिख रहे थे। फ्रांस में उन्होंने अजब की शांति देखी, जैसे कोई युद्ध की संभावना न हो। और जर्मनी में उन्होंने 'हेल हिटलर 'करते लोगों को देखा और यह विश्वास हो गया कि युद्ध होकर रहेगा। उनके पिता 'पापा जो'

को यह लग रहा था कि हिटलर इंग्लैंड के साथ रहेंगे, लेकिन जॉन एफ. केनेडी की युवा समझ में ऐसा नहीं था।

देश में जॉन के बड़े भाई 'जो जूनियर 'की राजनैतिक हलकों में पूछ थी। लेकिन, छोटा भाई जॉन एफ. केनेडी अंतरराष्ट्रीय समझ बना रहा था। जैसे उसे सब कुछ नजर आ रहा हो। विश्व-युद्ध, हिटलर की महत्वाकांक्षा, रूसी साम्यवादियों की आखिरी चोट, हिटलर का गिरना, और अमरीका का महाशक्ति बन कर उभरना।

पापा जो ने कहा, "मेरे बड़े बेटे में मुझे वे गुण दिखते हैं, जो उसे उस ऊँचाई तक ले जाएगी जहाँ मैं न पहुँच सका। लेकिन, जॉन में मुझे अपनी छवि नजर आती है, और इस लहजे से मेरा असल उत्तराधिकारी शायद वही बने।"

विश्व-युद्ध के साथ ही केनेडी भाईयों के मृत्यु का सिलसिला भी शुरु हो गया। शुरुआत बड़े भाई से।

◆ ◆ ◆

अमरीका के राष्ट्रपति में तीन गुण होने चाहिए। एक तो वह रईस हो, पैसे की खूब समझ हो। दूजा वह फैमिली-मैन हो यानी पत्नी या बेटे-बेटी को अपने साथ मंच पर ला सके। और तीसरा कि वह नायक हो, जैसे युद्ध का नायक— 'वार हीरो'।

जब द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ा तो केनेडी परिवार के हिटलर से संबंध की अटकलें चलने लगी। पापा जो केनेडी हिटलर की तारीफ़ कर चुके थे, उनके बड़े बेटे जो जूनियर भी हिटलर के नस्लवादी रवैये से खुशी जाहिर कर चुके थे। जॉन एफ. केनेडी ने ऐसा कुछ नहीं किया था, लेकिन उस वक्त उन्हें डेनमार्क मूल की युवती इन्गा से प्रेम हुआ। और एफ.बी.आई. को खबर मिली कि छोटे केनेडी की यह प्रेमिका तो हिटलर की जासूस है!

अब इन दाग़ों को धोने का एक ही रास्ता था। फौज में शामिल होना।

बड़े बेटे जोसेफ़ (जो जूनियर) तो तुरंत नौसेना की पायलट-विंग में शामिल हो गए। वह हर तरह से काबिल थे। छोटे और कमजोर जॉन एफ. केनेडी को न सिर्फ पिता से पैरवी लगानी पड़ी, बल्कि अपना मेडिकल रिकॉर्ड गायब करवाना पड़ा। उन्हें भी आखिर भर्ती कर लिया गया। जोसेफ़ को मुख्य युद्ध-मोर्चा पर यूरोप भेजा गया, जॉन एफ. केनेडी अमरीका में ही जापानी आक्रमण से लड़ने के लिए रुके।

दोनों भाइयों की रंजिश अब फिर शुरु हुई कि बड़ा हीरो कौन?

अमरीका से सुदूर सोलोमन द्वीप पर जॉन एफ. केनेडी को यह जिम्मा मिला कि जापान के मारक जहाजों को टॉरपीडो से ध्वस्त करना है। यह असंभव कार्य था, क्योंकि उस समय तकनीक भी उतनी विकसित नहीं थी। अमरीका के जितने जहाज साथ निकले, सभी एक-दूसरे से संपर्क खो बैठे; केनेडी का जहाज भी भटक गया। तभी एक जापानी बम ने केनेडी के जहाज को दो फाँक में तोड़ दिया, और केनेडी की मृत्यु निश्चित हो गयी।

केनेडी बचपन से बीमार ज़रूर रहे थे, लेकिन तैराक अच्छे थे। वह अपने एक घायल सहकर्मी को खींचते हुए तैरने लगे, और लंबा रास्ता तय कर एक द्वीप तक पहुँच गए। वहाँ लगभग एक हफ्ते तक नारियल-पानी पीकर, मछली मार कर गुजारा और आखिर बचाव-दल केनेडी को ले गया। छोटे केनेडी को युद्ध का मेडल तो मिल गया।

जब बड़े भाई को यह खबर मिली, वह कुलबुलाने लगे। उनके युद्ध में कई मिशन हुए थे, लेकिन कुछ दमदार नहीं हुआ था। मेडल की तो कोई उम्मीद ही नहीं थी। जब उनके साथी देश लौटने लगे, उन्होंने कहा, “मैं युद्धभूमि में रुकूँगा जब तक हिटलर समर्पण नहीं करता। मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ।”

उस समय ड्रोन-अटैक विकसित नहीं हुए थे। हवाई जहाज से खुद जाकर बम गिराया जाता। लेकिन, एक मुश्किल जुगाड़ था। हवाई जहाज में बम लोड कर, उड़ा कर जाओ; उसके बाद ऑटो-पायलट में लगा कर पैराशूट से कूद जाओ; फिर कोई पीछे से आ रहा जहाज रिमोट से बम इजेक्ट

कर देगा। बड़े केनेडी ने इस मिशन के लिए हाँ कह दिया। यह एक गुप्त मिशन था।

लेकिन, जैसे ही केनेडी पैराशूट से कूदे, बम समय से पहले फट गया, और केनेडी वहीं आकाश में लुप्त हो गए। आज तक उनका शरीर किसी को नहीं मिला। बल्कि, गुप्त मिशन होने की वजह से अगले तीस साल तक यह बात भी अमरीका की जनता को नहीं बतायी गयी कि आखिर केनेडी कैसे मरे। एक जर्मन फौजी ने दशकों बाद कहा कि केनेडी पैराशूट से नीचे आ गए थे, और हमने उन्हें गोली मार दी।

एक फौजी अफसर ने यह सब करीब से देखा था। वह केनेडी की जहाज के पीछे ही थे। बल्कि, इस खतरनाक गुप्त मिशन की योजना ही उनकी थी; शायद यह जानते हुए भी कि इसमें शामिल युवक अमरीका का राष्ट्रपति बन सकता है।

वह अफसर थे राष्ट्रपति रूजवेल्ट के बेटे— कर्नल इलियट रूजवेल्ट। उन्होंने कहा कि मैंने केनेडी के जहाज को हवा में ब्लास्ट होते देखा है।

बड़े भाई की मृत्यु के बाद जॉन एफ. केनेडी ने कहा, “हम छुटपन से एक-दूसरे से बेहतर बनने की कोशिश करते रहे। वह मुझसे हमेशा जीतता रहा। यहाँ भी वह मुझसे जीत गया।”

पापा जो केनेडी नहीं टूटे। राष्ट्रपति केनेडी ने बाद में कहा, “पापा ने कहा था कि अगर मेरा बड़ा भाई गिरा, तो मुझे राष्ट्रपति बनना है। और अगर मेरी मृत्यु हो जाए, तो मेरा छोटा भाई बॉबी राष्ट्रपति बनने की कोशिश करेगा। केनेडी कभी हार नहीं मानेंगे।”

◆ ◆ ◆

अमरीकी लोकतंत्र

अमरीका में चुनाव जीतने के लिए भी तीन चीजें जरूरी हैं- पैसा, पैसा और पैसा। यह पुरानी कहावत है। पापा जो केनेडी के पास अगले सात पुश्तों को पालने के लिए अकूत धन था। इसलिए वह अपने बेटों को बिजनेस में नहीं, राजनीति में उतारना चाहते थे। बड़े बेटे के अचानक मृत्यु के बाद यह ज़िम्मेदारी जॉन एफ. केनेडी के कंधे पर आ गयी।

यहाँ मैं शॉर्ट-कट में यह बताता चलूँ कि अमरीका में सांसद या राष्ट्रपति बनते कैसे हैं।

अमरीका में कोई राजा-रानी, प्रधानमंत्री नहीं होता; एक राष्ट्रपति ही राज्य/देश (state) और सरकार, दोनों के मुखिया होते हैं। उनके साथ लोकसभा (हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव) और राज्यसभा (सीनेट) होती है। लोकसभा-राज्यसभा नाम सहजता के लिए कह रहा हूँ। लोकसभा (रिप्रेजेंटेटिव) कार्यकाल दो साल का, राज्यसभा (सीनेट) कार्यकाल छह साल का, और राष्ट्रपति कार्यकाल चार साल का होता है। हर राज्य में जनसंख्या के हिसाब से प्रतिनिधि चुने जाते हैं, भारत की तरह। जैसे कैलिफ़ोर्निया से 53 सीट, अलास्का से एक सीट। हर राज्य से दो सीनेटर जरूर होते हैं, चाहे राज्य छोटा हो या बड़ा। हर दूसरे साल रोटेशन से, एक तिहाई सिनेटरों का चुनाव होता है, जो छह साल सदन में रहते हैं। दोनों सदनों का चुनाव मतदान से होता है।

वहाँ सदियों से दो ही मुख्य पार्टी रही है- डेमोक्रैट और रिपब्लिकन। दोनों अदल-बदल कर सरकार बनाते रहे हैं। कुछ और नाम-मात्र की पार्टियाँ

भी हैं, लेकिन जॉर्ज वाशिंगटन के बाद कभी कोई ऐसा राष्ट्रपति नहीं चुना गया, जो दो मुख्य पार्टियों से न हो।

दोनों पार्टियाँ अपने-अपने राष्ट्रपति नामांकित करती है। संभव है कि एक पार्टी से दस लोग राष्ट्रपति बनना चाहें, दूसरे से पंद्रह। इन राष्ट्रपति इच्छुकों के मध्य हर राज्य में एक प्राथमिक (प्राइमरी) चुनाव होता है, जिसमें अपनी-अपनी पार्टी के सदस्य भाग लेते हैं। कभी-कभी पब्लिक वोटिंग (ओपेन प्राइमरी) भी होती है। और कभी-कभी यह गुप्त वोटिंग के बजाय एक खुली चर्चा होती है, जिसे 'कॉकस 'कहते है। आखिर दोनों पार्टियाँ एक बड़ा सम्मेलन (कन्वेंशन) करती है, जहाँ प्राइमरी चुनावों के आधार पर राष्ट्रपति कैंडिडेट तय किया जाता है। यह फैसला पार्टी के डिलिगेट और सुपर-डिलिगेट (पूर्व राष्ट्रपति, सीनेटर आदि) मिल कर करते हैं। अमूमन यह पहले ही तय हो चुका होता है। जैसे— आने वाले चुनाव में अब डोनाल्ड ट्रंप का मुकाबला जो बीडेन ही करेंगे।

उसके बाद दोनों राष्ट्रपति कैंडिडेट हर राज्य घूम कर करोड़ों डॉलर उड़ाते हैं। इस चुनाव से अधिक खर्चीला दुनिया का कोई चुनाव नहीं।

आखिर नवंबर के पहले मंगलवार राष्ट्रपति का चुनाव, वहाँ के लोकसभा (रिप्रेजेंटेटिव) चुनाव के साथ ही होता है। जनता वोट डालती है, जिसे पॉपुलर वोट कहा जाता है। लेकिन, राष्ट्रपति का आखिरी चुनाव एक 'इलेक्टॉरल कॉलेज 'द्वारा होता है। यह हर राज्य के रिप्रेंजेटेटिव और सीनेटर की संख्या के हिसाब से चुने गए 'इलेक्टर 'करते हैं। जैसे डोनाल्ड ट्रंप जनता का पॉपुलर वोट हार कर भी, इलेक्टरों द्वारा चुन लिए गए।

यह संभव है कि राष्ट्रपति ने कभी कोई और संसदीय चुनाव नहीं लड़ा हो, जैसे ट्रम्प। यह भी संभव है कि राष्ट्रपति रिपब्लिकन हो, और लोकसभा में बहुमत डेमोक्रैट की हो। ख़ास कर यह स्थिति मध्यावधि चुनाव की वजह से होती है, जो हर दूसरे साल होती है। इसके उदाहरण भी डोनाल्ड ट्रंप हैं, जिनकी पार्टी सदन में अल्पमत में है, लेकिन वह राष्ट्रपति हैं (और शायद आगे भी रहें)।

तो जॉन एफ. केनेडी को यह चक्रव्यूह भेद कर उस कुर्सी तक पहुँचना था। 28 वर्ष के केनेडी ने अपना पहला चुनाव मैसाचुसेट्स के जिले से लड़ लिया। बाकी का खेल पापा जो को संभालना था।

◆ ◆ ◆

राजनीति शतरंज की बिसात है। अमरीका में भी थोड़ा-बहुत जात-पात चलता है। जहाँ अश्वेत अधिक, वहाँ अश्वेत प्रत्याशी; जहाँ हिस्पैनिक अधिक, वहाँ उस मूल का। केनेडी को भी ऐसा इलाका ढूँढना था, जहाँ आइरिश कैथोलिक लोग बसते हों। ऐसा तो उनके नाना-दादा का इलाका था— बॉस्टन-कैम्ब्रिज का। यहाँ के सांसद माइकल कर्ली इतने भ्रष्ट थे, कि बाद में जेल भी गए। पापा जो केनेडी ने उन्हें पैसे देकर खरीद लिया, और उन्होंने युवा जॉन एफ. केनेडी के लिए सीट खाली कर दिया।

स्थानीय अखबार में एक पैरोडी विज्ञापन छप गया—'आज ही अप्लाई करें। कांग्रेस सीट बिक रही है। कोई अनुभव जरूरी नहीं। प्रत्याशी न्यूयॉर्क का अरबपति हो।'

पापा जो जितने भ्रष्ट और तिकड़मबाज थे, बेटे जॉन उतने ही निश्छल। उन्होंने पहले ही डिबेट में साफ कह दिया, "एक मैं ही प्रत्याशी हूँ, जिसके पिता के पास बहुत पैसा है और जो इस जिले का वासी नहीं।"

यहाँ तक कि जब युद्ध के नायक की तरह प्रोजेक्ट किया गया तो जॉन ने पत्रकारों को हँस कर कहा, "नायक बनने में क्या है? मैं जहाज चला रहा था। जापानियों ने बम गिरा कर उसे दो फाँक कर दिया। मुझे तो बिना कुछ किए ही मेडल मिल गया।"

उस इलाके के लोगों ने इतने भ्रष्ट सांसद देखे थे कि ये ईमानदार कथन रास आ गए। एक तरफ पापा जो ने मार्केटिंग के लिए एक एजेंसी लगा

दी थी, जो पूरे शहर में जॉन के पोस्टर-बैनर लगा रहे थे; दूसरी तरफ जॉन पूरे दिन फैक्टरियों और दुकानों के चक्कर काटते। नाई की दुकान में, शराबखाने में, अखबार बेचने वालों के बीच। वह इलाका मजदूरों और निम्न वर्ग का था, और यह अरबपति उन सबसे एक-एक कर हाथ मिलाते, बतियाते।

पापा जो ने एक दिन जब जॉन को यह करते देखा तो चकित रह गए। उन्होंने स्वयं आज तक बस रईसों से ही हाथ मिलाए थे। गरीबी से उन्हें नफरत थी। जबकि जॉन गरीबों से ही रोज हिल-मिल रहे थे। जाहिर है, यह वोट पाने के लिए ही था, लेकिन यह अन्य प्रत्याशी नहीं कर रहे थे। जॉन सुबह सात बजे ही फैक्ट्री के गेट पर पहुँच जाते, क्योंकि उसी वक्त सभी मजदूर काम पर जा रहे होते। ऐसा पहले किसी सांसद ने नहीं किया था।

एक तिकड़म जॉन ने ज़रूर लगाया। उन्होंने अपनी बहनों की मदद से शहर की महिलाओं को जुटा लिया, और उनकी समस्यायें सुनी। एक तो जॉन को देखते ही यूँ भी महिलाएँ फ़िदा हो जाती, लेकिन उस वक्त महिलाओं को अलग से सुनने वाला भी कोई नहीं था। यह भी जिले में पहली बार हो रहा था।

यह सब पापा जो केनेडी नहीं सिखा पाए थे। उनकी नजर में पैसे से सीट खरीदे जा सकते थे, वोट खरीदे जा सकते थे, और यह सच भी था। पापा जो ने इतने पैसे खर्च किए, जो उस जिले के इतिहास में अप्रत्याशित था। लेकिन, जॉन की सोच दिल जीतने की थी। इस युवक में वहाँ के लोगों को एक नयी आशा दिख रही थी।

चुनाव से ठीक पहले जॉन ने रेडियो पर एक भाषण दिया, “हमें इन हड़तालों, इस मुद्रास्फीति (इनफ्लेशन), इस मंदी से उबरना होगा। बहुत हुआ साम्यवाद। हमें आपको अमीर बनाना है, आपके हाथ में धन डालना है। आप पसीना बहाएँगे, आपको एक-एक बूँद की कीमत मिलेगी। यह सोवियत रूस नहीं, जो साम्यवाद के नाम पर क्रूरता लाती है। हम एक बात ध्यान रखें। सभी शांतिप्रिय देशों के लिए एक ही विपक्ष, एक ही दुश्मन है— सोवियत रूस।”

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यह भाषण कुछ अजीब था क्योंकि सोवियत रूस की जयकार दुनिया भर में हो रही थी। अमरीका और रूस साथ युद्ध लड़े थे। अमरीका में भी साम्यवादी सोच आ चुकी थी। लेकिन, जॉन एफ. केनेडी एक नयी राजनीति की तरफ इशारा कर रहे थे। क्या यह सोवियत-विरोधी भाषण उन्हें ले डूबेगा?

उस साल के चुनाव में डेमोक्रैट बुरी तरह हार रहे थे। हैरी ट्रूमैन राष्ट्रपति थे, जिनकी हिरोशिमा-नागासाकी पर एटम बम गिराने की वजह से दुनिया भर में निंदा हो रही थी। दो दशकों में पहली बार डेमोक्रैट दोनों सदनों में अल्पमत में आ गए।

कुछ ही डेमोक्रैट जीत पाए। उनमें से एक 29 साल के जॉन एफ. केनेडी भी थे, जो न सिर्फ जीते, भारी मतों से जीत कर संसद पहुँचे।

◆ ◆ ◆

मैन्हैटन प्रोजेक्ट

एटम बम। एक सभ्यता-विनाशक, जिसने दुनिया से विश्व-युद्ध पर हमेशा के लिए ब्रेक लगा दिया।

द्वितीय विश्व-युद्ध का बीज हिटलर ने नहीं बोया, यह तो कहीं दूर एशिया में बोया जा रहा था, जब जापान की सेना चीन में घुस कर आतंक मचा रही थी। उसी समय जर्मनी के वैज्ञानिक ओट्टो हान और उनके चेले स्ट्रॉसमैन यूरेनियम पर न्यूट्रॉन से प्रहार कर रहे थे, तो अचानक यूरेनियम अपना रूप बदल कर बेरियम बन गया। वह चकराए कि यह क्या हो रहा है? तभी एक ऑस्ट्रियन यहूदी महिला लीज़ा ने कहा कि यह तो विखंडन (fission) है। यह शोध 'नेचर 'पत्रिका में छपा, और दूर अमेरिका में बैठे वैज्ञानिकों को लगा कि यह तो किसी भी युद्ध का रामबाण है। इस कथन के मूल में भी एक जर्मन यहूदी अलबर्ट आइंस्टाइन का जगत-प्रचलित फॉर्मूला था- 'E=MC स्कवायर'

हिटलर ने जब यहूदियों को भगाना शुरू किया तो ईसाई ओट्टो हान ने यहूदी लीज़ा को अपनी हीरे की अंगूठी देते कहा, "तुम यहाँ से भाग जाओ, और अगर नाजी सैनिक रोकें तो यह अंगूठी रिश्वत में दे देना।"

लीज़ा स्वीडन भाग गयी, लेकिन चिट्ठियों से संपर्क में रही। व्हाइट-हाउस तक यह आशंका पहुँची कि जर्मनी एटम-बम बना रहा है। लेकिन, यहूदियों के पलायन के साथ जर्मनी का वैज्ञानिक दिमाग भी तो पलायित हो रहा था।

जब जापान ने अमरीका के पर्ल-हार्बर पर बमबारी की, राष्ट्रपति रूज़वेल्ट ने अलबर्ट आइंस्टाइन को चिट्ठी लिख कर एक गुप्त मिशन का बीड़ा उठाने के लिए कहा— मानहाट्टन प्रोजेक्ट।

यह गुप्त मिशन किसी गुप्त स्थान पर नहीं था। न्यूयॉर्क के भीड़-भाड़ वाले इलाके मानहाट्टन के ब्रॉडवे पर, एक ऊँची इमारत के अठारहवें मंजिल पर बम बनाने की तैयारी चल रही थी। इस महाशोध के दौरान दुनिया भर के लगभग पाँच लाख वैज्ञानिक और अन्य कर्मी चुने गए, और इनके मुखिया बने जनरल रिचर्ड ग्रोव्स। वह पहले पेंटागन बना चुके थे। उन्होंने दो महीने के अंदर बारह सौ टन यूरेनियम जुगाड़ लिया, फैक्ट्री बना लिए, वैज्ञानिक रिक्रूट कर लिए। बस एक चीज उनके बस की नहीं थी— एटम बम। वह तो एक कल्पना मात्र थी।

समस्या एक और थी। संस्कृति का द्वंद्व। वैज्ञानिक फौजी नहीं होते कि समय-बद्ध अनुशासन से काम करें। ग्रोव्स ने आज तक फौजियों को ही सँभाला था, ये तो उनके लिए किसी और ग्रह के लोग थे। तभी उनकी नजर एक वैज्ञानिक पर गयी— ओपनहैमर। उनमें यह प्रबंधन क्षमता उन्हें दिखी। लेकिन, उनके साथ एक बड़ी समस्या थी। ओपेनहैमर का पूरा परिवार कट्टर कम्युनिस्ट था!

कहीं न कहीं, यही अमरीका के महाशक्ति बनने की मूल वजह है। जर्मन हो, यहूदी हो, कम्युनिस्ट हो, रूसी हो, जापानी हो, चाहे दुश्मन क्यों न हो। उससे काम निकलवा लो।

ओपेनहैमर ने कहा, “जनरल! मैं एटम-बम बना कर दूँगा। लेकिन, मुझे जिस वस्तु, जिस व्यक्ति, और जितने धन की जरूरत हो, वह शीघ्र मिलती रहे।”

जनरल ने कहा, “डन!”

दूसरी ओर, युद्ध विकराल रूप ले रहा था। जर्मनी पूरे यूरोप पर कब्जा करती जा रही थी। जापान फिलिपींस पर कब्जा कर युद्ध-कैदियों का ‘डेड मार्च ’करा रही थी। यानी, कदम रुके कि सर कलम कर दिया जाएगा। इस प्रलय को रोकने के लिए दूसरे महाप्रलय की रचना जल्द करनी थी।

मानहट्टन की भीड़-भाड़ से कहीं दूर एक सुनसान बीहड़ जंगल 'लॉस अलामोस 'में एटम-बम की प्रयोगशाला बनी। हज़ारों वैज्ञानिक अनिश्चित-काल के लिए इस गुप्त-वन में बंद हो गए। बाहरी दुनिया से लगभग कोई संपर्क नहीं। यह स्थान मानचित्र से ही गायब था। बम को 'गैजेट 'बुलाया जाता, और भर्ती करते वक्त यह नहीं बताया जाता कि क्यों और कहाँ ले जा रहे है।

1945 तक बम का प्रोटोटाइप तो बन गया, लेकिन मूल यूरेनियम (U-235) ही बहुत कम उपलब्ध था। प्लूटोनियम का जुगाड़ भी काम नहीं कर रहा था। वहीं, हिटलर की उल्टी गिनती शुरु हो गयी थी और लाल सेना जर्मनी की ओर बढ़ रही थी। और सबसे बड़ी बात यह कि राष्ट्रपति रूजवेल्ट अचानक चल बसे!

हड़बड़ी में राष्ट्रपति बने हैरी ट्रूमेन की समस्या यह थी कि उन्हें मालूम ही नहीं था कि एटम बम क्या है। राष्ट्रपति रूज़वेल्ट ने यह बात अपने उपराष्ट्रपति ट्रूमैन को भी नहीं बतायी थी। ट्रूमैन यूँ भी राजनीति से अधिक शराब और थ्रिल के शौकीन थे, और रूज़वेल्ट से दूर ही रहते थे।

अब एक अनजान और बेपरवाह व्यक्ति के हाथों में ऐसा बम लगने वाला था, जो मानव-सभ्यता का ही विनाश कर सकता था। ख़ुशक़िस्मती यह थी कि बम अभी बना नहीं था।

युद्ध जहाँ से शुरु हुआ, वहीं जाकर खत्म हुआ। लेकिन, जैसे शुरु हुआ, उससे कहीं भयानक रुप में खत्म हुआ।

नाजी जर्मनी ने आखिर 7 मई, 1945 को आत्मसमर्पण कर दिया। लेकिन, जापान अब भी युद्ध लड़ रहा था। अमरीका के राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन, रूस के राष्ट्रपति स्तालिन, और इंग्लैंड के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल बर्लिन पहुँचे।

ट्रूमैन से रहा नहीं गया और कहा, "हमारे पास शायद कुछ ऐसी चीज है, जो युद्ध रोक सकती है।"

स्तालिन ने हल्की मुस्की दी और कुछ नहीं कहा। स्तालिन को तो यह बात पहले से पता थी।

मानहाट्टन प्रोजेक्ट में कितने कम्युनिस्ट और कितने रूसी जासूस थे, यह कहना कठिन है। ख़ास कर एक प्रमुख वैज्ञानिक फुक्स इस प्रोजेक्ट की जानकारी रूस तक नियमित पहुँचा रहे थे। कैसे, यह मालूम नहीं। स्तालिन युद्ध में व्यस्त थे, और यह भी बात थी कि अमरीका को यह खर्चीला प्रयोग पूरा करने देना चाहते थे। प्रयोग अब तक पूरा हुआ कहाँ था?

जुलाई के महीने में आखिर पहला प्लूटॉनियम बन कर तैयार हुआ। यह एक धातु का बड़ा गोला था, जिसके चारों तरफ तार लिपटे हुए थे, और केंद्र में प्लूटोनियम की एक गेंद थी। 14 जुलाई को पहला प्रयोग प्रारंभिक फेज में ही असफल रहा। दो दिन बाद पुन: प्रयोग किया गया। उस रात प्रयोग से पहले ही घनघोर वर्षा होने लगी। वर्षा के धीमे होते ही आखिर पहली बार वह ट्रिगर दबाया गया, जिसके बाद वह हुआ जो अकल्पनीय था। न्यू मेक्सिको का वह पूरा जंगल काँप उठा और आकाश में अग्नि का इतना विशाल विस्फोट नजर आया, जो दुनिया में पहले कभी नहीं हुआ था। पहला एटम बम अमरीका की धरती पर फट चुका था।

लेकिन इस बम का अब करना क्या?

जापान को धमकाने के प्रयास किए गए। यह खबर भिजवाई गयी कि अमरीका के पास परमाणु बम है। लेकिन, जापानी आत्मसमर्पण के लिए राजी नहीं थे। वे समुराई संस्कृति के लोग थे, जो समर्पण से बेहतर मर जाना पसंद करते। अमरीका ने एक रात टोक्यो में इतने बम गिराए कि एक लाख जानें गयी, फिर भी जापानी नहीं माने।

26 जुलाई, 1945 को जापान को आखिरी चेतावनी भेजी गयी, जिसे 'पॉट्सडैम डिक्लेरेशन 'कहा जाता है। इस पर चर्चिल और ट्रूमैन के अलावा चीन के राष्ट्रपति च्यांग काई शेक के हस्ताक्षर थे। लिखा था-

"या तो जापान बिना शर्त समर्पण करे, या संपूर्ण विनाश के लिए तैयार हो जाए"

जापान नरेश ने इस चिट्ठी को नकार दिया और देशवासियों को कहा कि हम अंतिम दम तक लड़ेंगे।

इतिहासकार मानते हैं कि राष्ट्रपति ट्रूमैन ने एटम-बम के लिए कभी कोई लिखित (या मौखिक) आदेश नहीं दिया। उन्होंने बस इतना कहा कि मैं सेनाध्यक्ष के निर्णय में कोई रोड़ा नहीं अटकाऊँगा। यह अप्रत्यक्ष ग्रीन सिग्नल था।

उसी वक्त नया-नया यूरेनियम बम 'लिटल बॉय 'तैयार होकर आया था। यह गोल न होकर, किसी छोटे रॉकेट की तरह दिखता था। इसका परीक्षण नहीं हुआ था, लेकिन भरोसा था कि काम करेगा ही। 6 अगस्त, 1945 की सुबह 8.15 बजे एक B29 जहाज ने हिरोशिमा शहर पर यह 'लिटल बॉय 'गिरा दिया। लगभग तीन-चौथाई मील तक फैले इस विस्फोट की कंपन पूरे जापान में महसूस हुई। भूकंप की तो जापान को आदत है, लेकिन इस एक बम से 80,000 लोगों की उसी क्षण मृत्यु हो गयी।

जापान अब भी किसी तिलिस्मी दुनिया में था। उन्हें यह भरोसा ही नहीं था कि उन पर एटम-बम गिराया गया। इतनी मृत्यु तो पहले भी बमबारी में होती रही थी। यह इकलौते छोटे से बम से हुआ विनाश था, वे यह मानने को तैयार न थे। बल्कि उन्हें लग रहा था कि स्तालिन उनकी मदद के लिए आएँगे। दो दिन बाद स्तालिन ने भी जापान पर आक्रमण की घोषणा कर दी। जापान को एक बार फिर चेतावनी मिली, और जापान ने पुन: आत्मसमर्पण से मना कर दिया।

दो दिन बाद, 9 अगस्त की सुबह एक और B29 जापान के काकुरो शहर की तरफ उड़ा। लेकिन, वहाँ घने बादल होने की वजह से दूसरे शहर नागासाकी पर 'फैट मैन 'बम गिरा कर आ गया। इस बम से 80,000 लोग और मरे।

इस वक्त तक सोवियत की सेना भी जापान में घुस चुकी थी, और जापान अब भी आत्मसमर्पण के लिए पूरी तरह तैयार नहीं था। वहाँ की सेना युद्ध जारी रखना चाहती थी। अमरीकी सेना की भी यही योजना थी कि जैसे-जैसे बम बन कर आते जाएँगे, वे हर महीने दो-तीन बम गिराते जाएँगे।

उस वक्त हैरी ट्रूमैन ने अपना मुँह खोला और कहा, "बस! अब और नहीं। अब एक भी बम बिना मेरी मर्जी के नहीं गिराया जाएगा।"

जापान भी इस शर्त के साथ समर्पण के लिए तैयार हुआ कि उसके राजा पद पर बने रहेंगे। जापानी फौज ने कभी खुल कर आत्मसमर्पण किया ही नहीं। बल्कि जो फौज जापान से दूर द्वीपों पर थी, वह अगले कुछ सालों तक लड़ती ही रही, जब तक उनके हथियार खत्म नहीं हो गए।

एटम-बम से विनाश ने जहाँ अमरीका को दुनिया में खलनायक बनाया, वहीं उसकी अपनी धरती पर इसका दिल से स्वागत हुआ। यह सालों तक गुप्त रहा रहस्य अब अखबारों में था। बल्कि अगले ही साल एक जनता-परीक्षण हो गया, जब अमरीकी जनता ने अपनी आँखों से समुद्र में 'बिकिनी द्वीप 'पर गिराए जा रहे एटम-बम को देखा। इसमें ख़ास मजा नहीं आया, तो समुद्र के अंदर एटम-बम डाल कर फोड़ा गया जब समुद्र का पानी हज़ारों फीट तक उछला और लोगों ने तस्वीरें ली। ओपेनहैमर जनता के हीरो बन गए थे, और अमरीकी सातवें आसमान पर थे कि उनसे ताकतवर अब दुनिया में कोई नहीं। यहीं वे ग़लत थे।

जिस दिन स्तालिन ने हिरोशिमा की तस्वीरें देखी, सोवियत ने तेजी से एटम-बम बनाना शुरु कर दिया। उनके लिए यह आसान था, क्योंकि उनको अमरीका के प्रयोग में हुई ग़लतियों का भी अंदाजा था। मानहाट्टन प्रोजेक्ट में उनके दो जासूस वैज्ञानिक थियोडोर हॉल (अमरीकी) और फुक्स (जर्मन) ने उन्हें पूरी रिपोर्ट भेज दी थी।

अमरीका ने एक पैंतरा खेला और संयुक्त-राष्ट्र में प्रस्ताव रखा कि अब कोई भी देश एटम-बम न बनाए। सोवियत ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया। 1949 में एक एटम-बम विस्फोट अमरीका से मीलों दूर कज़ाखस्तान में हुआ। सोवियत एटम-बम बना चुका था!

और फिर शुरु हुई एक कभी न खत्म होने वाली प्रतिस्पर्धा। यह प्रतिस्पर्धा ऐसे वक्त शुरु हुई, जब जॉन एफ. केनेडी राजनीति की सीढ़ीयाँ चढ़ रहे थे। जब तक वह राष्ट्रपति पद पर पहुँचेंगे, क्या पता इस शीत-युद्ध की ज्वाला उन्हें ही भस्म कर दे।

WHAT YOU SEE HERE
WHAT YOU DO HERE
WHAT YOU HEAR HERE
WHEN YOU LEAVE HERE
LET IT STAY HERE

◆ ◆ ◆

द्वितीय विश्व युद्ध

केनेडी परिवार में मृत्यु का सिलसिला चलता रहा। बड़े भाई जोसेफ़ केनेडी के बाद, छोटी बहन कैथलीन केनेडी की भी 1948 में प्लेन-क्रैश में मृत्यु हो गयी। कैथलीन के ब्रिटिश पति की मृत्यु विश्व-युद्ध में ही जर्मन गोलियों से हो गयी थी। जॉन एफ. केनेडी को भी अंदेशा था कि जिंदगी छोटी है, तो वह अपने कदम तेजी से बढ़ा रहे थे।

भारत में अमूमन लोग लोकसभा से राज्यसभा मजबूरी में ही जाते है। अमरीका में निचले सदन से ऊपरी सदन (सीनेट) जाना या गवर्नर बनना बेहतर माना जाता है। हर राज्य से सांसद कई होते हैं, लेकिन सीनेटर दो ही होते हैं, और गवर्नर एक। जॉन के मन में यह रोडमैप स्पष्ट था। उनको अगले चुनाव में सीनेटर बनना था, और उसके बाद राष्ट्रपति। इतने कम उम्र में ऐसी छलाँग किसी ने पहले नहीं लगायी थी, लेकिन धनाढ्य और रसूखदार केनेडी परिवार के लिए यह मुमकिन था।

पापा जो केनेडी ने प्रमुख पत्रिकाओं और अखबारों को अपने पहुँच और पैसे से प्रभावित करना (खरीदना) शुरू कर दिया था। अखबार जॉन एफ. केनेडी को अमरीका का नया सितारा लिख रहे थे, जबकि असल में जॉन को संसद में कोई पूछता भी नहीं था। उनको तमाम नए सांसदों की

तरह वाशिंगटन में एक दो कमरे का मकान मिल गया था, और राष्ट्रीय राजनीति में दख़ल न के बराबर थी। हाँ! जॉन की एक किताब 'Why England slept 'जो इंग्लैंड और विश्व-युद्ध पर थी, वह कुछ महीने बेस्ट-सेलर रही थी।

जॉन को अपने पिता से दूरी भी बना कर रखनी थी, क्योंकि उनके पिता हिटलर के खुले समर्थक रहे थे। लेकिन, नेपथ्य में उनके पिता अपना प्रभाव डालते रहते। जॉन को प्रमुख संसदीय कमिटी के लिए चुना गया, तो जॉन खुश हुए। बाद में मालूम पड़ा कि यह सेटिंग भी पापा जो ने ही करायी थी।

आखिर जॉन ने वह मुद्दे उठाने शुरू किए, जो उनके पूँजीपति पिता की सोच से पूरी तरह अलग थे। गरीबों और श्रमिकों के मुद्दे। उस समय अमरीका के मजदूर-यूनियन कम्युनिस्टों का अड्डा बन रहे थे, लेकिन जॉन कम्युनिस्ट-विरोधी थे। उन्होंने यूनियन को अपनी तरफ मोड़ना धीरे-धीरे शुरु किया।

पापा जो से मतभेद कुछ आदर्शों पर भी हुए। पापा जो के ख़ास दोस्त और बॉस्टन के मेयर पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे, जेल भेजा गया। राज्य के सांसदों ने राष्ट्रपति को चिट्ठी लिखी कि मेयर बूढ़े और बीमार हैं, उन्हें जेल न भेजा जाए। जॉन ने इस चिट्ठी पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार की मुक़र्रर सजा तो मिलनी ही चाहिए, बीमार की देखभाल जेल में भी हो सकती है।

लेकिन, इन सब घरेलू बातों से अलग जॉन की समझ अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर थी। रूस के एटम-बम बनाने की चिंता को लेकर, अमरीका में घरों के अंदर बंकर बन रहे थे। एक आलीशान होटल के कई फुट नीचे सांसदों के रहने के इंतजाम बन रहे थे। एक 'डूम्सडे क्लॉक 'यानी प्रलय की घड़ी तैयार हुई, जो आज तक है। यह बताता है कि जब परमाणु-बम से युद्ध होंगे, तो दुनिया कब खत्म होगी? यहाँ तक कि लोगों को टी.वी. पर प्रोग्राम दिखाए जा रहे थे कि परमाणु-बम हमले से कैसे बचें? और वह भी उतने ही हास्यास्पद थे, जितने भारतीय टी.वी. चैनल पर कुछ महीने पहले दिखाए गए तरीके। एक प्रोग्राम में बाक़ायदा डेमो दिखा कर कहा

जा रहा था कि लॉन की घास काट कर साफ-सुथरी रखने से परमाणु-बम हानि कम होगी।

मैं युवा जॉन एफ. केनेडी की वह किताब 'Why England Slept' पढ़ रहा था। उन्होंने लिखा है कि हिटलर की तैयारी, और हथियारों के जखीरे को कैसे इंग्लैंड ने बरसों तक नहीं देखा; कैसे वह इस मुग़ालते में रहे कि कोई युद्ध नहीं होगा, कोई हमला नहीं होगा। वह सोते रहे। आज कोरोना के समय भी इंग्लैंड की यही निंदा हो रही है कि वह समस्या नहीं भाँप सके, सोते रहे।

केनेडी ने यह लिखा है, "हम अमरीकियों को सदा अपने दुश्मनों से चार कदम आगे रहना होगा। वह क्या कर रहे हैं, से अधिक यह जानना जरूरी है कि वह क्या सोच रहे हैं।"

उन्हीं दिनों हॉलीवुड के सबसे बड़े स्टुडियो MGM ने एक कॉर्टून सीरीज़ निकाली- टॉम एन्ड जेरी। रूस और अमरीका के मध्य यह चूहे-बिल्ली का खेल शीत-युद्ध की पहचान बनी। तुर्की, कोरिया, जर्मनी, वियतनाम, क्यूबा, ग्रीस...हर जगह यह खेल चला।

◆ ◆ ◆

शीत युद्ध दुनिया का सबसे गरमा-गरम और सबसे विस्तृत युद्ध है। इसकी जड़ें जितनी गहरी हैं, इसकी शाखाएँ उतनी ही लंबी और घनी। यह युद्ध मात्र हथियारों से नहीं, बल्कि विचारों से लड़ा गया। आखिर यह पूँजीवाद और साम्यवाद के ठेकेदारों के मध्य द्वंद्व था। एक तरफ अंकल सैम का अमरीका, दूसरी तरफ अंकल जो का सोवियत।

जोसेफ़ स्तालिन को विंस्टन चर्चिल प्यार से 'अंकल जो 'बुलाते। शीत-युद्ध की आरंभिक त्रिमूर्ति में तीसरी मूर्ति चर्चिल ही थे। फिलहाल यह कहानी कुछ और पीछे लेकर जाता हूँ।

दुनिया की दो क्रांतियों में सबसे अधिक खून बहा। पहला अमरीका का स्वतंत्रता-संग्राम (1775-83), और दूसरी सोवियत की बोल्शेविक क्रांति और गृह-युद्ध (1917-18)। पहली लड़ाई अमरीका के सामंतों और ब्रिटेन के मध्य थी, तो दूसरी लेनिन की लाल सेना और रूसी सामंतों के मध्य।

पहले से अमरीका में गणतंत्र का जन्म हुआ, दूसरे से रूस में साम्यवादी तानाशाही का।

जब प्रथम विश्व-युद्ध के बाद अमरीका के राष्ट्रपति वूड्रो विल्सन ने संयुक्त राष्ट्र-संघ की नींव (League of Nations) डाली, तो उसमें सोवियत को शामिल नहीं किया। दुनिया का सबसे विशाल देश विश्व-राजनीति का हिस्सा था ही नहीं!

एक नवजात बोल्शेविक सत्ता के लिए यह अच्छा ही था। सोवियत दुनिया से अलग अपनी शक्ति स्थापित करने में व्यस्त रहा। वहीं अमरीका भी भोगौलिक अलगाव की वजह से अपनी दुनिया में मस्त रहा। सच तो यह है कि जहाँ अन्य यूरोपीय देश अब भी अस्थिर थे, ये दोनों देश अपने एकांतवास में शक्तिशाली होते जा रहे थे।

जब आर्थिक मंदी (ग्रेट डिप्रेशन) आयी, और रूज़वेल्ट राष्ट्रपति बने तो अमरीका ने पहली बार कुछ वामपंथी रुख अपनाया। वाल-स्ट्रीट और बैंकों पर सरकारी नियंत्रण हुआ और सरकारी प्रोजेक्टों (बाँध, सड़क आदि) से नौकरियों का सृजन हुआ। ऐसा लगने लगा कि पूँजीवाद का बुलबुला फूट चुका है, और समाजवाद ही सही राह है।

रूज़वेल्ट की सरकार ने पहली बार सोवियत को न सिर्फ़ वैधता दी, बल्कि स्तालिन से व्यापार-डील भी किए। अमरीकी विशेषज्ञ सोवियत जाकर उनके निर्माण-कार्य में मदद करने लगे। वहाँ उन अमरीकियों का जीवन अच्छा था। वे खूब वोदका पीते, ऐश करते, उन पर साम्यवादी कड़ाई लागू नहीं थी। जहाँ रूसी कर्मी देर तक काम पर लगे रहते, अमरीकी ठीक पाँच बजे ऑफिस से निकल जाते। उन्हें कोई नहीं रोकता। यूँ लगने लगा जैसे सोवियत और अमरीका कुंभ के बिछड़े भाई हों।

तभी दुनिया में एक नया दादा आया— एडॉल्फ हिटलर।

पहले विश्व-युद्ध के बाद जर्मनी पर इतनी पाबंदियाँ लग गयी थी कि वह अपने हथियार और शक्ति नहीं बढ़ा सकता था। लेकिन हिटलर ने उन पाबंदियों को धत्ता बता कर अपनी फौज और हथियारों की ताकत को इस कदर बढ़ाया कि अब कई मायनों में उससे शक्तिशाली न सोवियत

था, न इंग्लैंड, न अमरीका। ख़ास कर तब, जब इटली के तानाशाह फ़ासिस्ट मुसोलिनी भी साथ थे।

यही वह वजह थी कि जब हिटलर ने कहा कि मुझे सुडेटेनलैंड (चेकोस्लोवाकिया का हिस्सा) चाहिए, तो ब्रिटेन के प्रधानमंत्री चैम्बरलैन ने कहा, "ठीक है। सुडेटेनलैंड ले लीजिए। उसके आगे कुछ नहीं।"

दूसरी तरफ स्तालिन को यह दिख गया कि ये पश्चिमी लोकतंत्र हिटलर के सामने घुटने टेक रहे हैं। स्तालिन ने हिटलर के विदेश-मंत्री को मास्को बुलाया और दोस्ती कर ली। उन्होंने आपस में तय किया कि हिटलर आधा पोलैंड ले ले, स्तालिन बाल्कन-देश ले लेंगे।

अमरीका और इंग्लैंड चौंक गए कि यह चल क्या रहा है? तीनों तानाशाह मिल कर यूरोप आपस में बाँट रहे हैं? वह भी फ़ासिस्ट, राष्ट्रवादी सोशलिस्ट (नाज़ी) और कम्युनिस्ट का बेमेल मेल?

खैर, तब तक विश्व-युद्ध बड़े सहजता से शुरु हो गया था। हिटलर की सेना लगभग बिना किसी प्रतिरोध के पश्चिमी यूरोप हथिया रही थी, और स्तालिन की सेना फिनलैंड, लिथुआनिया, एस्तोनिया हथियाती जा रही थी। हिटलर को थोड़ी-बहुत दिक्कत फ्रांस में जरूर आयी, लेकिन वह भी निपट गया। अब बस इंग्लैंड बच गया था।

लेकिन, तभी हिटलर ने एक ग़लती की, जिसने इस संतुलन को बिगाड़ दिया। 22 जून, 1941 को हिटलर की सेना सोवियत रूस में घुस गयी। अब इन दो तानाशाहों के मध्य द्वंद्व का फायदा अमरीका और इंग्लैंड को हुआ।

अमरीकी राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन ने एक बार गुप्त-संवाद में कहा, "हम दोनों (जर्मनी और सोवियत) को हथियार भेज रहे थे। अगर जर्मनी जीत रहा हो, तो सोवियत को। और सोवियत जीत रहा हो, तो जर्मनी को। हम तो यही चाहते थे कि वे दोनों आपस में लड़ मरें।"

यह तो खैर अंदर की बात थी, उस वक्त हिटलर के ख़िलाफ़ चर्चिल और स्तालिन की दोस्ती हुई। और उन्होंने यूरोप से दूर कहीं और सेंध मारी। दोनों की सेनाओं ने मिल कर ईरान पर कब्जा कर लिया, वहाँ के शाह देश

छोड़ कर भाग गए। वहीं, तेहरान में पहली बार मिले तीन यार- चर्चिल, रूज़वेल्ट और स्तालिन।

रूज़वेल्ट अपंग हो रहे थे। विश्व-युद्ध के समय महाशक्ति के नायक ठीक से खड़े नहीं हो पाते थे। वह व्हील-चेयर पर रहते थे। उनके लिए तेहरान आना कठिन था। दूसरी तरफ, स्तालिन युद्ध के समय हवाई यात्रा से डरते थे। चर्चिल तो घुमक्कड़ थे। वह कहीं भी आ-जा सकते थे। तीनों चेन-स्मोकर थे, और हर वक्त सिगरेट-सिगार मुँह में रहती ही।

स्तालिन ने रूज़वेल्ट को मनाया कि तेहरान में वह रूसी मेहमान बन कर रहेंगे, उन्हें किसी भी तरह की समस्या नहीं होगी। रूज़वेल्ट मान गए। उन्हें यह नहीं मालूम था कि स्तालिन ने रूज़वेल्ट के तेहरान-निवास में तमाम जासूसी यंत्र लगा रखे हैं। उस वक्त अमेरिका इस विद्या में रूस से बहुत पीछे था, और स्तालिन से वैसे भी पहली ही मुलाक़ात थी। स्तालिन बहुत ही चालाक व्यक्ति थे, जिनकी आँखों को पढ़ना नामुमकिन था। वह मुँह में सिगार दबाए, अपनी शर्तों को कुछ यूँ मुस्कुराते हुए रखते कि वह आखिरी मुहर बन जाती। वह तानाशाह ज़रूर थे, लेकिन हिटलर से कहीं अधिक प्रैक्टिकल और शातिर नेगोशिएटर थे।

फरवरी, 1945 में जब मित्र राष्ट्रों की सेनाएँ नाजियों को ढकेलती बर्लिन पहुँचने ही वाली थी, तब स्तालिन ने पुन: चर्चिल और रूज़वेल्ट को निमंत्रण दिया। रूज़वेल्ट बहुत ही बीमार हो चुके थे, लेकिन फिर भी वह रूस पहुँचे। याल्टा में उनका शाही स्वागत हुआ, और यहाँ आखिरी बार त्रिमूर्ति साथ बैठे। चर्चिल, स्तालिन और रूज़वेल्ट ने मिल कर काग़ज़ पर यूरोप का बंदरबाँट किया; याल्टा से लौटते ही रूज़वेल्ट चल बसे।

अप्रिल, 1945 में जब जर्मनी में एक तरफ से अमरीकी फौज, और दूसरी तरफ से रूसी फौज पहुँची तो दो देशों के लोगों का सामूहिक मिलन हुआ। यह अद्भुत दृश्य फ़िल्माया भी गया जब ये फौजी एक-दूसरे को गले मिल कर जीत का जश्न मना रहे थे। सोवियत-अमरीकी सेनाओं का ऐसा हार्दिक मिलन फिर कभी न हो सका।

याल्टा में ही यूरोप को दो टुकड़ों में बाँटने की बात हो गयी थी। स्तालिन ने मानचित्र के मध्य में एक रेखा खींची, जिसके पूरब सोवियत का हिस्सा, और पश्चिम इंग्लैड/अमरीका का।

इस रेखा को चर्चिल ने मिस्सौरी (अमरीका) में 1946 में दिए भाषण में 'आयरन कर्टेन 'कहा। उन्होंने कहा, "यूरोप में खिंचे इस लौह पर्दे के एक तरफ साम्यवाद है और दूसरी तरफ लोकतंत्र। यह बढ़ता हुआ साम्यवाद हमारी पश्चिमी ईसाई सभ्यता के लिए सबसे बड़ा खतरा है।"

मॉस्को में बैठे स्तालिन ने जवाब में कहा, "मेरे दोस्त चर्चिल अब हिटलर की तरह बात कर रहे हैं। उन्हें बस यह कहना चाहूँगा— हम तीसरे विश्व-युद्ध के लिए भी तैयार हैं, और इस बार यह पूँजीवादी शक्तियों के ख़िलाफ़ होगी।"

चर्चिल अगर होते, तो शायद युद्ध हो भी जाता; लेकिन विश्व-युद्ध के नायक चर्चिल अपना चुनाव ही हार गए। इंग्लैंड ने वाम-पक्षी लेबर पार्टी के क्लीमेंट एटली को चुना। यह स्तालिन के लिए अच्छी खबर थी।

युद्ध और एटम-बम के बाद अमरीकी पूँजीवाद अपने स्वर्ण-युग में लौट गया था। हर तरफ खुशियाँ थी। बेरोज़गारी लगभग शून्य थी। गाड़ियाँ धड़ल्ले बिक रही थी। मंदी का दौर अब इतिहास बन चुका था।

वहीं दूसरी ओर नाजी सेना ने सोवियत के वर्षों की मेहनत को तबाह कर दिया था। कई इमारतें, सड़कें, पटरियाँ ध्वस्त हो चुकी थी। लगभग तीन करोड़ लोगों की मृत्यु हुई थी। सहकारी खेतों में काम करते किसान भूखे मर रहे थे, भले ही यह बात दबायी जा रही थी।

यूरोप में अलग ही गदर मचा था।

युद्ध के बाद ही जर्मनी में सोवियत सेना लूट-पाट, बलात्कार करती जा रही थी; उनकी संपत्ति, सभी कामगार लोग, वैज्ञानिक, शिक्षक ट्रेन में भर-भर कर ज़बरदस्ती सोवियत ले जाए जा रहे थे। सोवियत का कहना था कि वह युद्ध-खर्च की भरपाई कर रही है। पोलैंड के लोग जर्मनी में घुस कर घरों पर ज़बरदस्ती कब्जा कर रहे थे। जर्मन अपने ही घर से पलायित होकर पश्चिम जा रहे थे। गरीबी और भुखमरी का आतंक मचा था। इंग्लैंड

ने मदद भेजनी शुरू की, लेकिन इंग्लैंड तो खुद ही कंगाल हुआ पड़ा था। सरकारी खजाना खाली हो रहा था, और उसके अपने नागरिकों की जरूरतें पूरी नहीं हो पा रही थी।

इंग्लैंड के पास अब उपनिवेशों को सँभालने की ताकत भी नहीं बची थी। भारत जैसे देशों को आजाद करने के सिवाय और कोई चारा नहीं था। अगर तुलना करें तो एक ध्वस्त, धराशायी, बेघर और गरीबी से गुजरते यूरोप के मुकाबले भारत तो उस वक्त कहीं बेहतर स्थिति में था। अब भले ही जर्मनी एक समृद्ध देश बन चुका है।

ईरान के लिए यह तय था कि युद्ध के बाद ईरान को आजाद कर देंगे। ब्रिटेन की फौज तो लौट गयी, स्तालिन को ईरान छोड़ने का मन न था। नए-नए बने संयुक्त राष्ट्र संघ को पहला मुद्दा मिल गया। उन्होंने ईरान को सोवियत से छुड़वा लिया। ग्रीस पर ब्रिटेन का कब्जा था, उसे ब्रिटेन को छोड़ना पड़ा। अब तुर्की और ग्रीस पर स्तालिन की नजर थी, क्योंकि उन पर कब्जे का अर्थ था भूमध्य सागर पर कब्जा।

स्तालिन की इस पूरे 'आयरन कर्टेन 'में मनसा यह नहीं थी कि वे सभी देश सोवियत का अंग बनें; योजना यह थी कि वहाँ की कठपुतली सरकारें कम्युनिस्ट होगी। पोलैंड, रोमानिया, युगोस्लाविया, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी और पूर्वी जर्मनी। ये सभी कम्युनिस्ट देश बनते गए, और स्तालिन के इशारों पर नाचने लगे। बाकी का यूरोप भी ऐसी गरीबी से गुजर रहा था, कि उन्हें साम्यवाद आकर्षित कर रहा था। गरीबी यूँ भी वामपंथ के लिए उर्वरा जमीन है।

इन सभी साम्यवादी देशों से महत्वपूर्ण, दुनिया की सबसे बड़ी जनसंख्या वाला देश भी अब कम्युनिस्ट होने जा रहा था। भारत के पड़ोसी देश चीन में माओ-त्से-तुंग क्रांति छेड़ चुके थे। उन्हें स्तालिन का वरद-हस्त प्राप्त था।

लगभग पूरे यूरेशिया पर अपनी सत्ता या धौंस रखने वाले स्तालिन, दुनिया के सबसे ताकतवर व्यक्ति लगभग बन चुके थे। रूसी भौतिक और जर्मनी से लाए गए वैज्ञानिक मिल कर एटम-बम बना रहे थे। मानहाट्टन प्रोजेक्ट

तो रूसी जासूस पहले ही भेद चुके थे। अमरीका सोवियत के विस्तार से अब वाकई डरने लगा था।

1947 में हैरी ट्रूमैन ने घोषणा की, "अमेरिका किसी भी हाल में, और दुनिया के किसी भी कोने में, इस साम्यवाद के विस्तार को रोकेगा। चाहे यह लड़ाई हमें अकेले ही क्यों न लड़नी पड़े।"

यह 'ट्रूमैन डॉक्ट्रिन 'कहा गया, और इसके साथ ही अगले कई राष्ट्रपतियों से गुजरने वाले शीत-युद्ध का औपचारिक रूप से बिगुल बज चुका था।

केनेडी जब संसद में आए, तब शीत-युद्ध की हांडी चढ़ रही थी। जब तक वह राष्ट्रपति बनेंगे, यह इतनी खौल रही होगी कि इसे उतारना भी नामुमकिन होगा।

◆ ◆ ◆

शीत युद्ध

साम्यवाद का विस्तार सुलभ था। यह एक सोच थी, जो महज कुछ विचारों से, पतली किताबों से, काग़ज़ के टुकड़ों से पसर सकती थी। जबकि पूँजीवाद के विस्तार के लिए एक ही चीज जरूरी थी— पैसा। और बहुत सारा पैसा। सोच अनंत है, जबकि धन सीमित है।

हिटलर और स्तालिन ने चाहे जो आतंक मचाया, उन्होंने अपने देशों को समृद्ध किया था। इटली के सभी माफ़िया गैंगस्टर सलाखों के अंदर थे। मुसोलिनी के गिरते ही इटली में गरीबी और लूट-पाट शुरु हो गयी। ऐसे वक्त में वहाँ जब कॉमरेड्स गीत गाते, मार्च करते हुए निकलते तो हर किसी को उनमें आशा की किरण नजर आती। कम्युनिस्ट पार्टी इटली के सबसे बड़ी पार्टी बन कर उभर रही थी, जबकि इटली स्तालिन के क्षेत्र के बाहर था।

यही थी साम्यवाद की ताकत। बिना एक पैसा खर्च किए, किसी भी देश की सोच पर राज करो।

अमरीका ने भी पैंतरा खेला। शीत-युद्ध की कमांड जनरल मार्शल को 1948 में दी गयी। और तभी बना— 'मार्शल प्लान'।

प्लान सीधा-साधा था। यूरोप को अरबों डॉलर भेज कर अपने पैरों पर खड़ा किया जाए, और फिर अपने ही सामान बेच कर वसूल लिए जाए। एक बार उन्हें इस खुले व्यापार और कड़क नोटों की खुशबू की लत लग गयी, वे साम्यवाद से अपने आप दूर भागेंगे। टैक्स भले चोरी कर लें, सरकार के हाथ में संपत्ति क़तई न देंगे।

अमरीका ने जब यूरोप में यह योजना रखी, तो खुद को दानवीर की तरह ही प्रोजेक्ट किया। और इसलिए पैसे का ऑफर सोवियत क्षेत्र के यूरोप ही नहीं, बल्कि सोवियत को भी दिया गया। स्तालिन ने अपने विदेश-मंत्री को मामला समझने पेरिस भेजा, और अपने जासूसों को चारों तरफ काम पर लगा दिया। उस समय स्तालिन के जासूस इस कदर फैल रहे थे कि दुनिया का ऐसा कोई बड़ा देश नहीं, जहाँ के राष्ट्रपति के चैम्बर तक सेंध न मारी हो। स्तालिन को पूरी योजना मालूम पड़ गयी कि अमरीका पैसे फेंक कर उल्लू बना रहा है। उन्होंने न सिर्फ विदेश-मंत्री को बीच मीटिंग से वापस बुलाया, पूर्वी यूरोप के सभी देशों को धमका भी दिया कि अगर अमरीका से पैसे लिए तो देख लेना! लाल-सेना दुनिया की सबसे विशाल सेना बन चुकी थी, और उससे भिड़ने की कुव्वत किसी पड़ोसी देश में थी नहीं।

ख़ास कर चेकोस्लोवाकिया, जहाँ के कम्युनिस्ट भी अमरीका के समर्थन में थे, उनको स्तालिन ने मॉस्को बुला कर ऐसी डाँट लगायी कि विदेश मंत्री माजारिक लौट कर बोले, “मैं आजाद देश का प्रतिनिधि बन कर स्तालिन से मिलने गया था, ग़ुलाम बन कर लौटा हूँ।”

माजारिक के पिता आजाद चेकोस्लोवाकिया के संस्थापक थे। माजारिक यह जिल्लत बरदाश्त न कर सके, और उनकी लाश उनके बाथरूम के खिड़की के नीचे पड़ी मिली। लोग कहते हैं कि उन्होंने कूद कर आत्महत्या कर ली थी। चेकोस्लोवाकिया में लाल झंडा फहरा चुका था, और कम्युनिस्ट तानाशाही आ चुकी थी।

लेकिन, जब ग्रीस में अमरीकी जहाज से हज़ारों खच्चर उतरे, तो वहाँ के किसान खुशी से नाचने लगे। यह मिस्सौरी के तगड़े खच्चर थे, और किसानों को मुफ्त मिल रहे थे। जितने चाहो, उतने खच्चर। अमरीका इसी तरह कृषि-संसाधन और आधुनिक उपकरण भेज कर यूरोप को अपने पैरों

पर खड़ा करने की कोशिश कर रहा था। जिन गरीबों के पास दो वक्त की रोटी न हो, उनके लिए अमरीका से आयी रोटी तो वरदान थी। पूरे ग्रीस के किसान एक स्वर में चिल्लाए, "लॉन्ग लिव अमेरिका"

ग्रीस का अमरीका के हाथ में जाना स्तालिन के लिए शीत-युद्ध की पहली हार थी। और तभी स्तालिन ने दो विंग बनाए- 'कॉमिनफॉर्म 'और 'कॉमिकॉन'। पहले का काम था दुनिया भर में साम्यवादी प्रोपोगैंडा, और दूसरे का काम था धन भेजना। सोवियत ने भी चेकोस्लोवाकिया के किसानों को संसाधन भेजने शुरू किए, और वे भी 'सोवियत की जय' करने लगे।

अब आधी दुनिया अमरीका की, और आधी सोवियत की जय-जयकार कर रही थी। जबकि दोनों ही देश दुनिया पर राज करने का स्वार्थी और षडयंत्रकारी खेल रच रहे थे।

अमरीका के अरबों डॉलर यूरोप में जा रहे थे, और पापा जो केनेडी जैसे व्यवसायी इससे नाखुश थे। वह पुराने खयालातों के थे। उनको यह बात समझ नहीं आ रही थी कि विश्व-युद्ध में, और अब युद्ध के बाद अमरीका अपनी नाक हर चीज में क्यों घुसेड़ रहा है?

उन्होंने अपने बेटे को जब पूछा, युवा सांसद जॉन ने टका सा जवाब दिया, "यह जरूरी है, वरना सोवियत हमारे लिए खतरा बन सकता है।"

पापा जो की बात ग़लत नहीं थी। जितना अमरीका ने युद्ध में नहीं खर्च किया, उससे कई गुणा ज्यादा युद्ध के बाद खर्च किया। यूरोप उद्धार के 'मार्शल प्लान 'को अरबों डॉलर की मंजूरी थी, और हर देश को धड़ल्ले धन बाँटे जा रहे थे। एक के बाद एक। पहले फ्रांस पर डॉलर बरसाए गए कि वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके। और फिर इटली पर।

अमरीका एक देश सुलझाता, तो दूसरे में उलझ जाता।

इटली में कम्युनिस्ट पार्टी के बीस लाख सदस्य हो गए थे। चुनाव में उनकी जीत पक्की थी। यह कोई बड़ी बात नहीं होती, अगर यह इटली न होता।

इटली यानी रोम। ईसाई धर्म की धुरी, जहाँ कट्टर कैथॉलिक ईसाई बसते हैं, और सदियों से साक्षात् पोप बैठते हैं; वहाँ नास्तिक साम्यवादीयों का राज? अगर उन्होंने चर्च की सत्ता ही खत्म कर दी तो?

अमरीका ने अभी-अभी स्तालिन से प्रभावित होकर जासूसी एजेंसी सीआईए बनायी थी। उनको असीमित धन देकर इटली के चुनाव को गुप्त रूप से मैनेज़ करने भेज दिया गया। उन्होंने गाँव-गाँव घूम कर कम्युनिस्टों के विरोध में अतिशयोक्तिपूर्ण फरेबी फ़िल्म (फेक न्यूज) चला दिए। विपक्षी 'ईसाई लोकतांत्रिक पार्टी 'को बेतहाशा धन देकर जगह-जगह विज्ञापन लगवा दिए।

स्वयं पोप ने इटली की जनता के सामने कहा, "कम्युनिस्टों के साथ यह लड़ाई धर्मयुद्ध है, और मैं हर कम्युनिस्ट को चर्च से बेदखल करता हूँ।"

इतालवी कम्युनिस्ट अब भी ईसाई ही थे, कई नियमित चर्च जाते थे। उनको चुन-चुन कर चर्च के दरवाजे से वापस भेजा गया, और समाज से बहिष्कृत कर दिया गया। इटली की कम्युनिस्ट पार्टी जो कभी हिटलर-मुसोलिनी के ख़िलाफ़ घूम-घूम कर 'बेला चाऊ 'गीत गाती थी, जनता की चहेती थी, वह इन शक्तियों के सामने बुरी तरह हार गयी।

खैर, इटली के लिए अच्छा ही हुआ। वहाँ अमरीकी मदद से 'फिएट' कार-कंपनी ऐसी खड़ी हुई कि बस उसी के दम पर इटली अमीर बनता गया।

जर्मनी की हालत सबसे बुरी थी। उसके चार हिस्से किए गए थे- अमरीका, फ्रांस, इंग्लैंड, और सोवियत के मध्य। यहाँ तक कि बर्लिन शहर भी चार टुकड़ों में था। यह इकलौती धरती थी, जहाँ अमरीका और इंग्लैंड के फौजी सोवियत के फौजी से रोज मिलते। कुछ दिनों में सोवियत को छोड़ कर बाकी तीनों ने साँठ-गाँठ कर ली।

स्तालिन भड़क गए और कहा, "इसके चार हिस्से इसलिए नहीं हुए थे कि तुम तीनों मिल जाओ और मुझे चौथाई पकड़ा दो। अगर ऐसा है तो इसके दो हिस्से होंगे- पूरब और पश्चिम।"

जब वे नहीं माने तो स्तालिन ने पश्चिमी बर्लिन का कनेक्शन ही काट दिया। बिजली पूरब से आती थी, पश्चिम में बिजली बंद। भोजन-सामग्री पूरब से आते थे, पश्चिम में भोजन बंद। अब आधा बर्लिन अंधेरे में भूखा रहने लगा। उनको सोवियत-क्षेत्र में जाने की इजाजत तो थी, लेकिन भारी चेकिंग होती। अमरीका और इंग्लैंड बर्लिन के लिए बॉम्बर-जेट पर राशन लेकर आए। विडंबना थी कि जिससे कुछ साल पहले हिटलर पर बम गिरा रहे थे, उसी से अब भोजन गिरा रहे थे। बर्लिन शीत-युद्ध का युद्धस्थल बन गया, और पश्चिमी जर्मनी के लोग अपने ही पूर्वी जर्मनी के भाईयों से नफरत करने लगे। एक पूँजीवादी जर्मनी थी, एक कम्युनिस्ट जर्मनी। जैसे आज के समय उत्तर-दक्षिण कोरिया?

अमरीका के लाखों डॉलर जर्मनी के पुनरुद्धार के लिए जाते ही रहे।

इस बीच कुछ ऐसे देश भी डॉलर लूटने आ गए जो प्लान में थे ही नहीं। युगोस्लाविया में कम्युनिस्ट तानाशाह टीटो का राज था, और वह स्तालिन को घास नहीं देते थे। स्तालिन ने उनको 'कम्युनिस्ट इंटरनेशनल 'से बाहर कर दिया। टीटो ने इस बात पर अमरीका से लाखों डॉलर ले लिए, कि अब वे उनके साथ हैं; और फिर सोवियत और अमरीका दोनों गुटों से अलग एक 'गुटनिरपेक्ष 'फ्रंट बना लिया। इसी गुटनिरपेक्ष में टीटो के साथ एक नए-नए आजाद हुए देश के प्रधानमंत्री भी आ गए— पंडित जवाहरलाल नेहरू!

उस वक्त हर देश के लिए यह धर्मसंकट था ही कि वे किसके साथ हैं? सोवियत के साथ या अमरीका के साथ? एक पाला चुनते ही, दूसरा आपका दुश्मन बन जाएगा। भारत जैसे देश दोनों महाशक्तियों के मध्य डोलते ही रह गए। अगर अमरीका का पाला चुन लेते तो क्या आज किसी यूरोपीय देश की तरह समृद्ध होते? शायद नहीं। यह कठपुतलियों का खेल था। और जैसा पोप ने कहा, यह धर्मयुद्ध भी तो था।

◆ ◆ ◆

जॉन एफ. केनेडी के एक दोस्त लिखते हैं, “जॉन के कमरे में उन दिनों हर रोज एक नयी लड़की होती, और जॉन किसी से भी एक रात से अधिक का संबंध नहीं बनाता। उन दिनों उसके लिए हर ऐसी लड़की एक मनोरंजन का साधन मात्र थी।”

केनेडी की ख़ासियत यह नहीं थी कि वह एक बुलंद व्यक्तित्व थे, बल्कि यह थी कि वह कमजोर और अनफिट व्यक्ति थे; और फिर भी राष्ट्रपति के पद तक पहुँचे। यही ख़ासियत रूज़वेल्ट की भी थी कि अपंग और व्हीलचेयर पर होकर भी अमरीका के सबसे ताकतवर राष्ट्रपति रहे। केनेडी बचपन से ही लगातार बीमारियों से लड़ते रहे, और उस जमाने में ऐसी ‘स्टेरायड ’दवा दी जाती कि उनकी हड्डियाँ गल गयी। सांसद बनने तक उनकी रीढ़ की हड्डियाँ एक-एक कर टूटने लगी। फिर भी केनेडी हार नहीं माने, और रोज ट्रेन पकड़ कर अपने राज्य जाते, उसके हर जिले में घूम-घूम कर लोगों से मिलते, वहीं छोटे लॉज या होटल में रुकते। केनेडी को रुकना नहीं था। पहले राज्य का गवर्नर बनना था, फिर राष्ट्रपति, और फिर मरना भी तो था। यह सब उन्हें जल्द से जल्द निपटाना था।

एटम-बम और शीत-युद्ध ने राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन को लोकप्रिय बना दिया था। केनेडी के पास उनकी आलोचना के लिए कोई मुद्दा नहीं था। तभी एक नए-नए बने पिद्दी देश की सेना ने अमरीकी फौज के छक्के छुड़ा दिए, और केनेडी को मुद्दा मिल गया।

बँटवारा सिर्फ बर्लिन का नहीं हुआ था, बँटवारा कहीं दूर एशिया में एक और देश का भी हुआ था। सोवियत और अमरीका की फौज ने संयुक्त रूप से कोरिया को जापान से मुक्त कराया था। वहाँ भी दोनों देश की फौज वैसे ही गले मिली थी, जैसे जर्मनी में। बाद में, वहाँ भी वैसे ही दुश्मनी जन्मी जैसी बर्लिन में।

कोरिया को मानचित्र पर बीचों-बीच रेखा (38 पैरेलल) काट कर दो भागों में बाँटा गया। आधा सोवियत ने लिया, आधा अमेरिका ने। दोनों ने कठपुतली राष्ट्रपति बनाए। अमरीका में बसे सिंगमन री को उठा कर दक्षिण कोरिया लाया गया। और मॉस्को में बैठे नौजवान किम-इल-सुंग

को गाजे-बाजे के साथ उत्तरी कोरिया। अमरीका और सोवियत की फौज घर लौट गयी।

तभी एक तरफ रूस ने एटम-बम का परीक्षण किया और दूसरी तरफ चीन में कम्युनिस्ट माओ-त्से-तुंग की सत्ता आयी। दो विशाल, शक्तिशाली कम्युनिस्ट देशों सोवियत और चीन के कोने में दुबका कोरिया भला क्या पूँजीवादी रहता? जून, 1950 में उत्तरी कोरिया की फौज बड़े आराम से दक्षिण कोरिया में घुस गयी कि हम तो एक संस्कृति, एक भाषा के देश हैं; हमें कौन बाँटेगा?

संयुक्त राष्ट्र की बैठक अगले ही दिन बैठ गयी। सोवियत ने इसका बहिष्कार किया क्योंकि संयुक्त राष्ट्र संघ ने अब तक कम्युनिस्ट चीन को वैधता नहीं दी थी। संघ को यह अंदेशा नहीं था कि भविष्य में यही अवैध चीन, सुरक्षा परिषद में वीटो पावर के साथ जगह बनाएगा। पश्चिमी देशों ने एशिया (और सोवियत) के साथ सौतेला व्यवहार रखा था, इसमें कोई दो राय नहीं थी।

एक छोटे से उत्तरी कोरिया से लड़ने के लिए सोलह देशों की संयुक्त फौज भेजने का निर्णय हुआ। भारत की भी एक सैन्य टुकड़ी भेजी गयी। साम्यवाद को रोकने के लिए अब अकेले अमरीका नहीं, पूरे संघ ने कमर कस ली थी। आत्मविश्वास से भरी अमरीका ने अपनी फौज यूँ भेजी कि जाओ! दो हफ्ते में हरा कर लौट आओ। उन्हें क्या मालूम था कि यह देश उनके लिए दो हफ्ते तो क्या, अगले कई दशकों तक नासूर बन जाएगा।

महीनों की लड़ाई के बाद सिओल को मुक्त कराया गया। आत्मविश्वास से भरी अमरीका की फौज उत्तर कोरिया में घुस गयी। उत्तरी कोरिया की राजधानी प्योंगयांग पर कब्जा कर लिया। कर्नल मैकआर्थर की ट्रूप जोश में बढ़ती ही जा रही थी। लेकिन, वे यह भूल गए कि वे अकेले कोरिया से नहीं लड़ रहे; वह एक गुफा में घुसते जा रहे हैं, और गुफा के मुहाने पर चीन बैठा है!

जैसे ही अमरीका की फौज यालू नदी तक पहुँची, लाखों चीनी फौजी अमरीका से लड़ने के लिए खड़े थे। उन्हें डर था कि अमरीकी चीन में घुस जाएँगे। और इसे उन्होंने अस्मिता की लड़ाई बना लिया। अब अमरीका

की खैर नहीं थी। चीन की जमीनी सेना ने अमरीकी फ्रंटलाइन को बुरी तरह रौंद दिया, और उनकी फौज वापस दक्षिण भागने लगी। अमरीका हार रही थी। चीन की सेना ने उत्तरी कोरिया तो वापस कब्जा किया ही, बल्कि दक्षिण में सिओल तक पहुँच गयी। ट्रूमैन ने अमरीकी जनरल मैकआर्थर को बरखास्त कर दिया।

पत्रकारों ने ट्रूमैन से पूछा, "आप कोरिया पर एटम-बम क्यों नहीं गिरा देते?"

ट्रूमैन ने कहा, "हम नहीं गिरा सकते क्योंकि अब यह बम बस हमारे ही पास नहीं है। उनके पास भी है।"

अमरीका के तीस हज़ार से अधिक फौजी मारे गए। विश्व-युद्ध में विजय दिलाने वाले ट्रूमैन ने हार की जिम्मेदारी ली और अगले राष्ट्रपति चुनाव में नहीं खड़े हुए।

अब अमरीका को एक मजबूत राष्ट्रपति की जरूरत थी, और वह आ भी गये। उन्होंने चुनाव-प्रचार में कहा, "मैं आ गया हूँ। मैं दिलाऊँगा कोरिया पर जीत!"

उनकी बात पर अमरीकियों को भरोसा भी था। वह कोई हवाबाज नहीं थे, अमरीका को जॉर्ज वाशिंगटन और जैक्सन सरीखों के बाद आखिर एक फौजी जनरल राष्ट्रपति मिल रहा था। जनरल 'आइक 'आइजनहावर!

◆ ◆ ◆

लाल रंग का भय:
द रेड स्केयर

"साम्यवाद कोई पार्टी नहीं है, यह एक जीवन-शैली है। एक रोग है। एक संक्रामक रोग। और ऐसे संक्रामक रोगों का निदान है- क्वारांटाइन"

- एड्गर हूवर, निदेशक, एफ.बी.आई.

अमरीका में भी किसी और लोकतांत्रिक देश की तरह, एक दक्षिणपंथी (राइट-विंग) और एक वाम-पक्षी (लेफ्ट-विंग) पार्टी है। रिपब्लिकन पार्टी जिसे GOP

(ग्रैंड ओल्ड पार्टी) भी कहते हैं, वह दक्षिणपंथी कही जाएगी। डोनाल्ड ट्रंप उसी पार्टी से हैं। डेमोक्रैट पार्टी उदारवादी या वाम-पक्षी है।

हालांकि, अमरीका की पुरानी परिभाषा है, "अमरीका एक इंटरप्राइज है, और उसके सभी नागरिक शेयर-होल्डर"। तो वहाँ वाम-दक्षिण कुछ नहीं, पूँजी मुख्य है।

शीत-युद्ध के बाद जो थोड़े-बहुत 'लेफ्ट 'थे, उनको भी दिशा बदलनी पड़ी। मसलन, राष्ट्रपति रूज़वेल्ट और हैरी ट्रूमैन डेमोक्रैट थे, और उन्होंने ही कम्युनिस्टों के खिलाफ़ शीत-युद्ध शुरू किया।

लेकिन, हैरी ट्रूमैन ने यह स्पष्ट कहा, "हम एक साम्यवादी तानाशाही के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए अपने देश को दक्षिणपंथी तानाशाही की ओर नहीं धकेल सकते।"

दूसरे शब्दों में, वह कह रहे थे कि हम स्तालिन से लड़ने के लिए हिटलर नहीं बन सकते। जबकि, अमरीका धीरे-धीरे हिटलर बनने लगा था। और जॉन एफ. केनेडी जैसे डेमोक्रैट युवक भी इस हिटलरशाही के समर्थक बन गए थे। माहौल ही इतना गरम था।

अब चीन का ही उदाहरण लें। च्यांग-काइ-शेक अमरीका के ख़ास दोस्त थे। उस समय चीन से विद्यार्थी आकर अमरीका में पढ़ते थे। दोनों देशों में व्यापार-संबंध थे। सब अच्छा चल रहा था। और अचानक एक दिन पूरा चीन कम्युनिस्ट बन गया। माओ त्से-तुंग आ गए। च्यांग-काइ-शेक को भाग कर ताइवान जाना पड़ा। यह कैसे हो गया?

जाहिर है, स्तालिन ने खेल खेला। लेकिन, अमरीकी सीनेटर जोसेफ़ मैकार्थी ने इल्जाम लगाया, "यह खेल यहीं इस धरती पर खेला गया है। हमारे अपने गृह मंत्रालय में, हमारी सरकार में, हमारी फौज में कम्युनिस्ट छिपे हैं। मैं उन सबके नाम ले रहा हूँ...."

और उन्होंने कई नाम ले डाले।

यह बात पूरी तरह ग़लत नहीं थी। साम्यवाद जिस दिन रूस में आया, इसकी लहर पूरी दुनिया में फैली। जयप्रकाश नारायण पर मैंने पहले लिखा है कि उनको समाजवाद और साम्यवाद की दीक्षा अमरीका में

ही मिली। विश्वविद्यालयों के नामी प्रोफ़ेसर और विद्यार्थी खुल कर साम्यवादी थे, और उनमें से ही चुन कर लोग उच्च सरकारी पदों और मंत्रालयों तक पहुँचते। साम्यवाद एक सोच थी, जो 'ब्लू-कॉलर 'मजदूर यूनियनों से लेकर 'वाइट कॉलर 'अफसरों तक के दिमाग में थी।

लेकिन, मैकार्थी के आरोप बिना सबूत के थे। वह कट्टर साम्यवाद-विरोधी थे, उनकी नजर में हर दूसरा व्यक्ति साम्यवादी था। वह अक्सर कहते कि इन सब देशद्रोहियों को पकड़ कर सोवियत भेज देना चाहिए। मैकार्थी ने अपने सहयोगी रॉय कोन के साथ मिल कर समलैंगिकों को पकड़ना शुरु किया कि ये सभी कम्युनिस्ट हैं। हालांकि, वर्षों बाद पता लगा कि रॉय कोन स्वयं समलैंगिक थे, और उनकी मृत्यु एड्स से हुई। मैकार्थी के नाम पर अंग्रेज़ी का एक शब्द ही ईजाद हो गया- Mccarthism यानी जनता को भड़काने के लिए, झूठे आरोप लगा कर किसी को भी देशद्रोही कह देना।

इस कड़ी में सबसे बड़ा नाम उछला ऐल्गर हिस्स का। ऐल्गर गृह मंत्रालय के सचिव थे। जब याल्टा (रूस) में रूज़वेल्ट-स्तालिन-चर्चिल मिले तो वह रूज़वेल्ट के साथ ही थे। यहाँ तक कि संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के काग़ज़ ऐल्गर ने ही बनाए थे। उन पर सोवियत जासूस होने का आरोप लगा। वह मना करते रहे, लेकिन रिचर्ड निक्सन जैसे रिपब्लिकन सांसद ने उनकी एक न सुनी। उन पर देशद्रोह का मुकदमा हुआ, और वह सलाखों के अंदर गए। अमरीकी जनता के लिए वह जीवन भर देशद्रोही ही रहे (और शायद थे भी)। रिचर्ड निक्सन का नाम भी इस ट्रायल के बाद इतना मशहूर हुआ कि वह आगे जाकर राष्ट्रपति ही बन गए।

जोसेफ़ मैकार्थी केनेडी परिवार के पुराने दोस्त थे। जब जॉन एफ. केनेडी हार्वर्ड विश्वविद्यालय के एक कार्यक्रम में गए तो वहाँ के डीन ने मंच पर हँस कर कहा, "हम किस्मत वाले हैं। हमारी यूनिवर्सिटी ने आज तक न कोई एल्गर नेस पैदा किया, और न कोई जोसेफ़ मैकार्थी"

जॉन ने उसी वक्त उनको रोका और कहा, "आप कैसे एक देशद्रोही के साथ देशभक्त का नाम ले सकते हैं?"

राष्ट्रपति बनने के बाद जॉन इस कथन से इंकार करते रहे, लेकिन उस वक्त वह भी कट्टर साम्यवाद-विरोधी थे और सभी कम्युनिस्टों को पकड़ कर बंद करने के पक्ष में थे।

आइजनहॉवर इसी लहर में जीते और निक्सन उनके सहयोगी थे। उनके आते ही उत्तर कोरिया पर बमबारी शुरू हुई, और प्योंगयांग शहर पूरी तरह ध्वस्त कर दिया गया। एक मकान तो क्या, एक आदमी साबुत न बचा। रिपोर्ट कहते हैं कि इस तरह का 100 प्रतिशत विनाश एटम-बम से भी नहीं हुआ था। हालांकि, चीन की विशाल सेना की वजह से अमरीका उत्तर कोरिया जीत नहीं पायी, और आखिर संधि हो गयी। कोरिया दो फाँक में बँट कर ही रहा। साम्यवादी उत्तर कोरिया और पूँजीवादी दक्षिण कोरिया।

अमरीका और सोवियत ने कुछ वर्षों के लिए स्वयं को दुनियावी झंझटों से दूर कर लिया। सोवियत ने तो सीमाएँ भी बाँध ली, और एक गुप्त-देश बन गया। जब बाहर के आक्रमण बंद हुए तो अंदर के आक्रमण शुरू हो गए। अपने ही नागरिकों में देशद्रोही चुनना, और उन्हें प्रताड़ित करना। स्तालिन ने दमन के लिए बनाए 'गुलाग 'जैसे कठोर यातना-कैम्प। और अमरीका ने शुरू किया कम्युनिस्टों की जेलबंदी और स्वतंत्र अभिव्यक्ति का दमन। ऐसे मामलों में टारगेट तो स्पष्ट ही होता है। बुद्धिजीवी वर्ग। जैसे— साहित्यकार, समाजसेवी, पत्रकार, कलाकार, फ़िल्मकार। ये एक साथ अमरीका में कहाँ मिल सकते थे?

हॉलीवुड!

◆ ◆ ◆

अमरीका की ताकत है— स्वतंत्रता। स्वतंत्र अभिव्यक्ति, स्वतंत्र अर्थव्यवस्था, स्वतंत्र जीवनशैली। लोग अमरीका जाते हैं कि उन्मुक्त जिंदगी जी सकें। 'ग्रेट अमेरिकन ड्रीम 'यही तो है। अब्राहम लिंकन ने भी गृह-युद्ध के रक्त-रंजित रण में यही सौगंध ली थी कि चलो! अमेरिका को असल आजादी दिलाएँ। विचारों की आजादी, भेदभाव से आजादी। लेकिन, आजादी तो स्वयं एक मिथक है। आखिर उड़ता पंछी भी तो आकाश से बंधा ही होता है।

अमरीकी फ़िल्म अभिनेताओं की एक टोली अमरीकी संसदीय कमिटी में वक्तव्य देती है, “हॉलीवुड के कई निर्देशक साम्यवादी हैं, और हमें ऐसी स्क्रिप्ट मिल रही है जिसमें साम्यवाद की बू है। हमारे संगठन पर भी उनका ही वर्चस्व है।”

इन अभिनेताओं में ही एक थे— रोनाल्ड रीगन। वह आगे जाकर राष्ट्रपति बने।

हॉलीवुड के पटकथा-लेखकों (स्क्रीनराइटर्स) को ट्रायल के बुलाया गया। उनसे पहला ही सवाल पूछा गया, “क्या आप कम्युनिस्ट हैं?”

अधिकतर लोगों ने कहा, “हम अमरीका के नागरिक हैं, फ़िल्म बनाते हैं, और स्वतंत्र जीवन जीते हैं। यह सवाल भी उसी जीवन का हिस्सा है।”

यह उत्तर एक तरह से ‘हाँ ’ही था, और सभी को जेल में बंद कर दिया गया। सैकड़ों फ़िल्मकार और अभिनेता ‘ब्लैकलिस्ट ’किए गए, जिन पर कड़ी निगरानी रखी गयी। चार्ली चैपलिन लंदन में थे, जब उन्हें पता लगा कि अमरीका पहुँचते ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा। चैपलिन अगले बीस साल तक अमरीका नहीं लौट सके।

हॉलीवुड दो टुकड़ों में बँट गया— देशभक्त और देशद्रोही। धीरे-धीरे पूरा देश ही दो टुकड़ों में बँट गया। वाशिंगटन में एक बड़ी रैली निकली कि इन देश के गद्दारों, कम्युनिस्टों को सजा दो! लोग घर-घर ढूँढ रहे थे कि कौन कम्युनिस्ट है। और कौन हो सकता था कम्युनिस्ट? दलित नेता?

पॉल रॉब्सन मशहूर अश्वेत गायक थे, जिनकी आवाज में अश्वेतों का दर्द स्पष्ट झलकता। वह हॉलीवुड के अन्य लोगों की तरह गोल-मटोल नहीं, बल्कि खुल कर खुद को कम्युनिस्ट कहते। वह मॉस्को जाकर कार्यक्रम भी करते। जब वह न्यूयॉर्क में एक कार्यक्रम करने आए, नए-नए बने देशभक्त ब्रिगेड ने उनको वहीं ‘मॉब लिंचिंग ’करने का कार्यक्रम बनाया।

वे चिल्ला रहे थे, “यहूदियों, कॉमी लोगों, निग्गरों! तुम सब देशद्रोही हो। हिटलर ने काम पूरा नहीं किया, हम पूरा करेंगे। हम तुम्हें मारेंगे।”

पुलिस ने रोकने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने रॉब्सन की कार को रोक लिया और पत्थर बरसाने लगे। एक गोरे पुलिस अफसर ने कहा, “यह रॉब्सन नहीं है भाई! मैंने तस्वीर देखी है।”

वह चिल्लाए, “जो भी है, यह निग्गर गोरी महिला के साथ बैठा है। रॉब्सन नहीं भी है तो साले को मारो।”

पुलिस ने कहा, “नहीं। यह अमरीकी तरीका नहीं है। आगे जाओ और सही निग्गर को ढूँढ कर मारो।”

गाड़ी में रॉब्सन ही थे, और पुलिस ने उनकी जान इस तरह झूठ बोल कर बचा ली थी।

एक युवा दंपति (रॉजेनबर्ग) को सोवियत जासूसी के नाम पर मृत्यु-दंड मिला। यह भी अमरीका में असंवैधानिक था, और न्यायाधीश ने जब रोकना चाहा तो उनको ही कहा गया कि आपको भी कम्युनिस्ट माना जाएगा। अगले ही दिन रॉजेनबर्ग दंपति को मृत्यु दे दी गयी।

वहीं, कम्युनिस्टों के स्वर्ग सोवियत में इससे भी विकराल स्थिति थी। स्तालिन के ख़िलाफ़ चूँ करने वाले को भी गिरफ्तार कर लिया जाता। चार हज़ार मीलों तक लंबे यातना-शिविर बनाए गए, जहाँ उनको पटक दिया जाता और कठिन श्रम कराया जाता। यह ‘गुलाग ’कहलाया। स्तालिन की बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ, और तस्वीरें हर साम्यवादी देश में लगायी गयी, और ‘स्तालिन की जय ’कहते हुए मार्च कराए जाते। साम्यवाद अब एक व्यक्ति की पूजा तक सिमट कर रह गया था।

जॉर्ज ऑरवेल ने 1944 में पर स्तालिन पर तंज में ‘एनिमल फार्म ’लिखा था,

“सभी प्राणी एक समान होते हैं, लेकिन कुछ औरों से अधिक समान होते हैं।”

वहाँ भी कम्युनिस्ट नेताओं के ट्रायल हुए कि वे स्तालिन के कितने भक्त हैं। अगर नहीं, तो उन्हें अमरीकी जासूस करार दिया जाता, और फिर यातना किसी हद तक जा सकती थी। मृत्यु तक भी। रुडॉल्फ स्लांस्की

चेकोस्लोवाकिया के अग्रणी कम्युनिस्ट नेता था, जिनका ट्रायल हुआ और उन्हें फांसी पर लटका कर जला दिया गया। वह यहूदी थे।

सोवियत हो या अमरीका या जर्मनी। यहूदी कहीं नहीं बच पाए। राजनीति-विज्ञान में इसे 'पाँचवा स्तंभ 'कहते हैं। यह स्तंभ है अपने देश के अंदर एक दुश्मन रचना, और देश की समस्याओं के लिए उन्हें जिम्मेदार ठहराना। अर्थव्यवस्था गिरी तो बुद्धिजीवियों ने गिराई, कहीं अन्याय हुआ तो बुद्धिजीवियों की वजह से हुआ। सोवियत अब भी संगीत-कला का केंद्र था, लेकिन हर संगीत, हर पेंटिंग की जाँच की जाती। अगर तनिक भी साम्यवाद (स्तालिनवाद) से भटका तो 'गुलाग 'भेज दिया जाता। लोग गायब हो रहे थे, ख़ास कर यहूदी। यहाँ तक कि यहूदी डॉक्टरों पर यह इल्जाम लगा कि अमरीका के कहने पर ग़लत इलाज कर रहे हैं। यही स्थिति अमरीका में भी थी। वहाँ भी बुद्धिजीवी रातों-रात उठाए जा रहे थे।

अगर उस वक्त की कल्पना करें तो निर्मल वर्मा के 'रात का रिपोर्टर' के नायक सी बेचैनी होगी। उन्हीं दिनों कम्युनिस्ट सोवियत और चीन के दक्षिण, दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र का उदय हुआ था। लेकिन, किसे फुरसत थी देखने की?

भारत। यह भी तो एक देश है। विश्व-युद्ध, शीत-युद्ध, साम्यवाद, पूँजीवाद के फेर में किसी का ध्यान दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी आबादी वाले देश पर गया ही नहीं। यहीं केनेडी अलग थे। वह 'लैटरल-थिंकर 'थे। उनकी सोच अमरीका के तमाम अनुभवी नेताओं से अलग थी। वजह चाहे जो भी रही हो।

उन्होंने एक थ्योरी सोची, "साम्यवाद के विस्तार की वजह है लोकतंत्र की कमजोरी। अगर हम दुनिया में लोकतंत्र मजबूत करेंगे, साम्यवाद अपनी मौत खुद मर जाएगा।"

आज केनेडी की मृत्यु के छह दशक बाद यह बात कितनी सच्ची नजर आती है। सोवियत खत्म हो चुका है, लोकतंत्र जिंदा है।

केनेडी अपने छोटे भाई बॉबी (रॉबर्ट केनेडी) के साथ 1951 में एशिया घूमने निकले। उनका मानना था कि भारत, पाकिस्तान, ईरान, थाइलैंड, वियतनाम, ये भविष्य के देश हैं। ख़ास कर भारत से संबंध बनाना जरूरी

है, क्योंकि वह दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। केनेडी उस वक्त मात्र सांसद थे। उनका भारत आना अनौपचारिक था। पंडित नेहरू को भी नहीं मालूम था कि यह लड़का राष्ट्रपति बन जाएगा।

रॉबर्ट डालेक इस प्रसंग को कुछ यूँ लिखते हैं—

नेहरू की बात करने में शायद रुचि नहीं थी, और बोर हो रहे थे। जॉन और बॉबी की सुंदर बहन पैट्रिसिया भी साथ थी, वह उन्हीं की तरफ कभी-कभार मुखातिब थे। अधिकतर नेहरू अघाए छत की तरफ ताक रहे थे और किसी बुजुर्ग की तरह समझा रहे थे,

“फ्रांस ख़्वाह-म-ख़्वाह इंडोचाइना (वियतनाम का इलाका) का मोह लिए बैठी है। अब उपनिवेशों का जमाना गया। अमरीका उन्हें शह दिए जा रही है। आप एक पेंदीहीन पात्र में धन गिराए जा रहे हैं। जानते हो, वियतनाम में साम्यवाद क्यों आ रहा है? क्योंकि साम्यवाद उन्हें कुछ ऐसा देता है, जिसके लिए वे जान कुर्बान करने को तैयार हो जाते हैं। और पश्चिम तो उन्हें बरसों से बस लूट ही रहा है। आप उन लोगों का दिल धन से नहीं, मन से जीतिए।”

नेहरू की यह शिक्षा केनेडी उस वक्त किसी नीरस गुरु-ज्ञान की तरह देखते हैं, लेकिन अगर वह जीवित रहते तो शायद मानते कि नेहरू ने ठीक कहा था। वियतनाम अमरीका के लिए एक पेंदीहीन पात्र ही सिद्ध हुआ। खैर, एक दशक बाद केनेडी गुरु-दक्षिणा भी दे ही देंगे; जब चीन भारत पर हमला करेगा और केनेडी राष्ट्रपति होंगे। लेकिन, उसकी चर्चा बाद में।

पापा जो को गरीब देशों में कोई रुचि नहीं थी। जब जॉन भारत से लौटे तो उन्होंने कटाक्ष किया, “अब अमरीका को उत्तरी ध्रुव के एस्किमो और अंटार्कटिका के पेंगुइन से भी संबंध बना ही लेने चाहिए।”

यह ख़्वाह-म-ख़्वाह कटाक्ष था। केनेडी भारत आने से कुछ ही महीने पहले यूरोप के भी कई देश घूम कर गए थे। केनेडी की सुई पूरी दुनिया में घूम रही थी, और अमरीका की सुई सोवियत पर अटकी थी। वह भारत का महत्व समझते थे।

केनेडी ने यूरोप से लौट कर रेडियो पर कहा था, “सोवियत बस गीदड़-भभकी देता रहेगा, लेकिन अमरीका या किसी पश्चिमी यूरोपीय देश पर आक्रमण की ग़लती कभी नहीं करेगा। हमें अन्य देशों की तरफ ध्यान देनी चाहिए, जो उभर रहे हैं और सोवियत प्रभाव में जा सकते हैं।”

यह बात भी सत्य सिद्ध हुई। भारत सोवियत से न सिर्फ प्रभावित रहा, वहाँ का प्रोपोगैंडा साहित्य भारत के दक्षिण तक पसर गया। नेहरू स्वयं सोवियत के भ्रमजाल में रहे, हालांकि सोवियत ने नियमित मदद भी की। भारत-रूस भाई-भाई बन गए, हिन्दी फ़िल्में रूस में खूब चली। लेकिन, सोवियत जासूसी तंत्र भी भारत में लंबे समय तक सक्रिय रहा। अमरीका ने आने में देर कर दी। केनेडी के बाद ही कुछ समय के लिए यह द्वार खुला।

जॉन के लिए इस ट्रिप का एक हासिल और रहा। उनके भाई बॉबी, जो आठ साल छोटे थे, उनसे एक ऐसा संबंध स्थापित हुआ जो उनके भविष्य में एक मजबूत कड़ी बनी। बॉबी केनेडी जॉन के सेनापति बन कर उभरे। एक साये की तरह जॉन के साथ रहे।

◆ ◆ ◆

ख्रुस्चेव

व्यक्तिवाद तो व्यक्ति के साथ ही खत्म हो जाता है। 1953 में स्तालिन की मृत्यु के साथ ही स्तालिनवाद खत्म हो गया।

स्तालिन सोवियत को महाशक्ति बना गए थे। स्तालिन के बाद क्या? कोई उत्तराधिकारी नहीं। कोई लोकतंत्र नहीं। कोई राष्ट्राध्यक्ष नहीं। निकिता ख्रुश्चेव जैसे ही नेता बन कर उभरे, उन्होंने सोवियत से स्तालिन का नाम मिटाना शुरु किया!

ख्रुश्चेव ने एक भाषण दिया, "स्तालिन सैकड़ों साम्यवादियों के हत्या के जिम्मेदार हैं। वह आत्म-केंद्रित व्यक्ति थे, जिन्होंने अपने विरोधियों को चुन-चुन कर खत्म किया। वह क्रूर व्यक्ति इस देश के नाम पर एक धब्बा थे।"

यह भाषण एक गुप्त मीटिंग में दिया गया था, और इसे सुन कर कुछ लोगों को वही हृदयाघात आ गया। स्तालिन को सोवियत वासी पितृ-तुल्य मानते थे। यह भाषण उन्हें रुला गया। अमरीका ने अलग मजे लिए। इजरायली जासूसी एजेंसी 'मोस्साद 'के माध्यम से यह भाषण मिल गया, और उन्होंने यह अमरीकी रेडियो पर बारम्बार चलाया। कम्युनिस्टों के ख़िलाफ़ प्रोपोगैंडा में ख्रुश्चेव का यह भाषण हिट हो गया।

स्तालिन के जाते ही साम्यवाद बिखरने लगा। पूर्वी जर्मनी और पोलैंड में मजदूर सड़क पर निकल गए। हंगरी में विशाल क्रांति हो रही थी, और अमरीका भी क्रांतिकारियों का गुप्त सहयोग कर रहा था। लाल झंडे जलाए जा रहे थे, कम्युनिस्ट नेताओं को पकड़ कर पीटा जा रहा था। बुडापेस्ट में स्टालिन की मूर्ति को तोड़ कर गिरा दिया गया।

लेकिन, ख्रुश्चेव ने जल्द ही साम-दाम-दंड-भेद से सब संभाल लिया। हंगरी में टैंक भेज कर हज़ारों क्रांतिकारियों को मौत के घाट उतारा गया। इसी तरह अन्य देशों को भी काबू किया गया। पश्चिमी देशों ने एकजुट होकर NATO बनाया था। उसके जवाब में साम्यवादी देशों की फौज 'वार्सा संधि 'में एकजुट हो गयी। ख्रुश्चेव ने युगोस्लाविया के तानाशाह टीटो को भी मिला लिया। वह स्तालिन की ग़लतियों को सुधारने में लगे थे।

स्तालिन के फौजी डील-डौल के विपरीत ख्रुश्चेव मस्तमौला व्यक्ति थे, हालांकि शातिर वह कम नहीं थे।

जब आइजनहावर से उनकी पहली मुलाकात हुई तो आइजनहावर ने कहा, "हम एक-दूसरे की धरती का हवाई परीक्षण करते हैं। आप हमारी तस्वीरें ले लें, और हम आपकी। हमारे परमाणु तैयारियों में पारदर्शिता रहनी चाहिए।"

ख्रुश्चेव ने कहा, "आप अमरीकियों को दूसरे के बेडरूम में झाँकने की बड़ी बुरी आदत है।"

सोवियत अब कुछ क्षेत्रों में तेज़ी से तरक्की कर रहा था। उसने परमाणु बम के कई परीक्षणों के बाद हाइड्रोजन बम का भी परीक्षण कर लिया। ऐसा बॉम्बर हवाई-जहाजों का जखीरा बना लिया, जो अमरीका जाकर बम गिरा सके। 1957 में पहला इंटर-कॉन्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल बना लिया, जो एक महादेश से दूसरे महादेश तक जा सकता था। और उसी साल सोवियत ने पृथ्वी की सभी सीमाएँ पार कर ली। स्पूतनिक अब अंतरिक्ष में था, और पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा था।

अमरीका इस रेस में बहुत पीछे रह गया। जहाँ अमरीका में छात्रों की रुचि विज्ञान में घट गयी थी, सोवियत में बच्चा-बच्चा गणित-भौतिकी पढ़ रहा था। अमरीका ने हड़बड़ी में एक अंतरिक्ष-यान का परीक्षण किया, लेकिन

रॉकेट उड़ने से पहले ही जमीन पर फट गया। इसे अखबारों ने 'फ्लॉप-निक 'कहा।

रिचर्ड निक्सन अमरीका के विज्ञान की कामयाबी दिखाने के लिए 1959 में 'कलर टीवी 'लेकर मास्को गए, और कहा,
"आप हमसे रॉकेट में आगे हैं, तो हम आपसे टेलीविजन में। यह देखिए रंगीन टेलीविजन।"

ख़ुश्चेव ने हँस कर बीच में बात काटते हुए कहा, "हमने रॉकेट बना लिया तो यह टेलीविजन क्या चीज है? इसमें भी तुम्हें पछाड़ देंगे।"

यह बात-चीत टेलीविजन पर दिखायी गयी और 'किचेन डिबेट 'नाम से प्रसिद्ध हुई। ख़ुश्चेव की मिसाइल और स्पेस-रेस ने अमरीका की रिपब्लिकन सरकार को मुँह छुपाने को मजबूर किया।

केनेडी के लिए जीत का रास्ता आसान हो गया।

◆ ◆ ◆

राजनीति में चाल बदलते रहनी चाहिए। हवा का रुख देख कर। कभी स्तालिन राजा थे, अब मूर्तियाँ टूट रही थी। अमरीका भी बदल रहा था। जिन मैकार्थी ने साम्यवादियों का शिकार करना शुरू किया था, वह खुद ही शिकार हो गए।

आइजनहावर ने पहले चुनाव जीतने के लिए उनका इस्तेमाल किया। फिर उनको मक्खी की तरह निकाल कर फेंकते हुए कहा, "Mccarthism अब Mccarthwasm है। इस देश में इतनी नफरत के लिए जगह नहीं।"

केनेडी परिवार ने भी उनसे दूरी बना ली। कभी कट्टर देशभक्त कहे जाने वाले जोसेफ़ मैकार्थी शराब के नशे में चूर रहने लगे, और जल्द ही लिवर की बीमारी से मर गए।

केनेडी ने उदारवादी रुख अपनाया। अल्पसंख्यकों, यहूदियों, आइरिश और इतालवी अमरीकियों, महिलाओं, और श्रमिकों के करीब आए। बाकी, पापा जो का धन तो था ही। सीनेटर का चुनाव जीत गए।

रही बात सोवियत-अमरीका संबंध की। तो पहली बार किसी सोवियत कम्युनिस्ट नेता ने अमरीका की धरती पर कदम रखा। 1959 में निकिता ख्रुश्चेव अपने शाही हवाई जहाज से जब अमरीका आए, तो गाजे-बाजे के साथ स्वागत हुआ। आइजनहावर और ख्रुश्चेव ने मिल कर कहा,

“हम दुनिया की दो सबसे बड़ी शक्तियाँ हैं। हमें अब मिल कर काम करना चाहिए। लड़ना बंद करना चाहिए।”

लगा कि शीत-युद्ध खत्म हो गया। अगले साल निकिता ख्रुश्चेव और आइजनहावर पेरिस में मिलने जा रहे थे। ख्रुश्चेव ने जिस वक्त मॉस्को से उड़ान भरी, उसी वक्त पाकिस्तान से एक जहाज उड़ा। यह जहाज पाकिस्तान का नहीं था, अमरीका का था।

अमरीका ने एक जासूसी जहाज बना लिया था, जिसे रडार नहीं पकड़ सकते। यह उड़ा सोवियत की खुफिया तस्वीरें लेने। और सोवियत ने इस उड़ते पंछी को मार गिराया। जहाज तो गिरा ही, पायलट भी पकड़ा गया।

ख्रुश्चेव को पेरिस उतरते ही यह खबर मिली, और वह बीच सम्मेलन में दहाड़े,

“यह एक घिनौनी हरकत है, जिसकी सजा मिलनी ही चाहिए। मैं धमकी नहीं दे रहा हूँ। मैं बस एक चेतावनी दे रहा हूँ कि आप सोवियत या किसी समाजवादी देश की सीमा बिना इजाजत नहीं लाँघ सकते। और अगर आपको मालूम नहीं कि हमारी सीमाएँ कहाँ-कहाँ हैं, तो हम दिखाएँगे। हमारी हर सीमा से आपको गूँज सुनाई देगी।”

जब आइजनहावर ने माफी माँगने से इंकार किया, तो ख्रुश्चेव गुस्से में सम्मेलन छोड़ कर अपनी गाड़ी पर बैठ कर रवाना हो गए।

अमरीका की जासूसी कोई नयी नहीं थी। सोवियत तो खुद ही अमरीका में बरसों से जासूसी कर रहा था। लेकिन, इस बार अमरीका बुरी तरह पकड़ा गया था। इससे पहले भी एक बड़ा आरोप लगा था। स्तालिन के

बायें हाथ और खुफिया एजेंसी के चीफ लावरेंटी बेरिया पर। वह याल्टा सम्मेलन में स्तालिन के साथ ही बैठे थे। वह तो स्तालिन के बाद राष्ट्रपति भी बन जाते, लेकिन ख्रुश्चेव ने उनको अमरीका का जासूस और देश का गद्दार कह कर ट्रायल करवाया। वह घुटनों पर आकर माफी माँगते रहे, और उनको गोली मार दी गयी।

यह भी एक इत्तेफाक ही है कि याल्टा सम्मेलन में रूज़वेल्ट के बायें हाथ रहे एल्गर हिस्स पर देशद्रोही होने का आरोप लगा, और स्तालिन के बायें हाथ रहे बेरिया पर। अगर ये दोनों गद्दार थे तो यह खेल वाकई खुफियागिरी के चरम पर था।

जॉन एफ. केनेडी ने अमरीका में कहा, "जनरल आइजनहावर हमारे देश की बेइज्जति कराना अब बंद करें। सोवियत हमें हर कदम पर जलील कर रहा है। हम न धरती पर उनसे आगे रहे, न आकाश में, न अंतरिक्ष में। हमें अब किसी मजबूत नेतृत्व की जरूरत है।"

जब केनेडी यह कह रहे थे, सोवियत के यूरी गगारिन एक यात्रा पर निकल रहे थे। पहला मानव अंतरिक्ष में जा रहा था और पृथ्वी की परिक्रमा करने वाला था। यह ऐसी अद्वितीय घटना थी, जिस पर सोवियत ही नहीं, पूरी दुनिया को गर्व हुआ। कभी-कभी माध्यम से अधिक लक्ष्य महत्वपूर्ण होता है।

इन दो देशों की प्रतिद्वंद्विता ने विज्ञान-समुद्र का ऐसा मंथन किया, कि नित नए शोध, नए आविष्कार, नयी ऊँचाइयाँ हासिल हो रही थी। यह कहना ग़लत न होगा कि शीत-युद्ध विज्ञान के लिए वरदान साबित हुआ।

दुनिया अब रॉक भी कर रही थी, और रॉल भी।

◆ ◆ ◆

रॉक एंड रोल

रंगीन टेलीविजन से पहले अमरीका और दुनिया 'ब्लैक ऐन्ड व्हाइट 'ही देखती थी। दो रंग थे— गोरे और काले। अमरीका भी इन दो फाँकों में बँटा हुआ था। काले 'निग्गर 'कहलाते थे।

संभ्रांत केनेडी परिवार ने अश्वेतों को नौकर रूप में ही देखा था। उनकी नजर में वे 'निग्गर 'थे। जब जोसेफ़ मैकार्थी निग्गरों के ख़िलाफ़ जहर उगल रहे थे, तो बॉबी केनेडी और पापा जो उनके सहयोगी थे। यहाँ तक कि जब डेमोक्रैट नेता लिंडन जॉनसन ने इस कट्टरता के ख़िलाफ़ मुहिम छेड़ी, तो सभी डेमोक्रैट ने एक मत से उनका समर्थन किया। सिवाय जॉन केनेडी के।

लेकिन, केनेडी के भाग्य में ही इस अभिशाप से मुक्ति भी लिखी थी। पहला माध्यम बना संगीत। जैसा पंत ने लिखा है— 'आह से उपजा होगा गान'।

पीढ़ी-दर-पीढ़ी अश्वेत खेतिहर-मजदूर काम करते हुए, और काम से थक कर शाम में गीत गाते थे। जैसे भारत में बिरहा-बिदेसिया गाते हैं, वे गाते-बजाते थे 'कंट्री ब्लूज़'। गोरों के भी अपने सभ्य गीत-नाद थे, लेकिन उसमें दम नहीं था। अश्वेतों के गीत बाज़ार में नहीं थे। उनकी कुछ टोलियाँ थी जो कभी-कभार शराबखाने में आकर गा-बजा लेती थी। ग़लती से कोई अश्वेतों की बस्ती से गुजरा तो उनके ये गीत सुने, जिनमें अब गज़ब की तालबद्धता आ गयी थी— R and B (रिद्म ऐन्ड ब्लूज़)।

जब गोरों तक यह संगीत पहुँचा, तो उन्होंने गीत चुराने शुरू किए। उन गीतों के 'कवर वर्सन 'जब गोरों ने गाए, तो वह लोकप्रिय हो गए। बिल हैली ने एक दिन एक गीत गाया— 'रॉक अराउंड द क्लॉक'। यह गोरे-काले संगीत का मिश्रण था। आखिर, एक नए संगीत का जन्म हुआ— रॉक ऐन्ड रॉल।

उन्हीं दिनों एक गोरे व्यापारी सैम फिलिप्स मेम्फिस आए। वह खेतिहर परिवार से थे, और अश्वेत बच्चों के साथ बचपन गुजार चुके थे। उन्होंने अश्वेतों के गीत रिकॉर्ड करने शुरू किए 'सन रिकॉर्ड्स 'के नाम से। लेकिन गोरे भला क्यों अश्वेतों के गीत सुनने लगे? हाँ! अगर कोई गोरा मिल जाए, जो कालों की तरह गाता हो?

19 साल के ट्रक ड्राइवर एल्विस प्रेस्ले मस्ती में यह नकल उतारते रहते थे। उनके गाने-नाचने का अंदाज़ बिल्कुल अश्वेतों जैसा था। और रंग गोरा। जब घुटने और ज़ुल्फें हिलाते, माइक नचाते एल्विस प्रेस्ले ने 'दैट्स ऑलराइट मामा 'गाया तो अमरीका ही क्या, पूरी दुनिया में धूम मच गयी। शम्मी कपूर जैसे लोग नकल उतारने लग गए।

वहीं, उत्तरी शहरों जैसे शिकागो में फैक्टरियाँ खुली, तो अश्वेतों को बुलाया गया। वहाँ ये मजदूरी करने के बाद गीत गाते। वहाँ जब चक बेरी ने गाया, तो वह पूरे अमरीका में हिट हो गया। अब गोरी महिलाएँ भी काले सुपरस्टारों की दीवानी हो रही थी। यह क्रांति थी।

लिटल रिची अश्वेत थे, और उनके 'टूटी फ्रूटी 'गीत पर लोग तालियाँ बजाते, जूते टैप करते, नाचते झूम-झूम कर गा रहे हैं। उनकी नकल उतारते गोरे गायक जेरी लेविस कभी पियानो पर टाँग रख कर बजा रहे हैं, कभी उल्टी तरफ से। अमरीका अब आजाद हो रहा था, और संगीत ने जैसे गोरे-काले का भेद ही मिटा दिया।

मगर कब तक?

संसद तो अब भी गोरों का संसद था। वहाँ कहा गया, "यह रॉक-रोल हमारी संस्कृति का नाश कर रहा है। युवक और महिलाएँ बिगड़ते जा रहे हैं। सब विद्रोही बन रहे हैं। यह साम्यवाद जैसा ही खतरा है।"

मशहूर रेडियो जॉकी एलन फ्रीड पर मुकदमा हुआ, कुछ महीनों बाद वह मर गए। लिटल रिची ने घोषणा कर दी कि अब वह संगीत छोड़ कर भगवान की शरण में जाना चाहते हैं। बडी हॉली हवाई दुर्घटना में मारे गए। जेरी लेविस ने जब एक तेरह साल की किशोरी से विवाह किया, तो उनके गाने पर पाबंदी लगा दी गयी। एल्विस प्रेस्ले अपना करिश्मा खो चुके थे और गाना छोड़ कर हॉलीवुड के चलताऊ अभिनेता बन गए थे।

बस एक चक बेरी ने रॉक-ऐन्ड-रॉल की आशा बचा कर रखी। उनके तेवर विद्रोही थे, लेकिन लोकप्रिय थे। जो भी हो, रॉक-ऐन्ड-रॉल के दस सालों ने अमरीका को बदल कर जरूर रख दिया।

केनेडी ने कहा, "साम्यवाद से लड़ते-लड़ते हम अपने देश की समस्याओं को ही भूल बैठे"

कुछ वर्षों के लिए 'रॉक ऐन्ड रॉल 'अमरीका से गायब हुआ और वापस फीकी मुस्कुराहट के साथ खड़े-खड़े गिटार बजाते 'सभ्य 'गीत गाए जाने लगे।

बहरहाल सोवियत अब बर्लिन में एक दीवाल बनाने की सोच रही थे, कि कोई पुरबिया साम्यवाद से पूँजीवाद को ओर न भागने पाए। उन्हीं दिनों दो छोटे-छोटे देशों में एक चिनगारी भड़क रह रही थी। एक देश अमरीका का पड़ोसी था— क्यूबा। और दूसरा मीलों दूर था— वियतनाम।

अमरीका के सबसे युवा-राष्ट्रपति को विरासत में सबसे 'हैप्पेनिंग' अमरीका मिलने वाला था।

◆ ◆ ◆

जैक और जैकी

अमरीका में राष्ट्रपति बनने के लिए शादी जरूरी है। यह अलिखित नियम है। आज तक अमरीका में एक ही कुंवारे (समलैंगिक?) राष्ट्रपति हुए— जेम्स बुकैनन।

यह कितनी अजीब बात लगती है? अब तक आपको यह अंदाज़ा हो गया होगा कि यह प्रगतिवादी शक्ल का देश दरअसल दुनिया के सबसे रुढ़िवादी देशों में है। यहाँ राष्ट्रपति के विवाहेतर संबंधों पर महाभियोग भी हो जाता है। 'फर्स्ट लेडी 'तो होनी ही चाहिए। अगर पत्नी की मृत्यु हो गयी हो, या तलाक हो गया हो, तो लोग बेटी को सामने ले आते हैं। उदाहरण तो आपके सामने ही है।

अमरीका के 'मोस्ट इलिचिबल बैचलर 'को भी आखिर राष्ट्रपति बनने के लिए शादी करनी ही पड़ी। प्रेम भी था, लेकिन केनेडी का फोकस स्पष्ट था। उनका जीवन ही इस लक्ष्य के निहित था कि केनेडी परिवार का बड़ा बेटा वाइट हाउस जाएगा। वरना एक खुली कार में घूमते, ग्लैमरस महिलाओं के साथ रात बिताते, रईस युवक को शादी क्यों करनी पड़ गयी?

जॉन का लोकप्रिय नाम 'जैक 'था। अब मैं यही नाम इस्तेमाल करूँगा। जैक को जैकी मिल गयी। जैकी (जैक्वेलिन) केनेडी एक निहायत ही

खूबसूरत रईस 'पेज 3 'महिला थी। एक आदर्श फर्स्ट-लेडी। जानकार लिखते हैं कि उनकी ख़ासियत यह थी कि उनको जैक के किसी और युवती के साथ कभी रात बिता लेने में कोई परेशानी नहीं थी। वह अपनी फिजूलखर्ची और अमरीका की सबसे महत्वपूर्ण महिला बनने में खुश थी। हालांकि यह आकलन ज्यादती भी हो सकती है। जैक ने जैकी का साथ कभी नहीं छोड़ा, और दोनों हर सार्वजनिक मौके पर साथ ही नजर आते।

जैक की समस्या दूसरी थी। जैक की बचपन से चल रही बीमारियाँ। उनकी रीढ़ की हड्डियाँ अब बुरी तरह टूट गयी थी, और वह दर्द से चल भी नहीं पाते। भला राष्ट्रपति कैसे बनते? उन्होंने जब ऑपरेशन के लिए कहा, तो उस जमाने में तकनीक उतनी विकसित नहीं थी। कई लोग जीवन भर लकवाग्रस्त रहते। पापा जो ने मना किया,

"ऑपरेशन मत कराओ! रूज़वेल्ट भी तो व्हीलचेयर पर राष्ट्रपति बने। तुम भी बनोगे।"

फिर भी केनेडी ने ऑपरेशन कराया, और कोमा में चले गए। कई दिनों तक होश में ही नहीं आए। आखिर एक पादरी बुला कर अंतिम क्रिया-कर्म की तैयारी की गयी। लेकिन, डॉक्टरों ने कहा कि कुछ दिन और इंतजार कर लें। तीन महीने बाद जैक व्हीलचेयर पर निकले। जैक ने डॉक्टरों से कहा कि मुझे किसी भी तरह खड़ा कीजिए। आखिर फिर से ऑपरेशन हुआ, और जैक खड़े होकर महीनों बाद संसद पहुँचे।

उनके विपक्षियों को लगा कि केनेडी तो रेस से गया। लेकिन जैक ने दो ऐसी चीजें की, जिसने बाज़ी पलट दी। पहले तो वह रेडियो पर आए, और खुद को एक फौजी और फाइटर रूप में दिखाया कि वह मौत से भी बाहर आना जानते हैं। दूसरा काम यह किया कि अस्पताल में लेटे-लेटे ही एक किताब लिख दी- 'प्रोफाइल्स इन करेज'। इसमें अमरीका के आठ साहसिक सीनेटरों की कहानी थी। उन्होंने साहसिक सीनेटरों की फ़ेहरिस्त में अपना नाम नहीं लिखा, लेकिन अपने विचार ज़रूर लिखे। किताब बेस्ट-सेलर हुई और पुलिट्ज़र पुरस्कार भी जीती। उन पर इल्जाम लगे कि भला बीमारी में किताब कैसे लिख दी? ज़रूर किसी से लिखवाई होगी।

इल्जाम ग़लत नहीं थे। विचार केनेडी के थे, लिखे और लिखवाए उनकी पत्नी जैकी ने थे! अगर जैक को राष्ट्रपति बनना था, तो जैकी को भी 'फर्स्ट-लेडी 'बनना ही था।

अगला खेल पापा जो ने शुरू किया। उनका इरादा था कि पहले जैक उपराष्ट्रपति बन जाए, और फिर अगले चुनाव में राष्ट्रपति। डेमोक्रैटिक पार्टी में सबसे कद्दावर और अनुभवी नेता लिंडन जॉनसन को पापा जो ने कहा,

"आप जैक को उपराष्ट्रपति प्रत्याशी बना दें, तो आपका चुनावी खर्च मैं सँभाल लूँगा"

लिंडन जॉनसन ने यह कह कर मना कर दिया कि मैं राष्ट्रपति पद के लिए खड़े होने की सोच नहीं रहा। बॉबी केनेडी भड़क गए कि ऐसे कैसे पापा जो का ऑफर ठुकरा दिया।

बॉबी का व्यक्तित्व आगे धीरे-धीरे स्पष्ट होगा। माफिया परिवारों में एक भाई सार्वजनिक चेहरा होता है, जो बुरे काम खुद नहीं करता। और एक भाई सभी तिकड़म लगा कर, लोगों को ठिकाने लगाता रहता है कि भाई की गद्दी बनी रहे। एक रिपोर्ट में बॉबी की तुलना संजय गांधी से भी की गयी है।

सच यह है जैक केनेडी की जीवनी बिना उनकी पत्नी जैकी, पापा जो और भाई बॉबी के बिना पूरी नहीं लिखी जा सकती। इनमें से एक भी स्तंभ कमजोर होता तो केनेडी राष्ट्रपति नहीं बन पाते।

जैकी लगभग सभी यूरोपीय भाषाएँ बोल लेती थीं। जब केनेडी राष्ट्रपति बनने के बाद पेरिस गए, तो उन्होंने कार से उतर कर जनता के बीच कहा, "ये हैं जैक्वेलीन केनेडी, अमरीका की प्रथम महिला। और मैं? इनका ड्राइवर।"

◆ ◆ ◆

फ़िदेल कास्त्रो

"दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति न साम्यवाद है, न पूँजीवाद। न हाइड्रोजन बम, न मिसाइल। यह है मानव की स्वतंत्रता। अगर हम किसी भी देश को जीतना चाहते हैं, तो उन पर राज मत करिए। उन्हें उनकी स्वतंत्रता दीजिए।"

- जॉन एफ. केनेडी, सीनेट भाषण, जुलाई 1957

क्यूबा। उस वक्त का लैटिन लास वेगास! वहाँ के सुंदर समुद्र-तटों पर अमरीकी छुट्टियाँ मनाते, शराब और सिगार पीते, कसिनो में जुआ खेलते, और वहाँ की लड़कियों के साथ ऐश करते। क्यूबा की आधी से अधिक संपत्ति पर अमरीकी व्यवसायियों का कब्जा था। लगभग सभी खदानों और तेल कंपनियों पर अमरीका का राज था। अमरीकी इतालवी गैंगस्टर लांस्की और लुसियानो वहाँ के माफ़िया थे, और तानाशाह बटिस्टा उनकी जेब में थे। जनता भगवान-भरोसे थी। केनेडी ने एक भाषण में कहा कि अपने सात साल के शासन में बटिस्टा ने बीस हज़ार नागरिकों को मौत के घाट उतारा।

1959 की पहली जनवरी को 33 साल के युवा वकील फिदेल कास्त्रो टैंक लेकर अपने गुरिल्ला सेना के साथ राजधानी हवाना आ गये। कोई गतिरोध नहीं था। बटिस्टा अपने मंत्रीमंडल सहित पाँच सौ मिलियन डॉलर लेकर हफ्ता भर पहले ही फरार हो गए थे। जनता पहले से सड़क पर हंगामा कर रही थी, कैस्त्रो की फौज बस हाथ हिलाते टैंक चलाते आ गयी; जबकि वे साधारण गाड़ी पर भी आते तो कोई नहीं रोकता। इतिहासकार लिखते हैं कि बटिस्टा इस गुरिल्ला युद्ध का डर दिखा कर अमरीका से बस पैसे ऐंठ रहे थे। कास्त्रो के गुरिल्लों के ख़िलाफ़ ढंग से युद्ध लड़ ही नहीं रहे थे।

कास्त्रो ने आते ही सभी जमीन्दारों से जमीन छीन कर उसका राष्ट्रीयकरण कर दिया। शिक्षा और स्वास्थ्य मुफ्त कर दी। कुछ दिन कसिनो और जुआ बंद करवा दिए गए। माफ़िया गैंगस्टरों को क्यूबा छोड़ना पड़ा (जबकि वे अपने धन से गुरिल्लाओं की मदद भी कर रहे थे)। खैर, कास्त्रो ने भी कुछ दिन यह तमाशा कर, कसिनो खुलवा दिए। अमरीकी तेल कंपनियाँ भी क्यूबा में मौजूद ही थी, और संबंध पूरी तरह टूटा नहीं था। चे गुवैरा और कास्त्रो ने पुरानी सरकार के कई समर्थकों की गोली मार कर क्रूर मृत्यु-दंड दिया।

कास्त्रो राजनैतिक व्यक्ति थे, और खुद को साम्यवादी कहते भी नहीं थे। उनके सहयोगी और चिकित्सा की पढ़ाई कर चुके अर्जेंटीनिया मूल के चे गुवैरा की बात अलग थी। वह 'पोस्टर-बॉय 'क्रांतिकारी मिजाज के थे, और राजनैतिक पैंतरेबाज़ी में ख़ास रुचि नहीं थी।

उसी साल अप्रिल में कास्त्रो अमरीका गए, लेकिन आइजनहावर गोल्फ खेलने निकल गए, मिले ही नहीं। पत्रकारों को कास्त्रो ने कहा, "कोई बात नहीं। हम अमरीका के भरोसे नहीं बैठे। हम अपना देश खुद खड़ा करेंगे। "

अगले साल कास्त्रो यू.एन. के सम्मेलन में गए, और साढ़े चार घंटा लंबा भाषण दिया, जो आज तक वहाँ के सबसे लंबे भाषण का विश्व रिकॉर्ड है। वहाँ फिर से वह अमरीकी राष्ट्रपति आइजनहावर से मिलने गए, जिन्होंने बात ही नहीं की।

वहीं वह रूसी राष्ट्रपति निकिता ख़ुश्चेव से पहली बार मिले। उन्होंने बाँहों में भर लिया और कहा, “आपको जो भी मदद चाहिए, हम देंगे। देश खड़ा करिए।”

सीधी सी बात थी कि अमरीका के एक पड़ोसी देश का नेता खुद मिलने आया था। समाजवादी मिज़ाज का थोड़ा-बहुत था ही, कम्युनिस्ट बनाना आसान था। कुछ अटकलें यह भी कहती है कि सोवियत गुरिल्ला युद्ध में भी मदद करता रहा था।

लेकिन, इतनी दूर सोवियत से कोई कितनी मदद करेगा? उल्टे आइजनहावर ने तमाम पाबंदियाँ लगा दी। कास्त्रो ने बदले में अमरीकी तेल कंपनियों और वित्त-संस्थानों का भी राष्ट्रीयकरण कर लिया। इसमें कोई दो राय नहीं कि अमरीका की पाबंदी ने क्यूबा को आर्थिक रूप से कमजोर कर दिया।

अमरीका ने कुछ और गुप्त षडयंत्र भी किए। दक्षिण फ़्लोरिडा में क्यूबा से पलायित समूह को गुरिल्ला प्रशिक्षण दिया जाने लगा। सीआइए की मदद से उन्होंने रातों-रात क्यूबा के खेत जलवा दिए। एक तेल की कंपनी में आग लग गयी। ग्वाटेमाला में क्यूबा से लड़ने के लिए ट्रेनिंग होने लगी।

जब यह सब हो रहा था, केनेडी राष्ट्रपति चुनाव लड़ रहे थे। और अपने चुनाव-प्रचार में कह रहे थे,

“साम्राज्यवाद का जमाना गया। अल्जीरिया हो, वियतनाम हो, क्यूबा हो, या जर्मनी। हमारी भूमिका बस इतनी हो कि वहाँ के लोग अपनी सरकार चुनें, हमसे अच्छे संबंध हों। हमारी सहायता इसी निमित्त होगी। इसलिए नहीं कि हम उन पर आक्रमण करें, उन पर ज़बरदस्ती राज करे।”

यह गुरु-ज्ञान केनेडी को कब और कहाँ मिला था, इसकी चर्चा पहले की है। केनेडी को भी नहीं मालूम था कि उनके आते ही क्यूबा पर गुप्त-आक्रमण की रणनीति बन रही होगी। उन पर दबाव डाल कर उनसे वह सब कराया जाएगा, जो वह नहीं चाहते।

शीत-युद्ध ने अमरीका और सोवियत में ऐसे-ऐसे ख़ुफ़िया संस्थान जन्म दिए, जिनमें असीमित ताकत थी। इतनी कि न मानने पर अपने राष्ट्रपति को भी नहीं बख्शें।

यूँ कहिए कि केनेडी के सपनों का वाइट हाउस बाहर से जितना सफेद था, अंदर से उतना ही काला।

◆ ◆ ◆

प्रेसिडेंट केनेडी

एक राजनैतिक परिवार एक पूरी कंपनी है। जितना बड़ा परिवार, उतनी बड़ी कंपनी। जैक केनेडी के मैनेजर उनके भाई बॉबी थे, फाइनांसर पापा जो थे, चुनावी गणित संभाल रहे थे बहनोई स्टीव, बहनें कैम्पेन कर रही थी और ग्लैमर दे रही थी पत्नी जैकी।

(जॉन एफ. केनेडी के साक्षात्कार अंश)

“सीनेटर! आपकी तस्वीरें हर पत्रिका के फ्रंट-कवर पर क्यों छप रही है? आप कोई हॉलीवुड सेलिब्रिटी तो नहीं हैं?”

“मेरी अकेले कहाँ छप रही है? मेरी पत्नी खूबसूरत है, तो उसके साथ मेरी भी छप जा रही है।”

“लोग कह रहे हैं, अगर आप राष्ट्रपति के लिए खड़े हुए तो आपके पिता सभी वोट खरीद कर छप्पर-फाड़ जीत दिला देंगे?”

(हँस कर) “नहीं। छप्पर-फाड़ नहीं दिलाएँगे। मेरे पिता पक्के बनिया (व्यवसायी) हैं। अगर वह वोट खरीदेंगे तो उतने ही, जितने में मैं बस जीत जाऊँ। न एक कम, न एक ज्यादा।”

“आपके पिता तो हिटलर के समर्थक रहे हैं। क्या आप भी?”

“मैं तो हिटलर के ख़िलाफ़ नेवी में लड़ चुका हूँ। मेरे भाई हिटलर की सेना के हाथों हवाई-हमले में मारे गए। आप न जाने किसकी बात कर रहे हैं।”

“तो आप नाज़ी नहीं हैं, उदारवादी हैं?”

“बिल्कुल”

“आपको पता है अमरीका में कोई कैथोलिक राष्ट्रपति नहीं हुआ?”

“मैं एक कैथोलिक के रूप में चुनाव नहीं लड़ूँगा, एक डेमोक्रैट नेता के रूप में लड़ूँगा। हाँ! अगर मैं जीत गया तो अमेरिका को एक राष्ट्रपति मिल जाएगा, जो कैथोलिक भी है।”

“हमारे प्रोटेस्टेंट चर्च के पादरी कह रहे हैं कि आपके आते ही पोप का राज कायम हो जाएगा। आप पोप से आदेश लेंगे?”

“अगर वाइट-हाउस से इटली तक ऐसी कोई सुरंग बनी, तो उसकी देख-भाल का जिम्मा मैं उनको ही सौंपूँगा। वह चिंता न करें।”

“लेकिन सीनेटर, यह कैथोलिक देश नहीं। इतना तो आप जानते ही हैं?”

“हम इन विवादों से सौ साल आगे आ चुके हैं। अमेरिका में किसी चर्च की सत्ता नहीं, लोकतंत्र की सत्ता है।”

“पूर्व राष्ट्रपति ट्रूमैन कह रहे हैं कि पोप का डर नहीं, आपके पॉप (पिता) का डर है।”

“मुझे नहीं मालूम कि वह क्यों डर रहे हैं। मुझे तो न पोप का डर है, न पॉप का।”

1956 में केनेडी ने डेमोक्रेटिक पार्टी में उपराष्ट्रपति प्रत्याशी के लिए नामांकन भरा था, लेकिन हार गए थे। केनेडी को उपराष्ट्रपति बनने की इच्छा भी नहीं थी।

1960 के चुनाव में राष्ट्रपति बनने के लिए जब केनेडी मैदान में उतरे तो हर तरह के सवाल थे। सबसे बड़ा तो उनका धर्म ही था। कैथोलिक राष्ट्रपति वाकई अमरीका में एक असंभव कल्पना थी।

केनेडी ने वर्जीनिया में प्रोटेस्टेंट भीड़ के सामने कहा,

“मैं जन्म से आइरिश कैथोलिक हूँ। लेकिन, क्या एक कैथोलिक अमेरिका का राष्ट्रपति नहीं बन सकता? फिर मुझे संसद में क्यों घुसने दिया गया? अमरीका की फौज में मुझे क्यों शामिल किया गया? मेरे भाई ने क्यों देश के लिए जान दी? मुझे किस तरह साबित करना होगा कि मैं एक अमेरिकन हूँ? आप मेरे धर्म नहीं, मेरे कर्म को देखिए।”

जहाँ एक तरफ जैक भाव-रंजित भाषण दे रहे थे, भाई बॉबी केनेडी पुलिस वालों, वोटर लॉबी और विपक्षियों के साथ तिकड़मबाजी कर रहे थे। सीधे कहा जाए तो वोट खरीद रहे थे। बाकी प्रत्याशियों के पास इतना धन ही नहीं था कि कुछ कर सकें। सबसे भ्रष्ट कड़ी थे शहरों के मेयर, जिनको माफ़िया गैंगस्टर पैसे खिलाते ही रहते थे।

पार्टी के सबसे कद्दावर और अनुभवी नेता लिंडन जॉनसन ने जैक के ख़िलाफ़ मुहिम छेड़ दी। उन्होंने कहा, “अब क्या राष्ट्रपति चुनाव वोट खरीद कर लड़े जाएँगे? एक अरबपति बाप का नौसिखिया बच्चा पैसे के दम पर राष्ट्रपति बनेगा?”

लेकिन, बॉबी के साम-दाम-दंड-भेद और अपने करिश्मा के बदौलत प्रत्याशी तो केनेडी ही चुने गए। लिंडन जॉनसन पीछे रह गए।

अब जैक को उपराष्ट्रपति प्रत्याशी चुनना था। बॉबी केनेडी लिंडन जॉनसन से मिलने गए, “भले ही आप जैक को पसंद नहीं करते, आप पार्टी के सबसे अनुभवी नेता हैं। उन्होंने संदेश भेजा है कि आपके बिना वह चुनाव नहीं जीत सकते।”

जॉनसन की आँखें भर आयी और कहा, “क्या सचमुच जैक ने ऐसा कहा है? वह मुझे अपने साथ रखना चाहता है? अगर ऐसा है, तो अपने लंबे अनुभव से बस इतना कहूँगा कि अमरीका का अगला राष्ट्रपति जॉन

फिट्जेराल्ड केनेडी ही बनेगा। मैं दिलाऊँगा दक्षिण के सारे वोट, उत्तर तुम संभालो।"

बुजुर्ग जॉनसन को वाइट हाउस का मोह तो था, लेकिन अब उपराष्ट्रपति ही सही। हालांकि, भविष्य के गर्भ में केनेडी की हत्या और लिंडन जॉनसन का राष्ट्रपति बनना छुपा था। साजिश चाहे किसी की हो।

◆ ◆ ◆

रिचर्ड निक्सन (रिपब्लिकन) बनाम जॉन एफ. केनेडी (डेमोक्रैट). अमरीकी राष्ट्रपति चुनाव. 1960

अमरीकी इतिहास में इस चुनाव को 'वाटरशेड 'चुनाव कहा गया है। इस चुनाव से पहले ही यह नियम (संशोधन 22) बना था कि राष्ट्रपति तीसरी बार चुनाव नहीं लड़ सकते। पहले रूज़वेल्ट चार बार लगातार चुनाव जीत कर अपनी मृत्यु तक राष्ट्रपति रहे थे।

रिचर्ड निक्सन के पोस्टर पर लिखा था— 'चुनिए अनुभवी नेता'। केनेडी के पोस्टर पर लिखा था— 'चुनिए नया नेता'

जबकि केनेडी और निक्सन की उम्र में महज चार साल का अंतर था। दोनों साथ ही संसद आए थे। निक्सन उपराष्ट्रपति ज़रूर बन गए थे, लेकिन अमरीकी इतिहास में आज तक सिर्फ एक पदस्थ उपराष्ट्रपति ने राष्ट्रपति चुनाव जीता था। वह भी सवा सौ साल पहले। (बाद में भी जॉर्ज बुश सीनीयर के अलावा किसी ने नहीं जीता)

यह अनुभव की तो नहीं, धर्म की लड़ाई ज़रूर थी। कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट राष्ट्रपति के बीच। लेकिन, केनेडी बारम्बार अपना पक्ष रख चुके थे कि वह कैथोलिक के तौर पर चुनाव नहीं लड़ रहे। निक्सन फिर भी उनके कैथोलिक धर्म को मुद्दा बना रहे थे। अब शहरी अमरीकी इस मुद्दे से पक गए थे।

निक्सन के हाथ में एफ.बी.आई. थी। उन्होंने बेल्ट के नीचे हमला शुरू किया, और केनेडी के सेक्स-रिकॉर्ड निकलवाए। उनके सभी संबंधों के चिट्ठे खुले, जिसमें एक फौजी की पत्नी से लेकर एयर-होस्टेस तक से संबंध निकलते गए। लेकिन, यह वार भी उल्टा पड़ गया। इनमें अधिकतर विवाह-पूर्व संबंध थे, और लोगों ने कहा कि एफ.बी.आई. भला क्या हमारे बेडरूम में झाँकने के लिए बनी है?

केनेडी ने निक्सन को टी.वी. पर सीधी चुनौती दी। निक्सन अच्छे वक्ता थे, और कई बार देश-विदेश में टी.वी. पर आ चुके थे। उनको लगा कि केनेडी को वहीं निपटा देंगे। लेकिन, जहाँ वह केनेडी पर कीचड़ उछालते रहे, केनेडी देश के मुद्दों पर अड़े रहे।

केनेडी ने कहा, "आपकी सरकार में बेरोजगारी बहुत बढ़ गयी है"

निक्सन ने जवाब दिया, "हमारा आकलन है कि जब तक 45 लाख से अधिक बेरोजगार नहीं, तब तक यह कोई बड़ी समस्या नहीं।"

"यह समस्या है उपराष्ट्रपति महोदय! 44,99,999 लोगों के लिए यह समस्या है।"

केनेडी इस टी.वी. डिबेट में निक्सन को मात कर चुके थे। उसके बाद के औपचारिक डिबेट में भी केनेडी अमरीका के शिक्षा, स्वास्थ्य, बेरोजगारी और विकास के मुद्दों पर अड़े रहे।

वहीं दूसरी ओर पापा जो और बॉबी अपना खेल खेल रहे थे। इस खेल में शहरों के मेयर से लेकर माफ़िया तक शामिल थे। बॉबी केनेडी उस वक्त 35 वर्ष के थे, लेकिन एक कड़क मैनेजर थे। वह पार्टी के कार्यकर्ताओं को कहते हैं, "मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कैसे और कहाँ से वोट ला रहे हैं। यह चुनाव हमें जीतना ही है।"

जैक का रवैया भिन्न था। वह अपने कट्टर आलोचकों के दरवाजे पर जा रहे थे। पूर्व राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन के पास वह समर्थन माँगने गए।

ट्रूमैन ने पत्रकारों से कहा, "मुझे केनेडी परिवार और उस पापा जो से नफ़रत है। लेकिन, उससे भी ज्यादा नफ़रत है उस निक्सन से, जिसने मुझ

पर कम्युनिस्ट होने का झूठा इल्जाम लगाया। अगर विकल्प ही ये दोनों हैं, तो मैं केनेडी को चुनता हूँ।"

आखिर पचास राज्यों की अमरीकी जनता वोट डालने गयी, और दशकों में सबसे अधिक मतदान हुआ। पहले राउंड के राज्यों में जब केनेडी की जीत की खबर आने लगी तो रात के तीन बजे केनेडी सो गए। सुबह नौ बजे उठे तो पता लगा, वह बाकी राज्यों में भी जीत रहे है। लेकिन, आखिर मात्र 0.2 % पॉपुलर मत अंतर से केनेडी की जीत हुई। इलेक्टोरल मत में भी मामूली फर्क रहा।

निक्सन ने दो राज्यों में चुनावी धाँधली की बात कही, जिनमें एक शिकागो के माफ़िया गैंगस्टर का इलाका था। धाँधली शायद हुई भी थी, लेकिन उन विवादित मतों के बिना भी केनेडी जीत रहे थे। आखिर रिचर्ड निक्सन ने अपनी हार मान ली, और जॉन एफ. केनेडी अमरीका के 35वें राष्ट्रपति चुन लिए गए।

इस जीत में एक घटना का जिक्र जरूरी है, जो केनेडी के जीवन की एक मजबूत कड़ी बनेगी।

एक अश्वेत को जॉर्जिया की पुलिस ने उठा कर जेल में बंद कर दिया था। यह उस वक्त उन इलाकों में मामूली घटना थी और पुलिस कहीं कोने में ले जाकर गोली भी मार देती थी। लेकिन, इस व्यक्ति की पत्नी गर्भवती थी, और अपराध भी साधारण था। एक अपराध किसी 'वाइट ऑनली' रेस्तराँ के सामने अश्वेत छात्रों के साथ विरोध था, और दूसरा ट्रैफिक उल्लंघन। राष्ट्रपति चुनाव कैम्पेन चल रहे थे, तो उसकी पत्नी ने दोनों प्रत्याशियों को चिट्ठी लिखी। निक्सन ने चिट्ठी किनारे कर दी कि गोरों से कौन पंगा ले? लेकिन केनेडी की अपनी पत्नी भी गर्भवती थी, तो वह चिट्ठी पढ़ कर इमोशनल हो गए।

उन्होंने बॉबी केनेडी से पैरवी लगवाई कि चुपचाप छुड़वा लो। जॉर्जिया के गवर्नर ने कहा कि यह तभी मुमकिन है जब सीनेटर केनेडी खुद फोन करें। उनके सहयोगी कहते रहे कि इस गोरे-काले के पचड़े में अभी मत पड़िए, चुनाव हार जाएँगे। लेकिन, केनेडी ने फ़ोन कर दिया, और उन

अश्वेत को छोड़ दिया गया। संभव है कुछ गोरों के वोट घटे हों, लेकिन इस घटना ने अश्वेतों का एकमुश्त समर्थन केनेडी की तरफ ला दिया।

उस दिन जेल से छूटे यह अश्वेत व्यक्ति आगे जाकर अमरीका में क्रांति के अग्रदूत बने। उनका नाम था— मार्टिन लूथर किंग।

◆ ◆ ◆

हूवर

राष्ट्रपति तो आते-जाते रहते हैं लेकिन अमरीका में लगभग पचास वर्षों तक एकछत्र राज एक ही व्यक्ति ने किया। जो चाहा, जैसे चाहा, वैसे किया। अमरीका ने उनको 'टॉप कॉप 'कहा, भारत में होते तो 'वर्दी वाला गुंडा 'भी कहे जा सकते थे। उन्होंने खुद कहा कि माफिया से लड़ने के लिए हमें माफिया बनना पड़ेगा, जो हमारे रास्ते में आए उसे उड़ा दो। वह थे एफ.बी.आई. के पहले निदेशक- जॉन एड्गर हूवर।

केनेडी जब वाइट हाउस में आए और हूवर से मुलाक़ात हुई तो उन्हें यूँ लगा कि शेर के माँद में आ गए हैं। यह अंदेशा ग़लत नहीं था।

हूवर ने आठ राष्ट्रपति देखे, दो विश्व-युद्ध देखे; और न जाने क्या-क्या देखा, यह तभी थोड़ा-बहुत पता लगा जब उनकी मृत्यु के बाद उनके हज़ारों गुप्त फाइल सामने आए।

हूवर की पैदाइश अमरीका के शक्ति-केंद्र 'कैपिटल हिल '(संसद का इलाका) में हुई थी। उनके दादा ने मजदूर रूप में अपने हाथों से वाइट हाउस और सीनेट की ईंटें जोड़ी थी। वह जीवन भर कुँवारे रहे, वहीं वाशिंगटन के उसी इलाके में जीए और मरे। एक ही समय उठना, एक

ही समय सोना, यहाँ तक कि एक ही भोजन रोज करना। उनकी जो एक सेक्रेट्री 1924 में बनी, वही 1972 में उनके मरने तक रही।

हूवर 'कॉप 'नहीं थे, वह तो कानून विभाग में एक साधारण क्लर्क थे। प्रथम विश्व-युद्ध के समय जब रूस में साम्यवाद उभर रहा था, तो वह भी साम्यवादी मीटिंग में जाते, मार्क्स और लेनिन को पढ़ते; लेकिन, यह सब एक जासूसी का हिस्सा थी। वह अपने स्तर पर कम्युनिस्टों की सूची बना रहे थे। वह उनसे नफ़रत करते थे; लेकिन, उनके पास कुछ करने की ताकत नहीं थी।

तभी अमरीका के आठ शहरों में लगभग एक साथ बम फटे। उनमें से एक बम एटॉर्नी जनरल पामर के घर के बाहर फटा। भविष्य के राष्ट्रपति रूज़वेल्ट दंपति भी उस वक्त उसी सड़क पर थे, और दौड़े आए। इसके अलावा 36 सीनेटरों और अफसरों के घर डाक से बम भेजे गए; उनमें एक सीनेटर की नौकरानी के हाथ में फट गया।

अमरीका के उपराष्ट्रपति से भी अधिक ताकतवर एटॉर्नी जनरल होते हैं। पामर ने अपने लोगों को कहा कि यह कम्युनिस्टों की चाल है। सबको पकड़ो। हूवर को मौका मिल गया, और एक साम्यवादी-विरोधी लठैत दल के साथ सभी कम्युनिस्टों को पकड़ने निकले। मजदूर नेता, इतालवी और मेक्सिकन लोग, या कोई भी जो अमरीकी न दिखता हो। सबको पकड़ कर जेल में बंद किया गया।

जहाँ एक तरफ संसद में इस 'रेड 'की निंदा हुई, हूवर एक साधारण क्लर्क से पदोन्नत होकर मात्र तीस वर्ष की उम्र में निदेशक बन गए।

हूवर ने निदेशक बनते ही युवा अफसर ढूँढने शुरू किए, जो शिकार के शौकीन हों। वह अल कपोन जैसे माफिया और बैंक डकैत डिलिंजर का वक्त था। डिलिंजर हॉलीवुड का चहेता गैंगस्टर था, जिसकी कारस्तानियों पर फ़िल्में बनती थी। बच्चे डिलिंजर के नाम से खेल खेलते थे।

एफ.बी.आई. के महत्वाकांक्षी 'इन्काउंटर मैन 'परविस पहले भी कई गैंगस्टर निपटा चुके थे। आखिर कई चूहा-बिल्ली खेल के बाद डिलिंजर घेर लिया गया और परविस ने उसे गोली मार दी।

हूवर के रास्ते का पहला काँटा भी आ गया। परविस अपने इंकाउंटर से लोकप्रिय होते जा रहे थे। हूवर को सीनेट में पूछा गया, "आप अमेरिका के टॉप कॉप कहे जाते हैं। आपने किसी एक अपराधी को भी पकड़ा है? सारे काम तो परविस और उसकी टीम कर रही है।"

परविस को पहले फील्ड से ऑफिस का काम थमाया, तो उन्होंने नौकरी छोड़ कर अपनी जासूसी एजेंसी बना ली। लेकिन, हूवर ने उनका वह करियर भी तबाह कर दिया। वर्षों बाद परविस के कमरे में उनकी लाश मिली। उनके सर पर गोली लगी थी, और वही बंदूक नीचे पड़ी थी जिससे उन्होंने डिलिंजर को गोली मारी थी। इसे आत्महत्या का केस कह कर बंद कर दिया गया।

परविस का काँटा तो बाद में हटा, हूवर को अपने नाम कुछ दर्ज कराना ही था। उसी समय एक धनाढ्य तेल व्यवसायी की बेटियों का अपहरण हुआ। यह एक अपराधी दंपति 'मशीनगन 'केली ने किया था। उस पर भी फ़िल्में बन रही थी। आखिर हूवर की टीम ने मेम्फिस में उसे गिरफ्तार किया। हूवर ने इस घटना को फ़िल्मी बना कर मीडिया में पेश किया— "हमारे लोगों ने जब केली को घेरा, वह विनती करने लगा— हमें बख़्श दो G-Men"। और फिर हॉलीवुड में 'जी-मेन '(गन मेन) की फ़िल्में बनने लगी कि अगर अपराध किया तो 'जी-मेन 'पकड़ लेंगे।

धीरे-धीरे अपने तिकड़मों से हूवर ने न सिर्फ अपराध बल्कि राजनीति को भी अपने काबू में कर लिया। सीनेटरों के सेक्स-टेप से लेकर भ्रष्टाचार तक उनकी फाइलों में बंद था। वह इतने ताकतवर हुए कि लोग कहने लगे— हूवर भगवान हैं! क्या रूज़वेल्ट, क्या केनेडी, क्या निक्सन, किसी में हूवर को हिलाने की ताकत नहीं थी। कोशिश करते तो उड़ जाते (या उड़ गए?)।

◆ ◆ ◆

बॉबी

"आप यह न पूछिए कि देश आपके लिए क्या कर सकता है, आप स्वयं से यह पूछिए कि आप देश के लिए क्या कर सकते हैं।"

- जॉन एफ. केनेडी, राष्ट्रपति भाषण, 1960

भारत या इंग्लैंड में प्रधानमंत्री अपना मंत्रिमंडल अपने पार्टी के लोगों से ही चुनते हैं। अमेरिका में प्रधानमंत्री होते ही नहीं। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और पंद्रह मंत्रियों (सेक्रेटरी) का मंडल होता है। राष्ट्रपति इनका चुनाव दोनों पार्टियों से उपयुक्त लोग चुन कर करते हैं। मसलन, केनेडी ने रक्षा और वित्त मंत्रालय जैसे महत्वपूर्ण विभाग अपने विपक्षी रिपब्लिकन पार्टी के सदस्यों को दिये। यह भी मुमकिन है कि ये मंत्री संसद के बाहर से चुने जाएँ। रक्षा सचिव (मंत्री) सांसद नहीं थे, वह तो फोर्ड मोटर कंपनी के अध्यक्ष थे और विपक्षी रिपब्लिकन पार्टी से थे। फिर भी केनेडी ने चुना। चुनाव के समय चाहे जितने भी कीचड़ उछाले जाएँ, चुनाव के बाद सब मिल कर ही देश चलाते हैं।

दूसरी बात यह कि राष्ट्रपति संसद के सदस्य नहीं होते, और संसद में नहीं बैठते। वह किसी आमंत्रण से ज़रूर आ सकते हैं, अन्यथा उनकी सदन में दख़लंदाज़ी नहीं। विधेयक पास होकर उनके हस्ताक्षर के लिए आ

जाएँगे। यह भारतीय राष्ट्रपति के समकक्ष ही है, लेकिन अमरीकी राष्ट्रपति कहीं अधिक ताकतवर हैं और उनके पास कार्यपालिका (एक्जेक्यूटिव) शक्ति है। फौज उनके हाथ में है। उनकी कैबिनेट उनकी सहयोगी है। संस्थाओं की नियुक्तियाँ, वित्त बजट, विदेश नीति, आंतरिक सुरक्षा, और एकतरफा अहम फैसले राष्ट्रपति के कंधे पर है। वह सी.ई.ओ. हैं। दुनिया के सामने अमरीका का चेहरा वही हैं।

कैबिनेट तो बन गयी लेकिन भाई बॉबी केनेडी का क्या?

राष्ट्रपति केनेडी अपने भाई पर काफी समय से आश्रित थे। बॉबी की उम्र मात्र 35 वर्ष थी, लेकिन वह एक काबिल संचालक थे। ऊपर से पापा जो का भी दबाव था कि इतना धन और मेहनत लगा है, तो छोटे बेटे को उसका हक मिले ही। हालांकि बॉबी स्वयं मीडिया में कह रहे थे कि वह इस भाई-भतीजावाद के विरोधी हैं, और वह कोई भी पद नहीं लेंगे। लेकिन, जैक उस वक्त अटॉर्नी जनरल के लिए उपयुक्त व्यक्ति ढूँढ रहे थे और दो लोगों ने मना कर दिया था। यह सब यूँ भी नाटक था, बॉबी को अटॉर्नी जनरल उन्हें बनाना ही था। इस तरह अमरीका के दो शक्तिशाली पदों पर दोनों भाई जम गए।

बॉबी ने वकालत की पढ़ाई तो की थी, लेकिन एक भी दिन कचहरी नहीं गए थे। ऐसे में सीधे अटॉर्नी जनरल बनाने का विरोध हुआ। केनेडी ने मजाक में मीडिया से कहा, “कुछ साल अटॉर्नी जनरल रहेगा, तो आगे वकालत में आसानी होगी।”

यह तो खैर मजाक था, लेकिन बॉबी केनेडी आधुनिक अमरीकी इतिहास के सबसे काबिल अटॉर्नी जनरल साबित हुए। ‘टाइम ’मैगजीन की हालिया सूची में भी वह पहले स्थान पर हैं। बॉबी ने पूरे विभाग का हुलिया ही बदल दिया, और दिन-रात काम पर लगे रहते। उनके विभाग के कर्मियों ने कहा कि इतना मेहनती और स्पष्ट साहसिक निर्णय लेने वाला बॉस फिर कभी नहीं आया। अगर भविष्य में उनकी चुनाव कैम्पैन के दौरान हत्या नहीं होती, तो शायद वह राष्ट्रपति भी बनते। वह तो खैर आगे की बात थी।

जैक चुनाव जीत कर राष्ट्रपति आइजनहावर से मिलने गए। आइजनहावर वाइट हाउस की सीढ़ियों पर अपनी ट्रेडमार्क टोपी में खड़े थे, केनेडी चलती गाड़ी से ही कूद कर हाथ मिलाने चल दिए। मीडिया ने इस फ़ोटोशूट को एक ऊर्जावान अमरीकी मिज़ाज के राष्ट्रपति की तरह दिखाया।

आइजनहावर ने पहले दिन यूँ ही देश के मुद्दों पर बात की, और फिर कहा कि अगली बार तुम से अकेले में बात करुँगा, मीडिया के सामने नहीं।

अमरीकी राष्ट्रपति के पास ऐसी कई गुप्त जानकारी होती है, जो उपराष्ट्रपति को भी नहीं पता होती। रूज़वेल्ट ने अपने उपराष्ट्रपति को एटम-बम के संबंध में भी नहीं बताया था। यह 'टॉप-सीक्रेट 'है जो राष्ट्रपति अगले राष्ट्रपति को ही देगा। आइजनहावर ने केनेडी से अकेले में कहा,

"तुम मिसाइल-रेस में अमरीका को पीछे दिखा कर चुनाव जीते हो। मीडिया, जनता और निक्सन भी यही जानते थे कि हम पीछे हैं। मैं महज चुनावी जीत के लिए यह रहस्य नहीं खोल सकता था कि दरअसल हम पीछे नहीं हैं। सोवियत की पूरी खुफिया तस्वीरों की फाइल तुम्हें सौंप रहा हूँ। उनके पास कुछ अच्छी मिसाइलें हैं, लेकिन हमने अपने कई मिसाइल छुपा कर रखे है। गिनती कर लेना, मामला बराबरी का है।"

केनेडी यह सुन कर खुश हुए, और पूछा, "लेकिन, अगर हम पर परमाणु हमला हो गया तो?"

आइजनहावर ने कहा, "तुम्हारे पास असीम ताकत है। अगर अभी हम पर हमला हो गया, तो क्या होगा? देखना चाहते हो?"

और फिर आइजनहावर ने फोन उठा कर कहा, "ओपल ड्रिल 3!"

फोन रखते ही केनेडी और आइजनहावर के सामने लॉन पर एक फौजी हेलीकॉप्टर आ गया। केनेडी की आँखें चमक उठी।

"तुम एक बेहतरीन राष्ट्रपति बनोगे। मुझे यकीन है।" आइजनहावर ने केनेडी के कंधे पर हाथ रख कर कहा।

अगले महीने निकिता ख़ुश्चेव ने केनेडी को संदेश भेजा, “अमेरिका के नए राष्ट्रपति को शुभकामना। सुना है, आप भले आदमी है। आपके दो पायलट हमारी सीमा में पिछले साल जासूसी करने आए थे, और हमने पकड़ लिया था। उन्हें अब तोहफ़े के तौर पर लौटा रहा हूँ। निक्सन राष्ट्रपति बनते, तो क़तई न लौटाता।”

यह तोहफ़ा अमरीका में खुशियाँ तो लाया कि शीत-युद्ध अब खत्म हो रहा है। लेकिन, अभी तो शीत-युद्ध का चरम बिंदु आने वाला था। क्यूबा में।

◆ ◆ ◆

बे औफ पिग्स

“राष्ट्रपति महोदय! आप बस परमाणु-युद्ध का आदेश दीजिए। बाकी हम देख लेंगे।”

“जनरल! क्या हम उसके बाद खुद को मानव कह पाएँगे?”

(केनेडी और आर्मी जनरल लेनिट्जर के मध्य बातचीत)

केनेडी को यह विश्वास था कि सोवियत कभी अमरीका पर हमला नहीं करेगा। इसे उन्होंने सिद्ध भी किया लेकिन इसके लिए उन्हें अग्नि-परीक्षा देनी पड़ी। उन्होंने परमाणु-युद्ध के आखिरी बिंदु से युद्ध टाल कर दिखाया। अगर तनिक भी हेर-फेर होता तो मानव-सभ्यता खत्म हो सकती थी। लेकिन, उससे पहले ग़लतियाँ भी हुई।

जब वह राष्ट्रपति बन कर आए, उस वक्त वह सनकी फौजी जनरलों से घिरे हुए थे। सिगार पीते, युद्ध का बिगुल बजाने को तैयार जनरल। वह उनके सामने युद्ध की रणनीतियाँ दिखाते रहते कि यहाँ से मिसाइल छोड़ेगे, वहाँ परमाणु-बम गिरेगा। केनेडी अपने अंगूठे से दाँत चटकाते, कभी बालों में हाथ फेरते सोचते कि किन पागलों के बीच बैठा हूँ जो परमाणु-बम को बच्चों की गेंद समझ रहे हैं। उनमें अधिकतर विश्व-युद्ध में लड़ चुके जनरल थे, जिन्हें अब शाही ऑफिसों में बिठा दिया गया था, तो उनकी खुजली भी वाज़िब थी। उन न्यूक्लियर-ट्रिगर दबाने के शौकीन जनरलों पर उस काल में स्टैनले कुब्रिक ने एक व्यंग्य फ़िल्म बनायी - 'डॉ. स्ट्रेंजलव'।

केनेडी अमरीका को कम से कम बाहर से शांति-दूत रूप में स्थापित करने के पक्ष में थे। उन्होंने पहली बार 'शांति सेना 'स्थापित की, जो एशिया, अफ़्रीका और दक्षिण अमेरिका भेजी जाएगी। वह सेना उनकी भाषा सीखेगी, उनके जैसा जीवन जिएगी, और सामाजिक कार्यों में मदद करेगी।

उनका कहना था, "साम्यवादी धनी देशों को नहीं आकर्षित कर सकते, गरीब देशों से सहानुभूति दिखा कर उन पर हक जमा सकते हैं। यहीं हमें अपना मानवीयता का चेहरा दिखाना है कि अमेरिका एक साम्राज्यवादी देश नहीं, बल्कि समाज से जुड़ा देश है।"

यह दरअसल मास्टरस्ट्रोक था। उनका साम्यवादियों का विश्लेषण बिल्कुल निशाने पर था। तीसरी दुनिया के देशों में साम्यवाद अब वामपंथ के रूप में गरीब, पिछड़ों से जुड़ कर अपनी पकड़ बना रहा था, और क्रांति का भी रूप दे रहा था। चे गुवैरा पूरे दक्षिण अमेरिका मोटरसाइकल से घूम कर, गरीबों की दशा देख कर, क्रांतिकारी बन ही चुके थे। अगर यही काम अमेरिका करने लगे, तो बाजी पलट सकती थी। अमरीका समाज-कार्यों में धन लगा कर जनता का हृदय जीत सकती थी। यह कहना ग़लत न होगा कि इसमें उनका कैथॉलिक दिमाग भी था। कैथोलिक ईसाई धर्म अपनी सत्ता का विस्तार मिशनरी गतिविधियों से कर ही रहा था।

जब वह राष्ट्रपति बन कर आए, उस वक्त वह सनकी फौजी जनरलों से घिरे हुए थे। सिगार पीते, युद्ध का बिगुल बजाने को तैयार जनरल। वह उनके सामने युद्ध की रणनीतियाँ दिखाते रहते कि यहाँ से मिसाइल छोड़ेगे, वहाँ परमाणु-बम गिरेगा। केनेडी अपने अंगूठे से दाँत चटकाते, कभी बालों में हाथ फेरते सोचते कि किन पागलों के बीच बैठा हूँ जो परमाणु-बम को बच्चों की गेंद समझ रहे हैं। उनमें अधिकतर विश्व-युद्ध में लड़ चुके जनरल थे, जिन्हें अब शाही ऑफिसों में बिठा दिया गया था, तो उनकी खुजली भी वाज़िब थी। उन न्यूक्लियर-ट्रिगर दबाने के शौकीन जनरलों पर उस काल में स्टैनले कुब्रिक ने एक व्यंग्य फ़िल्म बनायी - 'डॉ. स्ट्रेंजलव'।

केनेडी अमरीका को कम से कम बाहर से शांति-दूत रूप में स्थापित करने के पक्ष में थे। उन्होंने पहली बार 'शांति सेना 'स्थापित की, जो एशिया, अफ़्रीका और दक्षिण अमेरिका भेजी जाएगी। वह सेना उनकी भाषा सीखेगी, उनके जैसा जीवन जिएगी, और सामाजिक कार्यों में मदद करेगी।

उनका कहना था, "साम्यवादी धनी देशों को नहीं आकर्षित कर सकते, गरीब देशों से सहानुभूति दिखा कर उन पर हक जमा सकते हैं। यहीं हमें अपना मानवीयता का चेहरा दिखाना है कि अमेरिका एक साम्राज्यवादी देश नहीं, बल्कि समाज से जुड़ा देश है।"

यह दरअसल मास्टरस्ट्रोक था। उनका साम्यवादियों का विश्लेषण बिल्कुल निशाने पर था। तीसरी दुनिया के देशों में साम्यवाद अब वामपंथ के रूप में गरीब, पिछड़ों से जुड़ कर अपनी पकड़ बना रहा था, और क्रांति का भी रूप दे रहा था। चे गुवैरा पूरे दक्षिण अमेरिका मोटरसाइकल से घूम कर, गरीबों की दशा देख कर, क्रांतिकारी बन ही चुके थे। अगर यही काम अमेरिका करने लगे, तो बाजी पलट सकती थी। अमरीका समाज-कार्यों में धन लगा कर जनता का हृदय जीत सकती थी। यह कहना ग़लत न होगा कि इसमें उनका कैथॉलिक दिमाग भी था। कैथोलिक ईसाई धर्म अपनी सत्ता का विस्तार मिशनरी गतिविधियों से कर ही रहा था।

केनेडी की यह शांति-सेना दशकों तक रही, और अमेरिका की समाजसेवी छवि बनाने में कामयाब रही। बल्कि उनके देखा-देखी कई पूँजीपतियों ने ट्रस्ट बना कर गरीब देशों की कमान संभालनी शुरू की। उनकी जगायी अलख आज तक 'बिल गेट्स फाउंडेशन 'जैसी संस्थाओं के रूप में देखी जा सकती है। केनेडी को भारत में भविष्य की एक मजबूत अर्थव्यवस्था दिखती थी। उन्होंने मशहूर अर्थशास्त्री जे. के. गालब्रेथ को भारत का राजदूत बना कर भेजा।

लेकिन, यह सब सिर्फ मुखौटा है। सत्य तो यह था कि केनेडी रक्षा बजट बढ़वा चुके थे, और मिसाइलों की संख्या बढ़ाने के आदेश भी दे दिए। अपने शासन के तीसरे महीने में ही वियतनाम में फौज भेज दी। लेकिन, उससे भी पहले क्यूबा प्लान बन रहा था।

केनेडी के राष्ट्रपति बनते ही अगले दिन बैठक हुई कि फिदेल कास्त्रो का कुछ करना पड़ेगा। ग्वाटेमाला में पहले से क्यूबा के विद्रोहियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा था। अब बारी थी आक्रमण की। योजना 'फूल-प्रूफ 'थी। आक्रमण क्यूबा के विद्रोही ही करेंगे, अमरीका बस पीछे से सहायता देगी।

केनेडी को यह योजना रास नहीं आ रही थी। उनका मानना था कि ये विद्रोही ख़्वाह-म-ख़्वाह मारे जाएँगे। जबकि CIA कह रही थी कि कास्त्रो में दम नहीं, विद्रोही तो बिना अमरीकी समर्थन के भी जीत जाएँगे। नए-नए कार्यभार संभाले केनेडी इस झाँसे में आ गए।

आखिर CIA का फैसला हुआ कि क्यूबा के 'बे ऑफ पिग्स 'से 1500 विद्रोही घुस जाएँगे, किसी गुरिल्ला आक्रमण की तरह।

केनेडी ने कहा, "ये बस पंद्रह सौ? और कास्त्रो के 25000? तुम लोग कैसी योजना बना रहे हो?"

उन्होंने जवाब दिया, "राष्ट्रपति महोदय! वहाँ अंदर भी दस हज़ार लोग साथ है। आप निश्चिंत रहें।"

15 अप्रिल, 1961 को अमरीका के आठ B26 बॉम्बर पुएर्टो रिको से क्यूबा की ओर निकले, और कास्त्रो के 5 वायुसेना जहाजों को बम से उड़ा दिया। लेकिन कास्त्रो के पास कुल 36 जहाज थे!

उधर विद्रोही छोटे-छोटे नावों पर कूच कर चुके थे। उनको मालूम भी नहीं था कि अमरीका पीछे से हाथ हटा चुकी है।

केनेडी से पूछा गया कि हम आक्रमण कर दें? केनेडी ने कहा कि बस यह ध्यान रहे कि यह बात नजर न आए कि अमरीका का आक्रमण है। जब तक अमरीका कुछ करता, कास्त्रो के 24 हज़ार सैनिक सभी विद्रोहियों को घेर चुके थे। भागने का कोई रास्ता नहीं था। 1200 विद्रोहियों ने आत्मसमर्पण कर दिया, बाकी भाग गए या मारे गए।

दो दिन के अंदर CIA की सारी योजना फुस्स हो गयी। केनेडी अपनी हार से शर्म से गड़ गए।

केनेडी ने कहा, "मैं इतना बेवकूफ कैसे हो सकता हूँ? जब मुझे यकीन था कि योजना बेकार है, मैंने उन बेचारे विद्रोहियों को मौत के मुँह में जाने क्यों दिया?"

वह CIA पर नाराज थे कि वे कितनी बकवास सलाह दे रहे थे। लेकिन जब मीडिया ने एक-एक कर फौजी जनरलों और CIA पर निशाना साधा, केनेडी ने प्रेस में घोषणा की,

"यह किसी और की ग़लती नहीं, मेरी ग़लती है। अगर अमेरिका कोई भी ग़लत नीति अपनाता है, तो उसके लिए एक ही व्यक्ति जिम्मेदार है— राष्ट्रपति। मैं पूरी ज़िम्मेदारी लेता हूँ और क्यूबा के सभी शहीदों से माफी माँगता हूँ।"

फिदेल कास्त्रो इस जीत को अमरीका पर जीत कह रहे थे, और उनकी ताकत घटने की बजाय बढ़ती चली गयी। कहीं दूर क्रेमलिन में निकिता ख्रुश्चेव और उनके सभी सहयोगी खुशी से चिल्लाए- 'क्यूबा की जय हो!'

सोवियत को अब अमरीका के पड़ोस में एक घोंसला मिल गया था, जहाँ वह चुपचाप अपने अंडे रख सके।

◆ ◆ ◆

गोरे और काले

दुनिया दो शक्तियों में बँटी थी, और अमेरिका दो रंगों में। केनेडी को ये दोनों खाई पाटनी थी। केनेडी ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा,

“जो हम देश के लिए करना चाहते हैं, वह सौ दिन में पूरे नहीं होंगे, हज़ार दिनों में पूरे नहीं होंगे, सौ साल में पूरे नहीं होंगे, शायद कभी न पूरे हों। लेकिन हम इस सुकून से मर सकेंगे कि हमने शुरुआत तो की।”

अब्राहम लिंकन के सौ साल बाद भी रंगभेद अमरीका में यथावत रहा। अश्वेतों के रहने का इलाका बँटा था, खाने की मेज बँटी थी, रेलवे स्टेशन पर प्रतीक्षालय बँटे थे, सिनेमा हॉल बँटे थे, यहाँ तक कि हाथ धोने के बेसिन बँटे हुए थे। और यह साठ के दशक की बात है, जब दुनिया में गुलाम देश भी गिने-चुने ही बचे थे।

जिस दिन केनेडी राष्ट्रपति बने और उनके सामने नौसेना के गार्ड्स ने मार्च किया, उन्होंने देखा कि उनमें एक भी नीग्रो नहीं। सीनेट में भी कोई नीग्रो नहीं था। उन्होंने अपने ऑफिस में बैठते ही पहली नियुक्ति नॉर्वे में एक अश्वेत राजदूत को भेज कर की। ऐसा इतिहास में पहली बार हो रहा था।

बॉबी केनेडी ख़ास कर नाज़ी मानसिकता के कहे जाते थे। लेकिन जब वह अटॉर्नी जनरल की कुर्सी पर बैठे, और देश का कानून उनके अधिकार में आया, वह सचेत हो गए। उन्हें लगा कि यह तो ग़लत है। यह संविधान के ख़िलाफ़ है कि गोरे और काले अलग-अलग रह रहे हैं। जबकि इन दोनों रईस भाइयों ने खुद अश्वेत के साथ बैठ कर कभी कॉफी नहीं पी थी। वे छुटपन से उन्हें नौकर भेष में ही देखते रहे। अश्वेत उनके रडार पर ही नहीं थे। न स्कूल में कोई दोस्त, न खेल में, न फौज में, न राजनीति में। वे जानते ही नहीं थे कि ये नीग्रो लोग दरअसल कैसे होते हैं।

नीग्रो कैसे होते हैं? काले रंग के, घुँघराले बाल, मोटी नाक और होंठ, ऊँचे जबड़े वाले, अफ़्रीका से उठा कर मीलों दूर अमरीका महादेश में गोरों की सत्ता में पटक दिए लोग। वे लोग जो चार सौ वर्ष तक गुलाम रहे। आजाद होकर भी जूते के बराबर। यह सिर्फ दक्षिण के रुढ़िवादी गोरों की ही नहीं, उत्तर के ब्यूरोक्रैट की भी सोच था। एफ.बी.आई. के निदेशक एड्गर हूवर खुल कर नीग्रो से नफ़रत करते थे, और मौके-बेमौके उन्हें जेलबंद करने से लेकर मरवाते भी रहते थे। यह सब अब दस्तावेजों में है।

उस समय नीग्रो अधिकारों के लिए दो नाम लोकप्रिय हो रहे थे— मार्टिन लूथर किंग और मैल्कम एक्स। दोनों एक ही उम्र के थे। सूट-बूट धारी और प्रखर वक्ता। लेकिन, दोनों में बहुत फर्क था। किंग धर्मनिष्ठ ईसाई थे, जिन्होंने धर्म की उच्च शिक्षा ली थी। मैल्कम एक्स एक कट्टर तानाशाही इस्लाम संगठन के प्रवक्ता थे, और पहले अपराध से जुड़े रहे थे। एक तरफ मार्टिन लूथर किंग भारत के मोहनदास क. गांधी की अहिंसावादी सत्याग्रह से प्रेरित थे। तो दूसरी तरफ, मैल्कम एक्स हिंसावादी क्रांति में विश्वास रखते थे और उन्हें उनके विरोधी 'काला हिटलर 'बुलाते थे। दोनों की गोली मार कर हत्या की गयी। किंग की एक श्वेत ईसाई ने की, और मैल्कम एक्स की एक अश्वेत मुसलमान ने। दोनों जीवन में सिर्फ एक बार मिले। अटकलें यह भी हैं कि किंग, मैल्कम एक्स और केनेडी की हत्याएँ जुड़ी हुई हैं, और इन सब में देश की ही संस्था का हाथ है। खैर।

केनेडी के आने से पहले अमरीकी चुनाव में मतदान के लिए दक्षिण के राज्य एक साक्षरता-परीक्षा लेते थे। प्रायोगिक तौर पर यह बस नीग्रो के लिए ही होती थी। अगर वह लिख-पढ़ नहीं सकते, तो वोट नहीं

डाल सकते। लेकिन, इसका मनमर्जी दुरुपयोग होता। अगर वे लिख-पढ़ लेते तो उनसे संविधान के अनुच्छेद पूछे जाते। किसी भी तरह उनसे मताधिकार छीन लिया जाता। लाखों अश्वेतों ने कभी वोट डाला ही नहीं।

बॉबी केनेडी ने अप्रिल, 1961 में मार्टिन लूथर किंग को अपने घर में गुप्त रूप से बुलाया और कहा, "यह मेरा फोन नंबर है। अगर कहीं भी, कोई भी किसी अश्वेत से मताधिकार ग़लत तरीके से छीनता है तो सीधे मुझे फ़ोन करिए। मुझमें संविधान बदलने की शक्ति तो नहीं, लेकिन जो संविधान में लिखा है उसे पालन कराने की ज़िम्मेदारी तो मुझ पर है।"

◆ ◆ ◆

मई 1961

अमेरिका एक मजबूत लोकतंत्र नहीं, लेकिन एक मजबूत गणतंत्र है। वहाँ यह लगभग नामुमकिन है कि प्रधानमंत्री एक रात घोषणा कर दें, और पूरा देश बंद हो जाए। राज्यों की स्वायत्तता सशक्त है। न्यूयार्क गोरे-काले का भेद भले न माने, अलाबामा में काले किसी गोरे की दुकान से च्विंगम भी नहीं खरीद सकते थे। यह रंगभेद राज्यों के कानून के तहत था, और नहीं मानने पर पुलिस कुछ भी कर सकती थी। वहाँ की पुलिस का लगभग काम ही था, नीग्रो को पकड़ कर पीटना। कोई केनेडी उनको रोक नहीं सकता था।

लेकिन, कब तक?

अमरीका में आज भी 'ग्रेहुन्ड 'बस चलती है, जिस पर एक दौड़ते कुत्ते की तस्वीर बनी होती है। जब अमरीका प्रवास के दौरान मैं उसमें सफर कर रहा था, तब भी वह अश्वेतों से ही भरी हुई थी। लेकिन, इसकी वजह कोई रंगभेद नहीं। हाँ! पचास के दशक में गोरों और कालों की अलग बस चलती थी।

एक दिन, छह गोरे और सात नीग्रो अमरीका की राजधानी वाशिंगटन डी.सी. से लुसियाना के लिए बस पर निकलते हैं। यह एक क्रांति थी।

गोरे और काले एक बस में कभी बैठे नहीं थे। अगर बैठते तो उन नीग्रो को बस से धक्के मार कर फेंक दिया जाता। ये 'फ्रीडम राइडर्स 'कहलाए।

वर्जीनिया और नॉर्थ कैरोलिना से बस बड़े आराम से गुजरी। कहीं कोई वारदात नहीं। खूबसूरत मौसम था। वे बस-यात्री खिड़की से बाहर अपना चेहरा निकाल कर इस उन्मुक्तता का आनंद ले रहे थे। गोरों के शौचालय में नीग्रो जा रहे थे। कोई रोक-टोक नहीं।

12 मई को यह बस जैसे ही साउथ कैरोलिना पहुँची, बेसबॉल बैट लिए गोरे गुंडे बस में चढ़ गए और ताबड़-तोड़ पीटना शुरू किया। बस में एक द्वितीय विश्व-युद्ध के फौजी श्वेत-वर्णी भी 'फ्रीडम राइडर 'थे। वह बुरी तरह घायल हुए। एक नीग्रो व्यक्ति का सर फोड़ दिया गया। ये सभी अहिंसक सत्याग्रही थे। इन्होंने कोई संघर्ष नहीं किया। वैसे भी भीड़ के सामने क्या करते?

अगला पड़ाव अटलांटा शहर था, जहाँ मार्टिन लूथर किंग इनके स्वागत के लिए खड़े थे।

उन्होंने कहा, "तुमलोग आगे मत जाओ। 'कु क्लुक्स क्लान 'के लोग तुम्हें मार डालेंगे। पुलिस भी उनसे मिली हुई है।"

कु क्लुक्स क्लान (KKK) सनकी चरमपंथी श्वेत-वर्णी सेना थी, जो नीग्रो खून की प्यासी रहती थी। उनका एजेंडा ही थी नीग्रो को जूते मारना, उन्हें दबा कर रखना और जो सर उठाए, उसे जिंदा जला देना। दक्षिण के कई सामंत और समृद्ध परिवार के गोरे इनको सहयोग देते कि उनकी सत्ता बनी रहे।

लेकिन ये सत्याग्रही आखिरी पड़ाव तक जाना चाहते थे। यहाँ और भी कई लोग जुड़ गए थे, और अब दो बसों में सवार थे।

14 मई को बस अलाबामा राज्य प्रवेश करती है। यह सबसे कट्टर राज्यों में था, जहाँ के गवर्नर का कहना था, "गोरे-काले का भेद हमारे पुरखों ने हमें सिखाया है। यह हमारे समाज की नींव है। इसे ये प्रगतिवादी नहीं तोड़ सकते। अगर कोई निग्गर इस राज्य में यह नियम तोड़ता है तो उसका जिंदा बचना भी एक संयोग होगा।"

जैसे ही बस एनिस्टन बस-अड्डे पहुँची, गोरों की बड़ी भीड़ ने आक्रमण कर दिया। बस ड्राइवरों ने भगाना शुरू किया, तो वे गाड़ी से पीछा करने लगे। एक बस के टायर पर गोली मारी गयी, और फिर बम फेंक दिया गया। बस वहीं जल कर स्वाहा हो गयी। सत्याग्रही बस से कूदे तो उनको पीट-पीट कर मरणासन्न कर दिया गया।

ताज्जुब की बात है कि यह सभी घटनाएँ FBI के नाक के नीचे हो रही थी। निदेशक हूवर को पल-पल की खबर थी। लेकिन, वह खुद ही चाहते थे कि ये लोग मर-खप जाएँ। उनकी नजर में ये सभी कम्युनिस्ट देशद्रोही थे, जो नीग्रो को मुक्ति दिला रहे हैं।

केनेडी को मीडिया से खबर मिली। लेकिन, वह ख्रुश्चेव से मिलने वियना निकलने वाले थे।

उन्होंने अपने अश्वेत सहयोगी को बुला कर कहा, "अभी यह नौटंकी क्यों? उनको बोलो कि बस से उतर जाएँ। मैं वियना से लौटूँगा, फिर ऐसे प्रयास करें।"

एक बस बच कर बर्मिंघम (अलाबामा) पहुँच गयी थी, और वहाँ तो KKK का केंद्र था। लगभग एक हज़ार गोरों की भीड़ ने आक्रमण कर दिया। वहाँ की पुलिस ने उन्हें कहा था, "मैं तुम लोगों को पंद्रह मिनट देता हूँ। इस पंद्रह मिनट में तुम बस जलाओ, खून बहाओ, बम फोड़ो, जो मर्जी करो। पंद्रह मिनट बाद हमें आना ही पड़ेगा, क्योंकि वाइट हाउस से सख़्त ऑर्डर है कि दंगा रोकना है।"

बस तो जलायी ही गयी, सभी यात्रियों को इतना पीटा गया कि पूरी सड़क खून से लाल हो गयी। यह खबर अंतरराष्ट्रीय अखबारों में छपी और यूरोप जा रहे केनेडी शर्म से लाल हो गए।

लेकिन, 'फ्रीडम राइडर्स 'अब भी हार नहीं मान रहे थे। दस गिरते तो बीस खड़े हो जाते। छात्रों की एक फौज ही इस यात्रा को पूरा करने के लिए खड़ी हो गयी। यह अब बॉबी केनेडी के भी इज्जत का सवाल था कि यात्रा पूरी हो। लेकिन कोई बस ड्राइवर बस चलाने को ही तैयार नहीं था। आखिर जब बॉबी के दबाव पर बस चली, तो आगे मॉन्टगोमरी में फिर से एक बड़ा आक्रमण हुआ।

सब चिल्ला रहे थे, “मार डालो इन निग्गरों को!”

लेकिन, वहाँ मार्टिन लूथर किंग पहुँच चुके थे। वह लगभग हज़ार सत्याग्रहियों को लेकर गिरजाघर में जमा हुए। उन्हें यकीन था कि यहाँ उन पर हमला नहीं होगा। लेकिन, भीड़ का क्या धर्म? KKK के लठैतों ने गिरजाघर को घेर कर आगजनी शुरू की।

बॉबी केनेडी ने अब वाशिंगटन से मार्शल भेजे, और जैसे-तैसे आक्रमण बचाया गया।

मार्टिन लूथर किंग ने बॉबी केनेडी को फ़ोन किया, “यह क्या हो रहा है? क्या यह अमेरिका है?”

बॉबी ने खीज कर कहा, “हाँ! यह अमेरिका है। अगर हमारे मार्शल नहीं पहुँचते तो आज तुम सब जिंदा जला दिए जाते। इस उन्मादी भीड़ का न कोई धर्म है, न कोई आदर्श। मैं तुम्हारी आज़ादी के लिए खुद लड़ूँगा, लेकिन कुछ महीने रुक जाओ।”

किंग ने कहा, “हम तो सदियों रुक गए, और आप महीनों की बात कर रहे हैं? लेकिन, क्या अमेरिका अब रुकेगा?”

◆ ◆ ◆

होफ़्फ़ा और मार्लिन मुनरो

वियना, 1961, ख़ुश्चेव-केनेडी वार्ता

“पिछली बार जब तुमसे मिला था, तुम नौजवान दिखते थे” ख़ुश्चेव ने कहा

“हाँ! अब दो साल में मैं बूढ़ा हो गया” केनेडी ने हँस कर जवाब दिया

“तुम यह ध्यान रखो, जीत साम्यवाद की ही होगी”

“मुझे ऐसी कोई संभावना नहीं दिखती, पर मुझे खुशी है कि आपका देश तरक्की कर रहा है”

“जानते हो, यह मान्यताओं का द्वंद्व है? पूँजीवाद और साम्यवाद के बीच”

“और यह मान्यताओं का ही रहे”

“तुम कहना क्या चाहते हो?”

“अगर आप बुरा न मानें तो मैं पूछ सकता हूँ कि आपके जैकेट पर जो दो सुंदर मेडल लटक रहे हैं, वे क्या हैं?”

ख़ुश्चेव ने गर्व से कहा, “ये दोनों लेनिन शांति पुरस्कार हैं”

“आशा है कि ये दोनों ‘शांति ’मेडल आपके जैकेट पर यूँ ही सजे रहेंगे। ”

“हा हा! तुम मुझसे क्या चाहते हो?”

“मैं तो बस ये चाहता हूँ कि एक दिन हम दोनों देश के अंतरिक्ष-यात्री एक साथ चाँद पर उतरें”

“हाँ हाँ! क्यों नहीं?”

और दोनों हँसने लगे।

“आप वियतनाम के बारे में क्या सोचते हैं?”

“तुम क्या सोचते हो? अपने धन से, अपने ताकत से, उन्हें खरीद लोगे? उनकी जनता का कोई अधिकार नहीं? मास्को यह कभी नहीं होने देगा। ”

“देखिए, न आप मुझे साम्यवादी बना पाएँगे, न मैं आपको पूँजीवादी बना पाऊँगा। तो काम की बात करें?”

“काम की बात यह है कि हम परमाणु मिसाइल बनाना नहीं बंद करेंगे”

“मत करिए। लेकिन दस साल बाद दुनिया में पंद्रह देश होंगे जिनके पास परमाणु-शक्ति होगी। फिर हम-आप क्या करेंगे?”

“हम क्या करेंगे? हम तो शांतिप्रिय हैं। अमरीका बताए कि बर्लिन में युद्ध चाहिए या शांति?”

“अगर हालात न सुधरे, तो अब बर्लिन में युद्ध ही होगा, अध्यक्ष महोदय! लगता है, अगली ठंड हम दोनों पर भारी पड़ेगी”

67 साल के ख्रुश्चेव और 44 वर्ष के युवा केनेडी की यह वार्ता असफल ही रही। ख्रुश्चेव उन पर बात-बात में धौंस दिखाते रहे। लेकिन, यह अच्छा ही हुआ। ख्रुश्चेव को लगा कि केनेडी कमजोर है। बर्लिन में युद्ध की स्थिति फिर से बन रही थी, जो रुक गयी।

अगस्त, 1961 से सोवियत ने बर्लिन की दीवार बनानी शुरू कर दी। इस दीवार बनने के दो मतलब थे। एक तो यह कि जर्मनी हमेशा के लिए बँट

गया। और दूसरा यह कि बर्लिन में अब कोई तृतीय विश्व-युद्ध नहीं होगा। इसे इतिहासकार, केनेडी की पहली जीत कहते हैं।

लेकिन, वियतनाम में जो होने जा रहा था, वह अगले दशक में अमरीका को विश्व-युद्ध से भी अधिक मौतें देगा। अमरीका इतने बम गिराएगी जितनी विश्व-युद्ध में भी भी नहीं गिराए।

वियतनाम दक्षिण एशिया का छोटा देश जिस पर हर किसी ने राज किया है। चीन ने, फ्रांस ने, जापान ने, तो सोवियत-अमरीका भी आ गए।

दिल्ली में बैठे राजदूत जे. के. गालब्रेथ ने केनेडी को कहा, "कहाँ जंगल में मरने जा रहे हैं? जाने दीजिए।"

क्यूबा की तरह वहाँ भी क्रांति हुई थी और हो ची मिन्ह ने फ्रेंच फौज को हरा कर 1954 में उत्तरी वियतनाम में विजय पायी थी। दक्षिण वियतनाम अब भी बचा हुआ था। यहाँ भी कोरिया जैसी ही स्थिति थी। उत्तर साम्यवादी, और दक्षिण पूँजीवादी।

जहाँ एक तरफ यह चल रहा था, बॉबी केनेडी दो लोगों के ख़िलाफ़ योजना बना रहे थे। पहली योजना थी Operation Mongoose (नेवला) जिसका ध्येय था फिदेल कास्त्रो की हत्या। और दूसरी योजना थी— जिमी होफ्फा को पकड़ो! एक बाहर का दुश्मन था, एक अंदर का।

जिमी होफ्फा अमरीकी इतिहास के रहस्यमय किरदार हैं जिन पर हॉलीवुड के जैक निकोलसन से अल पचिनो तक फ़िल्में कर चुके हैं। अमरीका के सबसे ताकतवर लोगों की सूची में यह नाम भी अब जोड़ रहा हूँ। बॉबी केनेडी-जिमी होफ्फा, और जैक केनेडी-निकिता ख़ुश्चेव के द्वंद्व में ही अमरीका का भविष्य छुपा है। और शायद इन दोनों भाईयों का अंत भी।

◆ ◆ ◆

दुनिया का खेल ही ऐसा है कि अकेले नहीं खेली जा सकती। लेकिन यह खेल भूल-भुलैया है। गुत्थियाँ उलझी हुई है।

क्यूबा अमरीकी माफ़िया गैंगस्टरों का स्वर्ग था। वे माफ़िया जिनके परिवार इटली के सिसली प्रांत से आए थे। इन गैंगस्टरों का कमाया धन एक तरफ हॉलीवुड में लगता, और दूसरी तरफ इनके सहयोगी थे अमरीका के सबसे बड़े मजदूर 'टीमस्टर 'यूनियन नेता- जिमी होफ्फ़ा।

इस खेल में हॉलीवुड सेलिब्रिटी फ्रांक सिनात्रा भी जुड़ जाते हैं, जो अपने दोस्त और भावी राष्ट्रपति केनेडी को खूबसूरत लड़कियाँ दिलाते हैं। FBI जो इन सब पर नजर रखती है, उसे पल-पल की खबर है कि केनेडी लेटे हुए हैं, और एक-एक कर लड़कियाँ आ-जा रही हैं। उनमें एक मशहूर गैंगस्टर की गर्लफ्रेंड भी है।

अगली सीन में फिदेल कास्त्रो आ जाते हैं, और क्यूबा का धंधा चौपट कर देते हैं। कास्त्रो के खात्मा की योजना बनने लगती है। अमरीका में राष्ट्रपति चुनाव होते हैं। जिमी होफ्फ़ा को रिचर्ड निक्सन में दम लगता है। होफ्फ़ा आइरिश कैथोलिक होकर भी केनेडी परिवार से नफ़रत करते हैं। वह निक्सन पर खूब पैसा लगाते हैं।

वहीं दूसरी ओर, अरबपति पापा जो केनेडी के माफ़िया और हॉलीवुड से संपर्क होते हैं। वे लोग उनके बेटे जैक केनेडी पर पैसा लगाते हैं। सिनात्रा और माफ़िया डॉन सैम गिआंकाना के बीच बातचीत FBI टेप भी करती है, जिसमें शिकागो के बोगस वोट डलवाने की बात थी। हूवर यह टेप अपने पास छुपा कर ही रखते हैं। केनेडी चुनाव जीत जाते हैं।

FBI के निदेशक हर्बर्ट हूवर के पास वह सेक्स-टेप भी होता है, जब केनेडी नौसेना में थे और उनके साथ 'मिस यूरोप 'इंगा रात बिताती थी। इंगा हिटलर की जासूस थी। अगर वह टेप लीक हो जाता तो केनेडी हिटलर के नाज़ी जासूस कहलाते और कभी राष्ट्रपति न बन पाते। केनेडी राष्ट्रपति बन कर भी हूवर का कुछ नहीं बिगाड़ पाते। हाँ! उस टेप को पाने की चाहत उनके मन में ज़रूर होती है।

मौत से कुछ महीने पहले केनेडी जब हार्वर्ड विश्वविद्यालय पहुँचते हैं तो एक FBI अफसर कान में कहते हैं, “इंगा कैसी है?”

केनेडी चौंक कर कहते हैं, “यू! सन ऑफ द बिच”

केनेडी की मृत्यु के वर्षों बाद ‘मिस यूरोप ’इंगा अपने बेटे को कहती है, “तुम्हारे असली पिता जॉन एफ. केनेडी थे!”

बॉबी केनेडी यह नहीं भूलते कि जिमी होफ्फा ने रिचर्ड निक्सन को चुनाव में हज़ारों डॉलर दिए थे। वह उनके गैंगस्टरों से संबंध को उभारने के लिए FBI को लगाते है।

हूवर की इसमें ख़ास रुचि नहीं होती, क्योंकि वह भी इस खेल का हिस्सा ही थे। माफ़िया से लड़ते-लड़ते वह खुद माफ़िया बन गए थे। लॉबी और हूवर की पहुँच CIA तक भी होती है, और वे केनेडी को कास्त्रो पर आक्रमण के लिए मना लेते हैं। लेकिन, केनेडी की अरुचि से ‘बे ऑफ पिग्स ’आक्रमण फुस्स हो जाता है।

बॉबी केनेडी होफ्फ़ा के खिलाफ दूसरा दाँव खेलते हैं। यहाँ हूवर भी उनके साथ हैं। वे यूनियन के कम्युनिस्ट संबंधों को उभारते हैं। यह बड़ी बात नहीं थी। मजदूर यूनियन तो दुनिया भर में कम्युनिस्ट होते ही हैं। लेकिन जिमी होफ्फ़ा के कम्युनिस्ट होने का मतलब था सोवियत का जासूस होना। शीत-युद्ध के समय इससे बड़ा देशद्रोह कुछ नहीं।

सीनेट ट्रायल के दौरान खेले-खिलाए होफ्फ़ा नौजवान एटॉर्नी जनरल बॉबी केनेडी को आड़े-हाथों लेते हैं। वह यूँ बात कर रहे होते हैं, जैसे वह इन सबसे कहीं अधिक शक्तिशाली हों। यह ऑरिजिनल ट्रायल यू-ट्यूब पर भी उपलब्ध है।

आखिर, राष्ट्रपति केनेडी के मरने के बाद जिमी होफ्फ़ा को जेल की हवा खानी पड़ती है। लेकिन, होफ्फ़ा कोई मामूली व्यक्ति तो थे नहीं।

पहले राष्ट्रपति केनेडी और फिर उनके भाई बॉबी केनेडी की हत्या कर दी जाती है। होफ्फ़ा का इसमें हाथ हो, न हो, वह इन मौतों का जश्न जरूर मनाते हैं।

बाद में जब होफ्फ़ा के दोस्त रिचर्ड निक्सन राष्ट्रपति बनते हैं, वह उनको छुड़वा लेते हैं।

एक दिन जिमी होफ्फ़ा गायब हो जाते हैं। उनकी लाश भी नहीं मिलती। उन्हें हमेशा के लिए मृत मान लिया जाता है। कई वर्षों बाद उनके ख़ास सहयोगी गैंगस्टर और यूनियन नेता फ्रैंक शीरन कहते हैं कि उन्होंने ही होफ्फ़ा को मारा था। मार्टिन स्कॉर्सीज इस कहानी पर मसालेदार 'द आइरिशमैन 'फ़िल्म बनाते हैं, जिसमें रॉबर्ट डी नीरो फ्रैंक शीरन का, और अल पचीनो होफ्फ़ा का किरदार निभाते हैं।

काश! ये कड़ियाँ जोड़ना इतना आसान होता। लेकिन, इनमें अधिकतर राज तो कब के दब चुके। अटकलें और अफ़वाहें ही बाकी रह गयी। क्या हुआ, कोई नहीं जानता।

खैर, पिक्चर अभी बाकी है।

◆ ◆ ◆

दिसंबर, 1961

माफ़िया और जिमी होफ्फ़ा को एक आदमी से उम्मीद थी— पापा जो केनेडी। केनेडी परिवार के सरदार। माफ़ियों के माफ़िया। FBI निदेशक एड्गर हूवर की जितनी राष्ट्रपति से नहीं बनती थी, उससे कहीं पुराना रिश्ता पापा जो से था। ये सभी एक ही जमाने के लोग थे। रुज़वेल्ट के जमाने से अमरीका को साथ बढ़ते देखा था। उनके लिए वाइट हाउस कोई अजूबी जगह नहीं थी। उनका बेटा तो अब आया था, वह तो वहाँ बैठ न जाने कितनी वाइन पी चुके थे। शराब का धंधा था, तो माफ़िया से दोस्ती थी और हॉलीवुड में तो वह पैसा लगाते ही रहे थे। लेकिन, उस महीने उनका राज हमेशा के लिए खत्म हो गया।

पापा जो केनेडी को एक दिन गोल्फ़ खेलते हुए स्ट्रोक आया, और उनका आधा शरीर लकवा मार गया। उनका चेहरा लटक गया, वह अब बोल नहीं पाते। जिस आदमी ने अपनी आवाज और ताकत के बल पर ज़िंदगी

जी हो, उसके लिए तो यह मौत ही थी। वह अगले आठ साल तक व्हीलचेयर पर निरीह, शून्य में ताकते रहते। वह खत्म हो गए।

जिमी होफ्फ़ा ने लकवा मारने की खबर सुन कर कहा, "पापा जो अब मर गया। मुझे पसंद नहीं था। लेकिन, उस परिवार में एक ही आदमी था जिसकी मैं इज्जत करता था।"

राष्ट्रपति केनेडी खुद भी इंजेक्शन के सहारे ही चल पाते। उनकी हड्डियाँ अब जवाब दे रही थी। उनकी हत्या नहीं भी होती, तो शायद अधिक नहीं जी पाते। यही वजह रही हो, कि वह स्त्रियों में सुकून ढूँढते। उनकी पत्नी जैकी तो अपने फ़ैशन और फ़िज़ूलख़र्ची में व्यस्त रहती। उनके एकाउंटेंट का कथन है कि राष्ट्रपति के वेतन से अधिक जैकी का खर्च था, और केनेडी को अपनी निजी संपत्ति लगा कर उनके बिल चुकाने पड़ते। वह भी सिर्फ डिजाइनर वस्त्रों की खरीद के!

केनेडी के संबंध वाइट हाउस की हर खूबसूरत महिला से थी। दो सेक्रेट्री का नाम उन्होंने फिडल और फैडल रखा था, जो घंटी बजाते ही आ जाती। इसके अलावा जैकी की एक सेक्रेटरी, एक उनके उम्र की रईस महिला, एक हॉलीवुड अभिनेत्री जो माफ़िया गैंगस्टर गियांकाना की गर्लफ्रेंड थी, और सिनात्रा के भेजी कई ग्लैमरस लड़कियाँ वाइट हाउस आती-जाती रहती।

इंग्लैंड के प्रधानमंत्री मैकमिलन को उन्होंने कहा, "अगर तीन दिन मुझे लड़की न मिले, तो मुझे सरदर्द हो जाता है।"

बिल क्लिंटन तो इस अय्याशी के मामले में केनेडी से बहुत पीछे रहे। एफ.बी.आई. भी परेशान हो गयी, कि आखिर कितनी ट्रैक रखें, और कितने टेप बनवाएँ। यह अब मीडिया, अमरीकी नागरिक और पूरे परिवार को पता ही था। इसमें अब कोई रहस्य, कोई खुलासा नहीं था।

जैकी केनेडी इतना ज़रूर ध्यान रखती कि सार्वजनिक कार्यक्रमों में वह सज-धज कर राष्ट्रपति के साथ हाथ में हाथ डाले खड़ी रहती। विदेशी राष्ट्राध्यक्षों से भी वह घुल-मिल जाती। बल्कि निकिता ख्रुश्चेव से भी जब केनेडी की वार्ता के दौरान गरम माहौल हो गया, तो जैकलीन उनसे

बतियाने लगी और कहा, “आप कहाँ इन नीरस राजनैतिक बहसों में पड़े हैं, सुना है आपको संगीत और ऑपेरा का शौक है?”

फ्रांस के डी गॉल हों या भारत के पंडित नेहरू, हर जगह जैकलीन केनेडी ने अपनी खूबसूरती और वाक्पटुता से लुभाया। नेहरू ने तो उनको अपने घर में ही मेहमान बनाया था। वह एक आकर्षक ‘फर्स्ट-लेडी ’थी, और केनेडी यह बखूबी जानते थे कि जैकी का विकल्प ये तमाम आती-जाती लड़कियाँ नहीं।

यह भी बात थी कि केनेडी एक पारिवारिक व्यक्ति थे। वह अपने बृहत् परिवार से जुड़े रहते। वह जैसे ही अपने पारिवारिक बंगले पर आते तो लगभग बीस-बाइस बच्चे दौड़ते हुए आते, और वे सबको एक गोल्फ-कार पर बिठा कर घंटों घुमाते रहते। कोई गोद में बैठ रहा है, तो कोई कंधे पर। उनके भाई बॉबी तो साथ ही रहते, उनकी बहनें भी उनसे जुड़ी हुई थी।

उन पर लिखी जीवनी और रिपोर्टों में एक बात स्पष्ट लिखी है कि अपनी ‘अय्याशी ’के बावजूद वह एक मेहनती राष्ट्रपति थे। मीटिंग करना, यात्राएँ करना, प्रेस से साक्षात्कार, विदेश सलाहकारों से चर्चा, वह हर जगह पूरी निष्ठा से काम करते। अपनी बीमारी का तनिक भान नहीं होने देते, और इंजेक्शन ले-ले कर अपने दर्द को भुलाते रहते।

मई, 1962 में अपने सेक्सी अवतार में मशहूर अभिनेत्री मार्लिन मुनरो उनके जन्मदिन पर वाइट हाउस आयी, और उनके लिए ‘हैप्पी बर्थडे ’गीत गाया। राष्ट्रपति बनने से पहले केनेडी और मार्लिन ने मानहट्टन और लॉस एंजेल्स में रातें बितायी थी। लेकिन, मार्लिन की छवि इतनी विराट थी, कि वह यूँ शौकिया लड़की बन कर नहीं रहती। केनेडी का विवाह ही टूट जाता, इसलिए उन्होंने राष्ट्रपति बनने के बाद संबंध तोड़ लिया। यह भी तथ्य मिलते हैं कि बॉबी केनेडी से उनके शारीरिक संबंध थे, जो केनेडी परिवार में आम बात थी।

मार्लिन की मृत्यु 4 अगस्त, 1962 को हुई। उनकी लाश अगले दिन लॉस एंजेल्स के उनके घर पर नग्नावस्था में मिली। उनके हाथ में टेलीफोन का रिसीवर था, और अवसाद की गोलियाँ बिस्तर पर बिखरी पड़ी था।

उनकी नौकरानी ने दो दशक बाद कहा कि बॉबी केनेडी उस रात आए थे, और उनसे झगड़ रहे थे। उसके बाद मार्लिन दुखी हो गयी थी। अन्य रिकॉर्ड के अनुसार भी अटॉर्नी जनरल उस समय लॉस एंजल्स में थे।

एड्गर हूवर की जीवनी के अनुसार मार्लिन के हर टेलीफ़ोन टैप किए गए थे। लेकिन, हूवर को ऐसा कुछ भी नहीं मिला जिससे कि यह हत्या साबित हो। अगर ऐसा कुछ मिलता तो वह ये मौका हाथ से नहीं जाने देते। ज़रूर इन दोनों को 'ब्लैक-मेल 'करते।

क्रिस्टोफर एंडरसन के अनुसार— 'जैकलीन केनेडी को किसी लड़की से कोई खतरा नहीं था। लेकिन, जिस दिन मार्लिन मुनरो को उन्होंने पति के साथ देखा, वह घबड़ा गयी। उन्हें लगा कि यह लड़की मेरे पति को छीन सकती है। उन्होंने मार्लिन से बात की.... यह मुमकिन है कि मार्लिन मुनरो ने केनेडी से संबंध की संभावना नहीं देखते हुए आत्महत्या कर ली हो।'

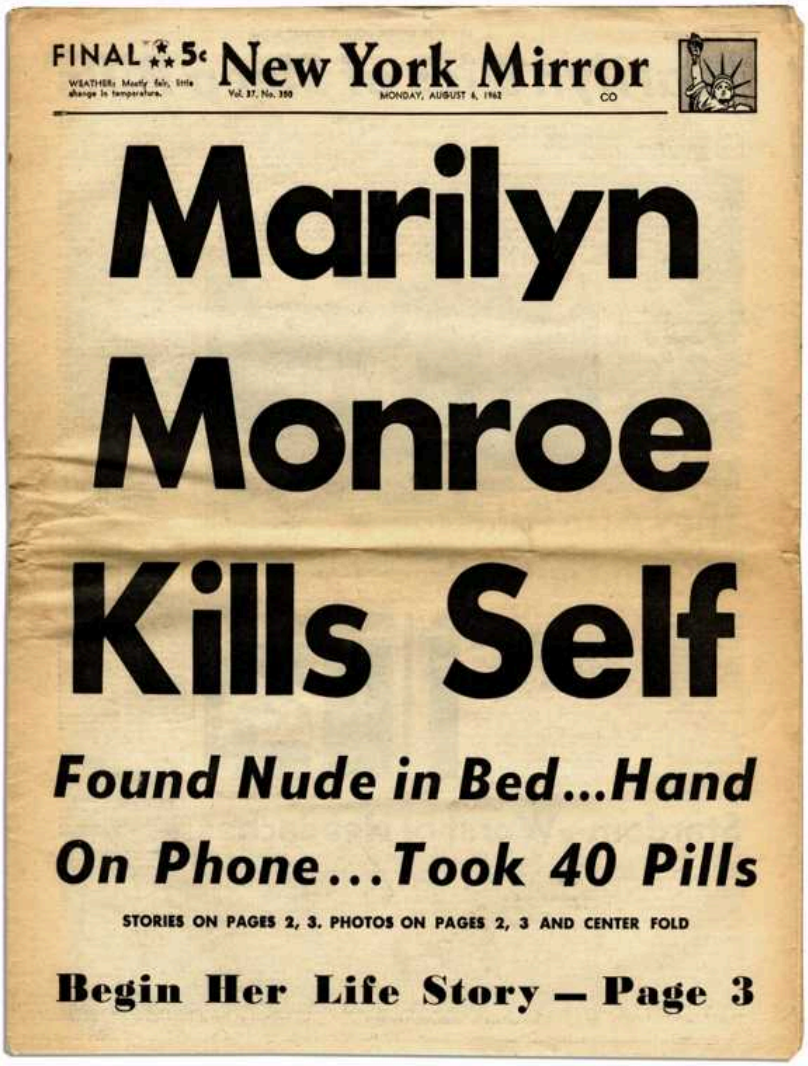
FINAL 5¢ New York Mirror

WEATHER: Mostly fair, little change in temperature. Vol. 37, No. 350 MONDAY, AUGUST 6, 1962 CO

Marilyn Monroe Kills Self

Found Nude in Bed...Hand On Phone...Took 40 Pills

STORIES ON PAGES 2, 3. PHOTOS ON PAGES 2, 3 AND CENTER FOLD

Begin Her Life Story — Page 3

◆ ◆ ◆

वियतनाम

दुनिया के मानचित्र पर उस वक्त साम्यवाद सबसे बड़ी ताकत थी। जहाँ नहीं थी, वहाँ बढ़ रही थी। इसके लिए सोवियत का न कोई सैनिक जरूरी था, न कोई टैंक।

निकिता ख्रुश्चेव मॉस्को में अपने ही लोगों के बीच रूसी भाषा में चिल्लाते, "जनता की आवाज कोई नहीं दबा सकता। यह आज नहीं तो कल क्रांति का रूप लेकर रहेगा।"

उनका यह भाषण अनुवाद होकर दुनिया भर में पसर जाता, और कोई पढ़ा-लिखा व्यक्ति एक भीड़ तैयार कर लेता। क्रांति जन्म ले लेती। भ्रष्ट शासकों के ख़िलाफ़। सामंतों के ख़िलाफ़। विदेशी शासन के ख़िलाफ़। रंगभेदियों के ख़िलाफ़। किसी भी असमानता के ख़िलाफ़।

यह मॉडल सफल होना ही था, क्योंकि दुनिया का कोई कोना नहीं, जहाँ असमानता नहीं। हालांकि ख्रुश्चेव की यह बात' जनता की आवाज को कोई दबा नहीं सकता 'उनके अपने देश पर ही लागू नहीं थी। वहाँ तो तानाशाही थी।

वियतनाम अमरीका की कब्र बना, वह भी बिना सोवियत फौजियों के। महाशक्ति अमरीका तो वियतनामियों से ही हार गयी, सोवियत को

प्रत्यक्ष आना भी नहीं पड़ा। यही हश्र उनका वर्षों बाद इथोपिया में भी हुआ।

लेकिन, केनेडी के पास विकल्प क्या था? साम्यवाद से भी तो लड़ना था।

जब उत्तरी वियतनाम में कम्युनिस्ट क्रांति हुई, तो वहाँ के सभी जमींदारों की जमीन छीन कर उन्हें प्रताड़ित किया गया या मार डाला गया। कई भाग कर दक्षिण आ गए। और, दक्षिण में क्या हो रहा था? ठीक उलट। एक तानाशाह डीएम का राज था, और सामंत गरीबों का खून चूस रहे थे। ऊपर से केनेडी की अमरीकी फौज आकर उन तानाशाह की सत्ता-रक्षक बन गयी, और स्थानीय नागरिकों को मनमर्जी पीटने भी लगी।

ज़ाहिर है, यहाँ भी क्रांति होनी ही थी।' वियत कॉन्ग 'नामक गुरिल्ला सेना तैयार हो गयी, जो डीएम के सहयोगियों को मौत के घाट उतारने लगी। गरीब जनता इनकी सेना में शामिल होती जा रही थी। उनकी नजर में अमरीकियों के लिए भी नफरत पैदा हो गयी। अब एक बार स्थानीय जनता क्रांति पर उतर जाए, तो विदेशी फौज भी क्या कर पाएगी? वह उनको दबाती, वे और भड़क जाते। सोवियत या चीन बस' बैक-अप 'थे, लड़ तो वियतनाम के लोग रहे थे।

क्यूबा में हार के बाद केनेडी वियतनाम में दूसरी हार की ओर बढ़ रहे थे। हालांकि उन्होंने कई बार कोशिश की कि वहाँ लोकतंत्र स्थापित हो, लोगों से घुलें-मिलें। उपराष्ट्रपति लिंडन जॉनसन वियतनाम पहुँचे, और स्थानीय लोगों को कलम बाँट आए जिस पर उनका नाम अंकित था। यही काम वह पहले कॉन्गो में कर चुके थे। लोगों के पास खाने को रोटी नहीं, और आप डिजाइनर कलम बाँट रहे हैं। इससे क्या होगा?

विद्यार्थियों से लेकर अफसर तक सड़क पर आ गए। बौद्ध भिक्षु धार्मिक असहिष्णुता के ख़िलाफ़ सड़क पर बैठ आत्मदाह कर रहे थे। हर दूसरा नागरिक वियतनाम के तानाशाह और अमरीकी फौज के ख़िलाफ़ आवाज उठा रहा था। उनकी अपनी सेनाएँ बन गयी। एक दिन राष्ट्रपति भवन उड़ा दिया गया, और तानाशाह डीएम को गोली मार दी गयी। दक्षिण वियतनाम आजाद हो गया।

प्रत्यक्ष आना भी नहीं पड़ा। यही हश्र उनका वर्षों बाद इथोपिया में भी हुआ।

लेकिन, केनेडी के पास विकल्प क्या था? साम्यवाद से भी तो लड़ना था।

जब उत्तरी वियतनाम में कम्युनिस्ट क्रांति हुई, तो वहाँ के सभी जमींदारों की जमीन छीन कर उन्हें प्रताड़ित किया गया या मार डाला गया। कई भाग कर दक्षिण आ गए। और, दक्षिण में क्या हो रहा था? ठीक उलट। एक तानाशाह डीएम का राज था, और सामंत गरीबों का खून चूस रहे थे। ऊपर से केनेडी की अमरीकी फौज आकर उन तानाशाह की सत्ता-रक्षक बन गयी, और स्थानीय नागरिकों को मनमर्जी पीटने भी लगी।

ज़ाहिर है, यहाँ भी क्रांति होनी ही थी।' वियत कॉन्ग 'नामक गुरिल्ला सेना तैयार हो गयी, जो डीएम के सहयोगियों को मौत के घाट उतारने लगी। गरीब जनता इनकी सेना में शामिल होती जा रही थी। उनकी नजर में अमरीकियों के लिए भी नफरत पैदा हो गयी। अब एक बार स्थानीय जनता क्रांति पर उतर जाए, तो विदेशी फौज भी क्या कर पाएगी? वह उनको दबाती, वे और भड़क जाते। सोवियत या चीन बस' बैक-अप 'थे, लड़ तो वियतनाम के लोग रहे थे।

क्यूबा में हार के बाद केनेडी वियतनाम में दूसरी हार की ओर बढ़ रहे थे। हालांकि उन्होंने कई बार कोशिश की कि वहाँ लोकतंत्र स्थापित हो, लोगों से घुलें-मिलें। उपराष्ट्रपति लिंडन जॉनसन वियतनाम पहुँचे, और स्थानीय लोगों को कलम बाँट आए जिस पर उनका नाम अंकित था। यही काम वह पहले कॉन्गो में कर चुके थे। लोगों के पास खाने को रोटी नहीं, और आप डिजाइनर कलम बाँट रहे हैं। इससे क्या होगा?

विद्यार्थियों से लेकर अफसर तक सड़क पर आ गए। बौद्ध भिक्षु धार्मिक असहिष्णुता के ख़िलाफ़ सड़क पर बैठ आत्मदाह कर रहे थे। हर दूसरा नागरिक वियतनाम के तानाशाह और अमरीकी फौज के ख़िलाफ़ आवाज उठा रहा था। उनकी अपनी सेनाएँ बन गयी। एक दिन राष्ट्रपति भवन उड़ा दिया गया, और तानाशाह डीएम को गोली मार दी गयी। दक्षिण वियतनाम आजाद हो गया।

अब अमेरिका की फौज यहाँ किसी वियतनामी राष्ट्राध्यक्ष के लिए नहीं लड़ रही थी। अब तो लड़ाई वियतनामियों और अमरीका के बीच थी। इसे उन्होंने साम्यवाद के ख़िलाफ़ लड़ाई कहा, लेकिन लड़ाई तो अब जनता के साथ थी। जीत कहाँ से होती?

यह तो दूर की बात थी। अमरीका के पड़ोस में ब्रिटिश गयाना था। वहाँ कम्युनिस्ट नेता और भारतीय मूल के गिरमिटिया वंशज छेदी जगन सत्ता में आ गए। केनेडी घबड़ाए कि दूसरा क्यूबा जन्म ले रहा है, जबकि ऐसी कोई बात नहीं थे। छेदी जगन एक लोकतांत्रिक नेता थे, और चुनाव जीत कर आए थे। उन्होंने केनेडी को चिट्ठी भी लिखी कि आप अपने प्रतिनिधि को यहाँ भेज कर देख लें। लेकिन CIA छेदी जगन को हटाने के लिए षडयंत्र करती रही, जिसमें जॉर्जटाउन में करवाया दंगा-आगजनी भी शामिल है। फिर भी वह उन्हें हिला न सकी। वह जनता के चहेते नेता थे।

केनेडी की' शांति सेना 'ज़रूर भविष्य की बड़ी कामयाबी रही। यही एकमात्र तरीका था जिससे साम्यवाद को मात दी जा सकती थी। लोगों के दिल को जीतना। लेकिन, सोवियत शांति से बैठने दे, तब तो ऐसी पहल हो। अक्तूबर, 1961 में सोवियत ने पृथ्वी का सबसे शक्तिशाली परमाणु बम परीक्षण किया, जिसका नाम था- 'ज़ार बॉम्बा'। आज तक इससे बड़े बम का परीक्षण नहीं हुआ। इसके विस्फोट का धुआँ 65 कि.मी. तक फैला था, और 150 कि.मी. दूर से नजर आ रहा था।

अमरीका को तो जवाब देना ही था। केनेडी भी परमाणु-परीक्षणों में लग गए। इसमें उनका ध्येय यह भी था कि अगर सोवियत से पीछे रह गए तो चुनाव नहीं जीत पाएँगे। केनेडी की मुश्किलें तो अभी बढ़ने वाली थी। फिदेल कास्त्रो ने स्वयं को मार्क्सवादी कम्युनिस्ट घोषित करते हुए सोवियत से कहा कि आप हमारी धरती पर अपनी परमाणु मिसाइल रख सकते हैं। क्यूबा में मिसाइल का अर्थ था कि एक झटके में वाइट हाउस से न्यूयॉर्क तक सब खत्म। यह एक परमाणु-प्रलय का आग़ाज था, और यही केनेडी की अंतिम अग्नि-परीक्षा थी।

इंग्लैंड के प्रधानमंत्री ने एक बार निकिता ख्रुश्चेव से पूछा, "आपको यह डर नहीं लगता कि दुनिया भर के सभी परमाणु बम फट गए तो क्या होगा? एक भी मानव बचेगा?"

उन्होंने मुस्कियाते कहा, “हाँ! अफ्रीकी तो बच ही जाएँगे। और ये चीनी लोग भी नहीं मरते। हम खत्म हो जाएँगे, दुनिया तो चलती ही रहेगी।”

◆ ◆ ◆

परमाणु प्रलय

वे तेरह दिन इतिहास के सबसे भयानक दिनों में थे। शीत युद्ध और विश्व-युद्ध में अंतर यह था कि शीत युद्ध में चौबीस घंटे लोग डरे रहते कि दुनिया खत्म हो जाएगी। यह डर तो स्वाभाविक था।

अमरीका ने अपने परमाणु मिसाइल इटली और तुर्की में लगा दिए थे, जिनसे सोवियत को उड़ाया जा सकता था। सोवियत के पास उनसे ताकतवर मिसाइलें और बम थे, लेकिन यह खेल तो टेक्सास के काउबॉय जैसा खेल था कि जिसने बंदूक पहले जेब से निकाली, वही जीतेगा।

सोवियत के पास ऐसे मिसाइल तो थे, जो एक महादेश से दूसरे महादेश जा सकते, लेकिन उनकी पहुँच हवाई द्वीप और अलास्का तक ही थी। अमरीका की मुख्यभूमि तक सटीक लक्ष्य साधने की कोई व्यवस्था नहीं थी। यूँ कहिए कि अमरीका एक झटके में सोवियत का क्रेमलिन उड़ा सकता था, लेकिन सोवियत के पास बैठे-बैठे वाइट हाउस उड़ाने की क्षमता नहीं थी। उनको हवाई जहाज से जाकर ही बम गिराना पड़ता।

तभी, कास्त्रो सोवियत घूमने आए। कास्त्रो पर हर वक्त अमरीका के हमले का खतरा रहता। अमरीका चाहती तो क्यूबा को एक रात में साफ

कर सकती थी। यह तो सोवियत का वरद-हस्त था कि अमरीका कुछ ऐसा कर नहीं पा रही थी। सोवियत भले बैठे-बैठे अमरीका न उड़ा पाता, लेकिन बर्लिन तो तबाह कर ही देता। अमरीका की पूँजीवादी सत्ता जो यूरोप में पल रही थी, वह तो खत्म हो जाती।

कास्त्रो ने सुझाया कि सोवियत क्यूबा में अपना 'न्यूक्लियर बेस 'बना ले। इससे क्यूबा भी सुरक्षित रहेगी, और सोवियत के पास भी अमरीका पर आक्रमण करने की क्षमता हो जाएगी। क्यूबा से अमरीका के किसी भी इमारत, किसी भी शहर को सुनिश्चित तौर पर उड़ाया जा सकता था। ख्रुश्चेव के लिए तो सोने पर सुहागा था। लेकिन, मिसाइल कोई ऐसी चीज तो है नहीं कि छुपा कर लिफाफे में भेज दिया। सोवियत से एक विशाल जहाज पर टनों वजन के मिसाइल छुपा कर क्यूबा पहुँचा देना तो टेढ़ी खीर थी।

अगस्त-सितंबर 1962 में सोवियत से कृषि-विशेषज्ञों के दस्ते आने शुरु हुए। ये लोग क्यूबा को खेती-बाड़ी के आधुनिक उपकरण लाकर दे रहे थे और कृषि सुझाव दे रहे थे। इनके साथ एक बड़ा दस्ता भी आया था, जिनको सोवियत ने एस्किमो कपड़े पहना कर भेजा था कि ध्रुव यात्रा पर निकले हैं। दो महीने में इस छद्म भेष में लगभग 45 हज़ार सोवियत सैनिक क्यूबा पहुँच गए। उनके साथ बारी-बारी से मिग विमान, जासूसी विमान, बॉम्बर सभी आने शुरु हो गए। आखिर सितंबर तक वे R-12 मिसाइल भी आ ही गए, जिन पर परमाणु बम लगाया जा सकता था।

अमरीका अपनी मध्यावधि चुनाव में व्यस्त था, और सोवियत ने बड़ी सफाई से किलाबंदी कर ली। उन्हीं दिनों एक अमरीकी सर्वेक्षण जहाज ने क्यूबा की कुछ हवाई तस्वीरें ली। पेन्टागन ने जब ये तस्वीरें देखी तो वे चौंक गए। उन्होंने केनेडी को दिखाया कि तमाम मिसाइल लग चुके हैं, और कभी भी हम पर हमला हो सकता है।

केनेडी के संयुक्त राष्ट्र राजदूत स्टीवेंसन ने सोवियत राजदूत को सार्वजनिक रूप से आड़े हाथों लिया, "क्या आपके परमाणु मिसाइल क्यूबा में हैं? हाँ या नहीं? अभी के अभी बताइए"

सोवियत राजदूत ने कहा, “यह कोई अमरीका की अदालत नहीं है कि मैं मुजरिम के कटघरे से जवाब दूँ। आपके प्रश्न का उत्तर आपको मिल जाएगा।”

“हाँ या नही? पूरी दुनिया देख रही है। आप यूँ पलड़ा नहीं झाड़ सकते।”

“नहीं। मेरी जानकारी में सिर्फ रक्षात्मक मिसाइलें लगी है, जो अमरीका के आक्रमण के बाद क्यूबा की सुरक्षा के लिए है। किसी हमले के लिए नहीं।”

“यानी कोई परमाणु बम क्यूबा में मौजूद नहीं?”

“नहीं”

यह बात ग़लत नहीं थी। परमाणु बम अभी आए नहीं थे। और अगर आए भी थे, तो सोवियत राजदूत को मालूम नहीं था। लेकिन, क्यूबा के पेट में यह बात पची नहीं। वह डींग हाँकने निकल पड़े।

अक्तूबर में क्यूबा के राष्ट्रपति ओस्वाल्दो (कास्त्रो प्रधानमंत्री थे) ने भांडा फोड़ दिया और कहा, “हमारे पास ऐसी ताकत आ गयी है कि अब अमरीका को खत्म कर सकते हैं।”

केनेडी ने ख़ुश्चेव से बात की, तो उन्होंने कहा कि यह खबर ग़लत नहीं है। हमारे परमाणु बम क्यूबा पहुँच चुके हैं या पहुँचने वाले हैं, यह नहीं बता सकता। लेकिन, इतना कहूँगा कि हम अमरीका पर आक्रमण नहीं कर रहे और आप भी क्यूबा पर आक्रमण न करें।

अब केनेडी के पास विकल्प कम थे। पहला विकल्प तो क्यूबा पर आक्रमण ही था, लेकिन इसका अर्थ था सोवियत का पलटवार। दूसरा विकल्प था ख़ुश्चेव पर अंतरराष्ट्रीय दबाव डाल कर परमाणु बम हटवाना। और तीसरा विकल्प था— क्वारांटाइन।

केनेडी ने तीसरा विकल्प चुना और क्यूबा के चारों तरफ से समुद्री रास्ते को घेर लिया गया। फैसला हुआ कि कोई भी जहाज जो क्यूबा जा रही होगी, उसको रोक कर जाँचा जाएगा। अमरीका के परमाणु बमों से लैस

जहाज क्यूबा की परिधि में चक्रव्यूह बना चुके थे। केंद्र में इस छोटे से देश में फिदेल कास्त्रो ने युद्ध आपातकाल जारी कर दिया।

सोवियत से परमाणु बम का एक जहाज चल चुका था। उसे निर्देश थे कि अगर कोई रोकने की कोशिश करे तो परमाणु बम से आक्रमण कर दिए जाएँ। दो महाशक्तियों के परमाणु बम अब कैरीबियन में टकराने वाले थे। दुनिया का पहला 'न्यूक्लियर होलोकॉस्ट'। तीसरे और सबसे विकराल विश्व-युद्ध का बिगुल बजने वाला था। न सिर्फ अमरीका-रूस, बल्कि उसी वक्त एशिया की दो बड़ी शक्तियाँ भी आमने-सामने थी।

भारत-चीन और सोवियत-अमरीका एक साथ, एक समय, पृथ्वी के दो भागों पर युद्ध लड़ने वाले थे।

अमेरिका ने न सिर्फ तुर्की बल्कि जापान में भी परमाणु मिसाइल रखे थे। सोवियत दोनों तरफ से घिर गया था। क्यूबा में परमाणु मिसाइल रखना इस शीत युद्ध में नैतिक रूप से ग़लत नहीं कहा जा सकता। परमाणु बम का विरोध अलग बात है, लेकिन खेल की शुरुआत हिरोशिमा के समय से ही अमेरिका ने की।

जब मशहूर कवि रॉबर्ट फ्रॉस्ट मॉस्को गए और ख़ुश्चेव से मिले, तो ख़ुश्चेव ने कहा, "तोलस्तॉय ने मैक्सिम गोर्की को बुढ़ापे और सेक्स के बारे में क्या कहा था? इच्छा तो अब भी वही है, लेकिन ताकत नहीं बची। अमरीका की वही हालत है।"

केनेडी यह सुन कर भड़क गए कि ख़ुश्चेव अमरीका को बूढ़ा शेर कह रहे हैं। उन्हें अब सोवियत से लड़ना ही था। बॉबी केनेडी फिदेल कास्त्रो को मरवाने की योजना बना ही रहे थे। कई माफ़िया गैंगस्टर भी यह योजना बना रहे थे। लेकिन, कास्त्रो को मारना असंभव हो रहा था।

जब सोवियत ने क्यूबा में मिसाइल रखे तो अमरीका आक्रमण कर सकता था, लेकिन बॉबी केनेडी ने कहा, "हम अगर क्यूबा में बम गिराएँगे, तो यह पर्ल हार्बर जैसी ही घटना होगी। क्यूबा के निर्दोष नागरिक मारे जाएँगे। हम दुनिया में मुँह दिखाने लायक नहीं रह जाएँगे।"

आक्रमण नहीं करना, और सोवियत के सभी खतरनाक मिसाइल क्यूबा से हटवाना। यह कैसे मुमकिन होगा? केनेडी ने सोवियत के राजदूत से बात की।

उन्होंने कहा, “राष्ट्रपति महोदय! अगर आप आक्रमण नहीं कर रहे, तो आपको घबड़ाने की जरूरत नहीं। सोवियत कभी भी आप पर परमाणु आक्रमण नहीं करेगा। आप निश्चिंत रहें।”

लेकिन जब केनेडी ने क्यूबा को चारों तरफ से घेर कर क्वारांटाइन किया, और सोवियत का परमाणु बम से भरा जहाज कूच कर गया तो उन्होंने दुबारा पूछा, “क्या सोवियत के जहाज वापस लौट रहे हैं, या वे क्यूबा की तरफ आ रहे हैं”

सोवियत राजदूत ने कहा, “वापस लौटने का कोई आदेश नहीं, और न ही आपको हमारे जहाज को रोकने का अधिकार है। यह अंतरराष्ट्रीय समुद्र है, जहाँ आपका कोई अधिकार नहीं।”

केनेडी ने कहा, “फिर तो भगवान ही मालिक है।”

परमाणु बम से भरा जहाज क्यूबा की ओर बढ़ता आ रहा था। उसके आगे सोवियत का एक तेल से भरा जहाज और एक कैरीबियन क्रूज़ जहाज चल रहा था। अमेरिका ने दोनों को रोक दिया। हालाँकि जाँच कर दोनों को जाने दिया गया।

ख़ुश्चेव को जब यह खबर मिली कि उनका जहाज रोका गया, वह भड़क गए। उन्होंने क्यूबा को आदेश दिया कि अपने मिसाइल छोड़ने के लिए तैयार रहें।

लेकिन, यह सब दिमागी खेल था। शतरंज की तरह। ख़ुश्चेव अमरीका को डरा रहे थे, और अमरीका ख़ुश्चेव को।

ख़ुश्चेव एक ओपेरा देख रहे थे, जब उनको बताया गया कि परमाणु बम का जहाज अब क्यूबा के करीब हैं। यह ओपेरा एक दर्द भरा ओपेरा था, जो एक अमरीकी कलाकार का कार्यक्रम था। यह अजीब बात थी कि एक तरफ सोवियत-अमेरिका युद्ध के मुहाने पर हैं, और मॉस्को में अमरीकी कलाकार से ख़ुश्चेव प्रेम से बात कर रहे हैं।

कार्यक्रम के बाद ख्रुश्चेव ने केनेडी को टेलीग्राम भेजा, “एक रास्ता है। आप अगर अपने मिसाइल तुर्की से हटा लें, तो हम अपने मिसाइल क्यूबा से हटा लेंगे।”

केनेडी यह संदेश पाकर खुश हो गए। उन्होंने बॉबी को सोवियत राजदूत के पास भेजा।

उन्होंने कहा, “हम तुर्की से अपने मिसाइल हटा लेंगे। और न ही क्यूबा पर आक्रमण करेंगे।”

अब तक परमाणु बम से भरे सोवियत जहाज अमरीकी जहाजों से महज कुछ मील दूर थे। वाइट हाउस में हो रहे इस डील की उन्हें खबर ही नहीं थी। एक परमाणु बम से लैस पनडुब्बी भी समंदर में नीचे चल रही थी और आक्रमण को तैयार थी।

आखिरी समय में अमरीकी जहाजों ने देखा कि वे पीछे मुड़ने लगे। सोवियत से लंबी दूरी तय कर आया एक जहाज क्यूबा से महज कुछ मील के फासले पर वापस लौटने लगा। यह अकल्पनीय था। एक विश्व-युद्ध आखिरी मुकाम पर आकर टल गया।

इतना ही नहीं, सोवियत ने क्यूबा से अपने मिसाइल भी हटा लिए। बदले में अमेरिका ने तुर्की से अपने ‘जूपिटर ’मिसाइल हटा लिए।

निकिता ख्रुश्चेव ने रेडियो पर आकर पूरी दुनिया को सुनाते हुए कहा, “आज हम दो देशों ने एक युद्ध टाल दिया। यह मानवता की जीत है।”

फिदेल कास्त्रो तो कहीं के नहीं रहे। वह भड़क गए और कहा, “ये दो बड़े देश हम छोटे देशों के साथ खेल खेलते रहे। हमें बेवकूफ बनाते रहे। आज सोवियत ने अपने फायदे के लिए हमें इस्तेमाल किया। लेकिन यह ध्यान रहे, हम क्रांति से जन्मे लोग हैं। हमें कोई दबा नहीं सकता।”

केनेडी का दिया वचन अमेरिका ने निभाया। अमेरिका ने क्यूबा पर कभी आक्रमण नहीं किया, हालांकि संबंध तोड़ कर रखा। 2015 में आखिर दोनों देशों के संबंध बेहतर हुए, और एक-दूसरे देश आना-जाना सुलभ हुआ। कास्त्रो की मृत्यु अगले साल 2016 में हो गयी।

लेकिन, केनेडी की मृत्यु तो तभी लिख दी गयी, जब उन्होंने विश्व-युद्ध रोक कर क्यूबा को जीवन-दान देने का संकल्प लिया। केनेडी ने उस वक्त सिर्फ क्यूबा का युद्ध नहीं रोका था, उन्होंने शायद एक और युद्ध रोका था।

क्यूबा संकट के अगले ही महीने, चीन ने भारत से अपनी सेना का रुख एक दिन वैसे ही वापस मोड़ लिया, जैसे सोवियत ने क्यूबा की ओर बढ़ती जहाजों का। लेकिन, इसमें छुपी केनेडी और ख्रुश्चेव की कूटनीतिक पेंच इतिहास में दब कर रह गयी।

◆ ◆ ◆

भारत चीन युद्ध

“जब भारत और चीन मिलते हैं, तो पूरी दुनिया देखने लगती है।”

- झी जिन्पिंग (प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी से मुलाकात अवसर पर, 2014)

भारत और अमरीका दुनिया के दो सबसे बड़े लोकतंत्र। भारत और चीन दुनिया की दो सबसे बड़ी जनसंख्या। अमरीका पूँजीवादी, तो चीन साम्यवादी। भारत को एक चुनना हो, तो किसे चुने? क्योंकि अमरीका और चीन तो साथ हो ही नहीं सकते। इन तीनों का यह त्रिकोण जैसे ही हिलेगा, युद्ध छिड़ जाएगा। और 1962 में लगभग यही हुआ। इतिहासकारों ने भले इस बिंदु पर कम लिखा, लेकिन अगर अमरीका न होता, तो शायद न युद्ध शुरु होता और न खत्म। केनेडी पर मेरे लिखने का निजी ध्येय भी कहीं न कहीं, यही है। 1962 के बाद भारत का साम्यवादी देशों से मोह टूटना शुरु हुआ और अमेरिका से निकटता बढ़ती चली गयी।

लेकिन, भारत द्वारा लड़े गए सबसे महत्वपूर्ण और शौर्यपूर्ण युद्ध की बात कम की जाती है, क्योंकि हम हार गए। दस्तावेज़ वर्षों तक के लिए दब गए। उस वक्त भारतीय सेना पर बन रहे कुछ फ़िल्म भी नहीं रिलीज हुए। यह काला इतिहास कह कर भुला दिया गया। मैं इस इतिहास को तीसरे बिंदु से लिखने का प्रयास करता हूँ। अमेरिका के बिंदु से।

आपने पहले पढ़ा कि सीनेटर केनेडी 1951 में भारत आए थे और नेहरू से मिल कर गए। उसके बाद भारत-सोवियत संबंध तो बनते रहे, भारत-अमरीका संबंध नहीं बने। जबकि पाकिस्तान अमरीका का चहेता बन चुका था। पेशावर में, और ढाका में, अमरीकी फौजी मौजूद थे। अमरीका के ख़ुफ़िया जहाज मौजूद थे। आपने यह भी पढ़ा कि (पश्चिमी) पाकिस्तान से सोवियत की टोह लेने उड़ा जहाज मार गिराया गया। उसके बाद सोवियत की ओर आँख दिखाना तो बंद हुआ, लेकिन पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) से अमरीकी जहाज चीन की ख़ुफ़िया तस्वीरें लाते। इसके बदले में पाकिस्तान को लाखों डॉलर देते, जो वहाँ के भ्रष्ट नेता और सेना अधिकतर खा-पी जाते; अथवा कश्मीर के लिए उग्रवादी कैम्प आदि चलाते।

साल था 1956। भारत के प्रधानमंत्री पंडित नेहरू के पास दो लोग मिलने आते हैं। पहले थे तिब्बत से पलायित दलाई लामा, जो शरण मांगने आए थे। और दूसरे थे चीन के राष्ट्राध्यक्ष चाउ एन लाई, जो दलाई लामा को माँगने आए थे। नेहरू दोनों को गोल-मटोल जवाब देकर निकल गए अमरीका। और क्या करते? शरण देने की इच्छा भी थी, और चीन से दोस्ती भी थी।

दोस्ती भी ऐसी-वैसी नहीं। आखिर दोनों देश के मध्य मीलों लंबी सीमा थी। सदियों से दोनों के मध्य कोई सीधी लड़ाई नहीं हुई। माओ-त्से-तुंग से चाउ एन लाइ तक से बातचीत होती रहती थी। 1951 में जब संयुक्त राष्ट्र का सान फ़्रांसिस्को में बुलावा आया, नेहरू नहीं गए; क्योंकि उन्होंने चीन को न्यौता नहीं दिया था।

जब चाउ एन लाइ ने दलाई लामा को वापस भेजने और चीन के अंदरूनी मामलों में दखल न देने कहा, वह धर्मसंकट में पड़ गए। वह अमरीका के राष्ट्रपति आइजनहावर से मिलने पहली बार गए कि कुछ रास्ता निकले।

आइजनहावर भी उनको सीधे अपने विशाल फार्म पर ले गए कि बैठ कर आराम से बतियाएँगे। नेहरू जी के लिए मछली, वाइन वग़ैरा भी मंगवाई गयी।

नेहरू ने कहा, "आप चीन को सुरक्षा परिषद में सीट दिला दीजिए। उनकी हमारे साथ लंबी सीमा है, विशाल सेना है, सबसे बड़ी जनसंख्या है। हमारे जैसे देश सोवियत या अमेरिका के साथ नहीं, बल्कि चीन से अच्छा संबंध चाहते हैं। आखिर पड़ोसी तो वहीं है।"

आइजनहावर ताजा-ताजा कोरिया में चीन से हार कर आए थे, तो वह भड़क गए। उन्होंने कहा, "यह नहीं हो सकता।"

नेहरू जी ने दूसरी बात रखी, "अच्छा। पुर्तगाल आपके NATO में सहयोगी हैं। उनसे कहिए कि भारत से बोरिया-बिस्तर बाँध कर अब जाएँ। वह तो अंग्रेज़ों से भी पहले आए थे।"

आइजनहावर ने बाद में चौदह पृष्ठों का नोट लिखा, जिसकी एक पंक्ति थी— 'नेहरू अच्छा आदमी है, लेकिन उसकी बातें मुझे बिल्कुल समझ नहीं आती।'

दूसरी ओर, तिब्बत पर पहले ब्रिटिश का नियंत्रण था, जबकि वह सदियों से चीन का अधिकार-क्षेत्र रही थी। एक अंग्रेज़ मैकमोहन ने ब्रिटिश राज के हिसाब से सीमा तो बना दी, लेकिन चीन इसे मानने के लिए कभी तैयार न हुआ। जब भारत आजाद हुआ, और चीन में माओ-त्से-तुंग आए तो तिब्बत पर चीन ने कब्जा कर लिया। इसके बाद वह तिब्बत से पश्चिम की जमीन जो भारत में थी (अक्साइ-चिन), उसे अपना मानते रहे।

नेहरू के पास तिब्बत को छुड़ाने की ताकत नहीं थी। भारतीय सेना यूँ भी अपने पश्चिमी और पूर्वी सीमाओं पर पाकिस्तान के खुराफातों से त्रस्त थी। नेहरू और चाउ एन लाई मिलते रहे और तिब्बत की चर्चा करते रहे। लेकिन कुछ ख़ास हासिल न हो सका।

अमरीका को तिब्बत में कुछ संभावना दिखी। ख़्वाह-म-ख़्वाह ही दिखी। और कहीं न कहीं, वही वजह भी बनी कि भारत को एक युद्ध झेलना पड़ा।

समकालीन इतिहास इस बात का सबूत है कि अमरीका ने न जाने कहाँ-कहाँ आग लगायी।

उस वक्त का अमरीकी खुराफात तो हद ही था। तिब्बत से तिब्बतियों को पहले पूर्वी पाकिस्तान लाते, फिर उनको हवाई जहाज से कोलोरैडो ले जाते। उनको गुरिल्ला युद्ध का प्रशिक्षण देकर वापस ढाका भेजते, और वहाँ से तिब्बत। अब वे चंद तिब्बती गुरिल्ले विशाल चीनी सेना का मुक़ाबला करेंगे। खुद अमरीका तो लड़ न पाया, इन्हें शहीद होने भेज दिया। और यह सब केनेडी काल तक चल रहा था।

इस पूरी रणनीति में पाकिस्तान खूब धन लूट कर अमरीका के CIA का सहयोग दे रहा था, लेकिन दलाई लामा की वजह से चीन का गुस्सा भारत पर उतर रहा था। चीन को संदेह था कि भारत तिब्बती गुरिल्ला सेना को मदद कर रही है। वहीं, पाकिस्तान अमरीका के धन से भारत के ख़िलाफ़ क़िलाबंदी कर रहा था।

अंतरराष्ट्रीय नीति विशेषज्ञ ब्रूस रीडल लिखते हैं—

“CIA की गतिविधियों ने चीन को भारत पर 1962 में आक्रमण करने पर मजबूर किया। एक ऐसा आक्रमण जिससे चीन और अमरीका में दुश्मनी कायम हुई। भारत और चीन की दोस्ती हमेशा के लिए खत्म हुई। पाकिस्तान और चीन करीब आने लगे। भारत अमरीका के करीब जाने लगा।

इस युद्ध ने विश्व के सभी समीकरणों को बदल कर रख दिया।”

थोड़ी आग लगी भी, और थोड़ी लगायी भी गयी। दलाई लामा को तिब्बत से भगा कर लाने वाले CIA के लोग थे। अमरीका को पल-पल की रिपोर्ट भेजी जा रही थी। यह एक सोची-समझी चाल थी। वह चाहते तो अपने सहयोगी देश पाकिस्तान ले जा सकते थे, अमरीका ले जा सकते थे, लेकिन वह भारत लाए। और भारत को भी शरण देना ही पड़ा।

चीन और भारत के युद्ध की यह चिनगारी किसने जलाई, यह अब रहस्य नहीं। क्यों जलायी, यह भी रहस्य नहीं। रहस्य तो यह है कि भारत को इससे क्या मिला? एक चीज तो ज़रूर मिली कि बुद्ध की धरती पर

बौद्ध-गुरु को शरण का अधिकार मिला। लेकिन, यह जब अमरीका की कूटनीति का एक पैंतरा हो, तो बात सहिष्णुता मात्र की नहीं रह जाती।

उसी साल (1959) में आइजनहावर पाकिस्तान की राजधानी कराची आए और फौजी तानाशाह अयूब ख़ान को कहा, "राजधानी बदल डालो। यह बहुत ही भीड़-भाड़ वाली जगह है।"

अमरीका की धौंस इसी से साबित होती है कि अयूब ख़ान ने वाकई राजधानी बदल कर इस्लामाबाद बना लिया!

उसके बाद वह काबुल गए और प्रधानमंत्री दाऊद से पूछा कि सोवियत से खतरा तो नहीं? उन्होंने कहा, "हमें तो बस एक ही मुल्क से खतरा है। वो है आपका चहेता— पाकिस्तान!"

जब वह घूम-घाम कर भारत पहुँचे तो चीन ही मुद्दा रहा। भारत को ख़ुफ़िया जानकारी मिली थी कि चीन ने तिब्बत से मुख्य भूमि तक एक सड़क बनायी है जो 'अक्साइ-चिन 'से गुजरती है। आइजनहावर ने दलाई लामा से मिलना चाहा तो नेहरू ने मना कर दिया कि इससे तो यही संकेत जाएगा कि अमरीका के सहयोग से हमने भगाया है। (जबकि हमने तो भगाया नहीं था, वह ले आए गए थे)

जब नेहरू ने चाउ एन लाइ से अकसाइ-चिन की शिकायत की, तो उन्होंने संदेश भेजा, "वह इलाका यूँ भी तुम्हारे काम का नहीं। तुम अरुणाचल वाला इलाका रख लो, जो दरअसल हमारा है।"

नेहरू को पहली बार लगा कि चीन ने उनकी पीठ में छुरा घोंप दिया है। वह ख़्वाह-म-ख़्वाह अच्छे संबंध बनाते रहे। पंचशील की रट लगाते रहे। चाउ एन लाइ ने नेहरू को बीजिंग बुलाया और नेहरू ने आमंत्रण ठुकराते हुए किसी भी समझौते से मना कर दिया। अब इन दो मित्रों में शक के बीज पनप चुके थे।

और फिर केनेडी आए।

केनेडी के प्राथमिकताओं में भारत काफी ऊपर था। बल्कि वह पहले राष्ट्रपति थे, जिन्होंने यह बात रखी कि भारत आगे जाकर एक मजबूत सहयोगी आर्थिक शक्ति बनेगा। यही वजह थी कि उन्होंने अपने हार्वर्ड

समय के शिक्षक रहे अर्थशास्त्री जे. के. गालब्रेथ को भारत का राजदूत बना कर भेजा।

ऐसा नहीं कि केनेडी भारत का भला चाह रहे थे। इस मुग़ालते से तो किसी भी देश को निकल ही जाना चाहिए कि सोवियत या अमरीका किसी का भला चाह रहे थे। चाहे क्यूबा हो, पाकिस्तान हो, जर्मनी हो या भारत। चीन कम्युनिस्ट होकर भी इस भ्रम से बाहर आकर सोवियत से दूरी बना रहा था।

सीनेटर केनेडी ने तो 1959 में ही कह दिया था, "भविष्य में दुनिया का एक ही सत्ता-संघर्ष देखने लायक होगा। और वह सोवियत-अमरीका के मध्य नहीं होगा। वह होगा एशिया की दो शक्तियों भारत और चीन के मध्य। हमें बस यह कोशिश करनी है कि कम्युनिस्ट चीन और लोकतांत्रिक भारत के बीच यह टक्कर बराबरी की हो। अभी चीन आगे चल रहा है। हमें यह देखना है कि चीन को रोकना आसान है, या भारत को आगे बढ़ाना।"

एक बात उनके मन में स्पष्ट थी कि पाकिस्तान एक मामूली देश है, जिससे बड़ी आशाएँ रखना बेकार है। रिचर्ड निक्सन इसके उलट कहते थे, "पाकिस्तान हमारे लिए कुछ भी करेगा, लेकिन भारत पर विश्वास नहीं कर सकते"।

केनेडी के आने के बाद भी तिब्बती गुरिल्ला तिब्बत में गिराए जाते रहे। नेपाल का सीमावर्ती इलाका 'मस्तांग 'तिब्बतियों का छोटा सा गढ़ था। लेकिन, चीन अब उन सबको पकड़ कर मारना या कैदी बनाना शुरू कर चुकी थी। उसे यह जानकारी मिल गयी थी कि पूर्वी पाकिस्तान और नेपाल से लोग आ रहे हैं। लेकिन पाकिस्तान तो अमरीका की मित्र थी ही। उसे शिकायत भारत से थी क्योंकि ये जहाज भारत के ऊपर से ही उड़ कर आते थे। और सबसे बड़ी बात कि तिब्बतियों के राजा भारत के धर्मशाला में अपने तमाम अनुयायियों के साथ रहने लगे थे। अब जहाँ राजा होगा, सेना भी तो वहीं की हुई। और थी भी। भारत से ही ये तिब्बती नेपाल के रास्ते लड़ने के लिए पहुँचने लगे थे।

जे. के. गालब्रेथ ने केनेडी को कहा, “यह सब बंद कीजिए। एक तो आप इन तिब्बतियों को मौत के मुँह में ढकेल रहे हैं। ऊपर से भारत और चीन के बिगड़ते संबंध को और आग दे रहे हैं।”

केनेडी ने अब इस आग में घी डाल दिया, और यह यज्ञ का हवन बन गया। उन्होंने भारत को एक बिलियन डॉलर की सहायता राशि भेज दी। जहाँ उस राशि से भारत में IIT कानपुर जैसे संस्थान खड़े होने लगे, पाकिस्तान का मुँह टका सा रह गया। गुस्से में अयूब ख़ान ने अमरीकी फौज को अपनी पूर्वी पाकिस्तान हवाई पट्टी इस्तेमाल करने से रोक दिया।

अयूब ख़ान को तो जैकलीन केनेडी ने ऐसी अद्वितीय दावत पर बुलाया कि वह थोड़ी देर रूठ कर, मान ही गए। जॉर्ज वाशिंगटन के घर माउंट वर्नॉन पर शाही दावत आज तक के इतिहास में मात्र अयूब खान को ही दी गयी है। लेकिन, डॉलर की नदियाँ अब भारत की तरफ (भी) बहने लगी।

टूटती अर्थव्यवस्था, चीन से मोहभंग और अपने मंद पड़ते आभामंडल से जूझते नेहरू गुटनिरपेक्षता से पल्ला झाड़ने लगे। अमरीका और भारत औपचारिक रूप से, गाजे-बाजे के साथ दोस्त बन चुके थे। चीन का शक यकीन में बदल गया। रणभेरियाँ बजने का वक्त आ गया।

◆ ◆ ◆

पंचशील भंग हो गया। प्रश्न यह है कि किसने पहले किया?

पंचशील एक बौद्ध सिद्धांत है, जिस नाम को एक राजनैतिक छवि चाउ एन लाइ, सुकार्णो (इंडोनेशिया) और पंडित नेहरू ने दी। जब इस पर 1954 में हस्ताक्षर हुए, तो भारत में ‘हिन्दी चीनी भाई भाई ’का नारा गूँजा। जब प्रधानमंत्री मोदी जी से झी जिन्पिंग मिलने आए

तो उन्होंने भी पंचशील के पालन की बात कही। ऐसी मान्यता थी कि इन नियमों से कभी भी दो पड़ोसी देशों में युद्ध न होगा।

ये हैं, एक दूसरे की—

1. प्रादेशिक अखंडता/प्रभुसत्ता का सम्मान
2. आक्रमण न करना
3. आंतरिक मामलों में टाँग न अड़ाना
4. समानता और परस्पर लाभ (व्यापार-संबंध)
5. शांतिपूर्ण सहअस्तित्व

दलाई लामा को शरण देकर भारत ने पंचशील का तीसरा बिंदु भंग किया और अक्साइ-चिन में सड़क बना कर चीन ने पहला बिंदु। आई.बी. चीफ के अनुसार, चीन द्वारा पंचशील भंग कुछ महीने पहले हुआ।

दलाई लामा भारत में ही रहना चाहते थे। अमरीका भी उन्हें यहीं रखना चाहता था, ताकि तिब्बत पास रहे। CIA ने एक गुप्त काम और किया कि चीन-विरोधी प्रोपोगैंडा भारत में चलाना शुरू किया। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के ख़िलाफ़ भी प्रोपोगैंडा चले और उन्हें चीन का सहयोगी कहा गया (जो वे सिद्धांतत: थे भी)। यह समय ऐसा था जब CIA और KGB, दोनों हमारे देश में अतिसक्रिय हो रहे थे, और अगले दो दशक तक रहे।

दलाई लामा यूँ ही नहीं पटक दिए गए, एक माहौल बनाया गया। चक्रव्यूह भी कह सकते हैं। वह तीन साल पहले भी भारत आए थे, चीन के पंचशील आपत्ति पर वापस भेज दिए गए और फिर भाग आए। इस बार जब आए तो अक्साइ-चिन की घटना हो गयी थी। तो दलाई लामा कूटनीतिक प्रतिशोध के माध्यम भी बन गए। मानवाधिकार भी था ही कि एक पलायित शरणार्थी भारत में शरण माँगने आए तो उसे कुछ समय रखा ही जा सकता है। तिब्बत कभी आजाद हुआ नहीं; लंबा टिक गए, यह और बात है।

एक और बिंदु जो नहीं भूलना चाहिए, वो यह कि जब लड़ाई कम्युनिस्ट चीन से हो तो सोवियत पर भरोसा नहीं किया जा सकता। इसलिए अमरीका द्वारा लाए गए शरणार्थी को रखने में भलाई थी। बदले में

अमरीका ने धन और युद्ध-सहयोग का सब्ज़बाग़ तो खैर दिखाया ही। हालांकि केनेडी ने अयूब ख़ान को वचन दिया था कि बिना उनकी सलाह लिए वे भारत को कोई भी हथियार नहीं देंगे।

खैर, अयूब ख़ान के वचन तो वह एक डिनर खिला कर तुड़वा सकते थे।

केनेडी ने नेहरू को 1961 में अपने पारिवारिक शाही बंगले पर ठहराया था, लेकिन उनके अनुसार यह सबसे नीरस अनुभव रहा। नेहरू बूढ़े हो चले थे, और कुछ भी बोल नहीं रहे थे। जैकलीन केनेडी उनसे थोड़ा-बहुत बतियाती रही।

केनेडी ने कहा, "यह कभी अच्छे नेता रहे होंगे। अब यह किसी काम के नहीं लगे। यह बहुत लंबे समय तक रह गए।"

केनेडी ने उनकी तुलना फौजी और मुखर वक्ता अयूब ख़ान से की और नेहरू को कमजोर आँका। लेकिन, वह चौंक गए जब नेहरू के लौटने के पाँच महीने बाद भारतीय फौज ने पुर्तगाली गोवा को आसानी से रौंद दिया। पुर्तगाल अमरीका का सहयोगी देश था और सीनेट में भारत के इस आक्रामक कदम की निंदा हुई।

केनेडी ने संदेश भेजा, "आप इतने बड़े फैसले से पहले मुझे बता तो देते। मैं सँभाल लेता। अब संयुक्त राष्ट्र में क्या जवाब देंगे?"

केनेडी का आकलन पूरी तरह से ग़लत नहीं था। नेहरू जी वाकई बूढ़े हो चले थे, और चीन के विश्वासघात के बाद टूट चुके थे। जनता में भी नेहरू की जो छवि पचास के दशक में थी, वह अब खत्म हो चुकी थी। डोर अब रक्षा-मंत्री वी. के. के. मेनन खींच रहे थे। और बड़े ही बेतरतीब खींच रहे थे। अमरीका-विरोधी तो वह जगजाहिर थे ही, लेकिन उनका प्रशासनिक रवैया भी मनमानी और यथार्थ से परे था।

ऑस्ट्रेलियाई लेखक-पत्रकार नेविल मैक्सवेल लिखते हैं, "युद्ध चीन ने नहीं, नेहरू ने शुरू किया।"

दलाई लामा के आने के बाद ही भारतीय फौज को एक निर्देश था कि सीमा पर जितना आगे बढ़ सकें, बढ़ जाएँ और चीन के सप्लाई काट दें (फॉर्वार्ड पॉलिसी)। अक्साइ-चिन तो बीहड़ और अति-विषम इलाका

था, लेकिन अरुणाचल की ओर यह शुरू कर दिया गया। मुश्किल यह थी कि भारत की फौज के पास प्रथम विश्व-युद्ध के काल-खंड के घिसे-पिटे हथियार थे, और टुकड़ियाँ छोटी-छोटी थी। तो कहाँ आगे बढ़ते और कितना आगे बढ़ते? अक्साइ-चिन जब तक भारतीय फौज की टुकड़ी पहुँची, तो देखा कि उनसे पाँच गुणा बड़ी चीनी फौज आधुनिक हथियारों के साथ सामने खड़ी है। चीन ने दोनों सीमाओं पर पहुँचने के लिए बढ़िया सड़कें बना ली थी, और भारतीय फौजी अब भी पहाड़ चढ़ कर आ रहे थे। कहीं कोई मुकाबला ही नहीं था। न संख्या में, न तकनीक में और न रणनीति में।

इतने में भारत की इंटेलिजेंस ब्यूरो के अध्यक्ष भोला नाथ मलिक को खबर मिली— अयूब ख़ान कश्मीर पर हमले की योजना बना रहे हैं और चीन के आक्रमण करते ही उनकी फौज घुस सकती है। दो मोर्चों पर भारत आखिर कैसे लड़ पाएगा?

एक ही रास्ता था। केनेडी। जो खुद अभी क्यूबा में परमाणु-संकट से जूझ रहे थे और सोवियत के परमाणु मिसाइल कभी भी गिर सकते थे।

मिलियन डॉलर प्रश्न भी यही है कि आखिर चीन ने हमले का वही वक्त क्यों चुना? जब सोवियत अमरीका आमने-सामने थे, तभी चीन भारत पर आक्रमण करता है। और सोवियत के पीछे लौटते ही, खुद भी लौट जाता है। क्यूबा, पाकिस्तान और भारत तो बस कठपुतलियाँ थी, इन्हें आपस में मोल-भाव करना था।

चीन को सुरक्षा परिषद की वह सीट चाहिए थी, जो उससे छिन गयी थी। एशिया के मामलों (भारत, पाकिस्तान, तिब्बत, वियतनाम, कोरिया) में अमरीका की दख़लंदाज़ी से चीन को समस्या थी। अक्तूबर 1962 समकालीन इतिहास का पहला वैश्विक शक्ति-प्रदर्शन था। और इस 'शो-डाउन 'के बाद इन्होंने आपस में डील कर लिए। सोवियत-अमरीका की डील तो पहले लिख चुका, चीन-अमरीका डील आखिर क्या थी?

◆ ◆ ◆

"एटम बम काग़ज का शेर है। हम विशाल देश हैं। अगर कोई हम पर एटम बम गिरा भी दे, दस लाख मर भी जाएँ, तो भी हम करोड़ों की संख्या में लड़ने के लिए जिंदा होंगे।"

- माओ त्से तुंग, जवाहरलाल नेहरू से. अक्तूबर, 1954

अमरीका और सोवियत कभी आमने-सामने ढंग से लड़े ही नहीं। गीदड़-भभकी ही चलती रही। यह बात केनेडी ने पहले ही कह दी थी, कि असल खतरा चीन है।

चीन ने अमरीका को पहले कोरिया-युद्ध और बाद में वियतनाम-युद्ध में शिकस्त दी। सोवियत खत्म हो गया, लेकिन चीन आज भी दुनिया के सबसे ताकतवर देशों में है। शस्त्र से भी, अर्थ से भी। चीन सोवियत पर भी निर्भर नहीं रहा, बल्कि बाद में खुल कर अलग हो गया। चीन की साम्यवादी धारा भिन्न-भिन्न देशों में माओवाद नाम से अलग प्रचारित की गयी। लेनिनवाद से अधिक आक्रामक रूप में।

ब्रिगेडियर दलवी को चीन ने युद्ध-कैदी बनाया था। उन्होंने चीन की तैयारी अपनी आँखों से देखी। वह लिखते हैं, "यह सोचना हास्यास्पद है कि हमने चीन को भड़काया और उसने हमला कर दिया। वहाँ की तैयारी बिल्कुल सोची-समझी थी और लंबे समय से की जा रही थी। एक-एक पोस्ट और सड़कें पक्की तैयार थी, जिसमें कम से कम तीन साल लगे होंगे।"

लेकिन, चीन ने आखिर भारत पर हमले की इतनी लंबी तैयारी क्यों की? इस इतिहास पर कम ध्यान गया है। इस युद्ध का इतिहास-लेखन नेहरू को बरी करने या नेहरू पर इल्जाम लगाने में ही लगा रहा। चीन और अमरीका के ऐंगल पर कम नजर गयी। चीन में तो इतिहासकार होते ही नहीं, तो लिखेंगे क्या?

चाउ एन लाइ ने कहा, "नेहरू खुद को अंग्रेज़ों का उत्तराधिकारी समझते हैं, और उनके जैसे ही सोच रखते हैं। यही वजह है कि वह तिब्बत के

लोगों को भड़काते रहते हैं। यह भारतीय मानसिकता नहीं, ब्रिटिशों की सिखाई फूट है।"

जबकि दलाई लामा लिखते हैं, "नेहरू तो मुझे वापस तिब्बत भेज रहे थे। वह कहते कि चीन हम तिब्बतियों की कद्र करेगा। जब मैं 1959 में भाग कर आया, तब भी नेहरू कहते रहे कि तिब्बत पर चीन का ही अधिकार है।"

अगर ये दोनों मिल कर बात कर लेते, तो यह शंका खत्म हो जाती। लेकिन दुनिया से शंका खत्म हो जाए, तो आखिर युद्ध कैसे हो?

1962 में नेहरू को सोवियत ने बारह मिग-21 बेचने चाहे। जब केनेडी को मालूम पड़ा तो उन्होंने ब्रिटेन के प्रधानमंत्री को फ़ोन किया कि आप सस्ते में दिलवा दो, सोवियत को यह डील न मिलने पाए। अगस्त, 1962 को सोवियत ने मुफ्त में ही ये जहाज एक संधि के तहत दे दिए, जिसके अनुसार सोवियत सैन्य-शक्ति बढ़ाने में भी मदद करने वाला था। इतना ही नहीं, उसी साल सोवियत ने यू.एन. में कश्मीर मुद्दे पर पुन: भारत के समर्थन में वीटो किया। लेकिन, यह सब तैयारी चीन के ख़िलाफ़ नहीं थी। यह तो पाकिस्तान के खिलाफ थी, जिसने अमरीका के सहयोग से विशाल सेना और आधुनिक फाइटर जहाज और पैटन टैंक जमा कर लिए थे।

9 सितंबर, 1962 को भारतीय सेना थांग-ला दर्रे पर कब्जा करने के लिए 'ऑपरेशन लेग्होर्न 'के तहत आगे बढ़ी। यह सीमा पर विवादित इलाका था, जिसे चीन अपना समझती थी। उसका जिम्मा ब्रिगेडियर दलवी पर था, जिनकी टुकड़ी के पास शीतकालीन वस्त्र भी नहीं थे। पूर्वोत्तर सीमा की कमांड नेहरू जी के ही संबंधी जनरल बी. एम. कौल के कंधे पर थी। उनको फौजी 'पैरवी का जनरल 'मानते थे।

6 अक्तूबर, 1962 को माओ-त्से-तुंग ने कहा, "नेहरू पुराना दोस्त है। अगर उसने अपनी फौज हमारे क्षेत्र में बढ़ाई है, तो हमें उनसे लड़ कर और हरा कर ही दोस्ती निभानी होगी।"

8 अक्तूबर को माओ ने ख्रुश्चेव को फ़ोन कर कहा, "हम भारत पर आक्रमण कर रहे हैं।"

ख़ुश्चेव खुद क्यूबा में उलझे थे। उन्होंने अभी-अभी भारत से संधि की थी, लेकिन चीन को कुछ कह न सके। माओ का निशाना भारत पर था, लेकिन वह सोवियत और अमरीका को भी दिखाना चाहते थे कि एशिया के बॉस वह हैं, कोई ख़ुश्चेव या केनेडी नहीं।

11 अक्तूबर को जनरल कौल नेहरू के पास गए और कहा, "जल्दी केनेडी को फोन मिलाइए। अब वही बचा सकते हैं।"

नेहरू अगले दिन कोलंबो जा रहे थे तो प्रेस को बस इतना कहा, "फौज जो निर्णय लेगी, जैसा निर्णय लेगी, मैं उसके साथ हूँ। हमें अपना क्षेत्र वापस चाहिए।"

अमरीकी मीडिया ने यह खबर हेडलाइन बना कर छापी, "NEHRU DECLARES WAR ON CHINA"

और इस हेडलाइन ने बीजिंग को यह कहने का मौका दे दिया कि युद्ध भारत ने शुरू किया।

20 अक्तूबर, 1962 को चीन ने एक साथ पूरब और पश्चिम दोनों सीमाओं पर बमबारी शुरू कर दी। ब्रिगेडियर दलवी की फौज ने दो दिन में घुटने टेक दिए और उनको पकड़ कर युद्ध-बंदी बना लिया गया। एक हफ्ते के अंदर भारत की सेना जितनी आगे बढ़ी थी, उतनी ही पीछे धकेल दी गयी।

तभी 28 अक्तूबर को नेहरू जी को केनेडी की चिट्ठी मिली, "क्यूबा मसला हल हो गया। अब अमेरिका चीन के ख़िलाफ़ तुम्हारे साथ है।"

नेहरू जे. के. गालब्रेथ से मिलने गए और कहा, "सोवियत ने धोखा दे दिया। वे चीन से मिल गए और हमें मिग विमान नहीं भेज रहे। अब हमें आपके मदद की जरूरत है।"

दशकों तक अमरीका से दूरी बना कर रखने वाले, और समय-समय पर उनका विरोध करने वाले नेहरू जी के लिए यह एक शर्मनाक स्थिति थी। सोवियत-चीन के धोखे और अमरीका के आगे झुकने के बाद नेहरू पूरी तरह टूट चुके थे। वह इससे कभी नहीं उबर पाए। सात महीने बाद लता

मंगेशकर के गीत पर वह फूट-फूट कर रो पड़े, और हृदयाघात से 1964 में मर गए।

लेकिन, क्या केनेडी की चिट्ठी के बाद हमें अमेरिका से मदद मिली, और क्या हम चीन से आखिर लड़ सके? शुरुआती बमबारी के बाद तीन हफ्ते तक चीन ने एक गोली भी नहीं चलायी। तूफ़ान अचानक थम गया था। एक अजीब सा सन्नाटा।

नेहरू के जन्मदिन 14 नवंबर को माओ ने तोहफ़ा भेजा। उस दिन चीन ने भारत के ख़िलाफ़ दुबारा जंग छेड़ दी।

भारत-चीन युद्ध को कुछ लोग युद्ध ही नहीं मानते। दोनों देशों के हिसाब से वे अपनी सीमा में ही थे। अंग्रेज़ों ने मानचित्र पर जो काल्पनिक मैकमोहन लाइन बनाई, वह जमीन पर बनाई ही नहीं। अब उन बीहड़ पहाड़ों में सीमा गुजरती कहाँ से है, यह दोनों देशों की अपनी-अपनी समझ थी। चीन ने युद्ध शुरू करते ही तीन हफ्ते रोक दिया, आगे बढ़ा ही नहीं?

चीन आक्रमण तो कर रहा था, लेकिन उसकी घरेलू स्थिति मजबूत नहीं थी। अर्थव्यवस्था में दस प्रतिशत की गिरावट आयी थी। उसकी न ऐसी मनसा थी, न शक्ति कि पूरी भारत पर कब्जा कर ले। यूँ भी चीन मूलत: प्रभुसत्तावादी देश रहा है, साम्राज्यवादी नहीं। ऐसा नहीं कि उसने हाथ-पैर नहीं फैलाए, लेकिन वह भी अपनी सीमाओं की बेहतर किलाबंदी के लिए ही।

युद्ध रोक कर चाउ एन लाइ ने 28 अक्तूबर को एक समझौता पत्र दिल्ली भेजा, जिसकी तीन शर्तें थी—
1. सीमा-विवाद का शांतिपूर्ण हल
2. दोनों देशों का LOC से बीस कि.मी. पीछे जाना
3. दोनों प्रधानमंत्रियों की मिल कर वार्ता

यह ऑफर 1959 में भी मिला था, और इसका अर्थ था अक्साइ-चिन छोड़ना और बदले में अरुणाचल रखना। इसे उस वक्त भी मना किया गया था। इस बार तो यह थांग-ला में बुरी हार के बाद थोपा गया था, जिसे नेहरू ने एक झटके में मना कर दिया। इसके पीछे आत्मसम्मान

वाली बात तो थी ही, पुर्तगाल पर विजय के बाद भारतीय सेना में ऊर्जा का संचार भी हुआ था। चीन से शुरुआती हार के बावजूद नेहरू को सेना से उम्मीदें थी। इसके अलावा रक्षा मंत्री मेनन की अजीबो-गरीब योजनाएँ भी थी। वह तिब्बती गुरिल्लाओं को युद्ध में लाना चाहते थे। यह तो खैर अप्रायोगिक रणनीति थी। हाँ! नेहरू के मनोबल के पीछे केनेडी की वह चिट्ठी ज़रूर थी, जिसमें अमरीका के सहयोग का आश्वासन था। वह चिट्ठी न होती, तो शायद नेहरू शर्तें तभी मान लेते।

केनेडी ने फौरन सहायता भेजनी शुरू की। 2 नवंबर से रोज आठ बोइंग जहाज भर-भर कर कलकत्ता में हथियार गिराए जाने लगे। ऐसा पहली बार हो रहा था कि भारत अमरीका से खुल कर रक्षा-वार्ता कर रहा था।

थांग-ला दर्रा से दक्षिण से-ला की पहाड़ी पर भारतीय सेना ने नए जोश से मोर्चा संभालना शुरू किया। लेकिन, कितना संभालते?

चीन सीमा पर भारत की थल सेना, चीन के मुकाबले आधी थी। चीन की वायु सेना पाँच गुणा अधिक बड़ी थी। भारत के बड़े थल सेना यूनिट पाकिस्तान सीमाओं पर व्यस्त थी, और उन्हें हिलाना मुमकिन नहीं था। एक ही दीवार थी, जो चीन के आक्रमण को मज़बूती से रोक रही थी। वह थल या वायु सेना नहीं थी। वह थी- हिमालय की उत्तुंग पर्वत-शृंखला, जिसे भेदना कठिन था।

केनेडी ने एक और महत्वपूर्ण काम किया। वह पाकिस्तान को दिया यह वादा तो तोड़ चुके थे कि भारत को हथियार नहीं देंगे। लेकिन फिर भी अयूब ख़ान को संदेश भेजा कि भारत-चीन युद्ध का पाकिस्तानी सेना कोई फायदा नहीं उठाएगी।

अयूब ख़ान ने लिखा, “यह मुमकिन है। लेकिन, बदले में अमेरिका को हमें कश्मीर दिलाने में मदद करनी होगी। और जितने भी हथियार आपने उन्हें भेजे हैं, वह भारत-पाकिस्तान सीमा पर नहीं नजर आने चाहिए....यूँ भी यह लड़ाई भारत ने ही चीन के ख़िलाफ़ शुरू की है। अमरीका ख़्वाह-म-ख़्वाह इस लड़ाई में दख़ल दे रही है।”

अमरीकी राजदूत गालब्रेथ ने पंडित नेहरू को कहा कि आप भी एक चिट्ठी लिख दीजिए। नेहरू ने कश्मीर वाले मुद्दे पर कुछ भी लिखने से मना कर

दिया। फिर भी 12 नवंबर को एक चिट्ठी अयूब ख़ान को लिख दी। इसमें तारीफ़ से शुरुआत की और कश्मीर का जिक्र किया ही नहीं। लिखा—

“फ़ील्ड मार्शल! आप तो फौजी रहे हैं, और यह जानते हैं कि चीन ने हम पर आक्रमण किया है। जब देश पर कोई आक्रमण करे तो एक फौजी का धर्म आप बखूबी समझते हैं। हम अपनी सीमाओं की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं।”

एक सच यह भी था कि पाकिस्तान से लड़ने के लिए वायुसेना और नौसेना खाली ही बैठी थी, तो पाकिस्तान यूँ हिमाक़त नहीं करता। पाकिस्तान के सीमा से थलसेना को पूर्वोत्तर भेजने का रिस्क उठा लिया गया। आई.बी. को खबर मिली थी कि चीन सिक्किम के रास्ते सिलीगुड़ी कॉरीडोर पर कब्जा कर ‘चिकेन नेक ’पूरी तरह काटने वाला है। इसलिए, यह रिस्क जरूरी था।

14 नवंबर से 20 नवंबर के मध्य चीन ने पहले से कहीं अधिक विस्तृत आक्रमण किया। अमरीकी हथियार आ तो गए थे, लेकिन उन्हें चलाने का प्रशिक्षण नहीं मिल पाया था। फिर भी, मेजर शैतान सिंह की कुमाऊँ रेजिमेंट आखिरी दम तक लड़ती रही। मेजर गोलियों से छलनी होकर भी मशीन-गन चलाते रहे और शहीद हुए। चीन से भले हार हुई, लेकिन ऐसे कठिन मोर्चों पर थलसेना का शौर्यपूर्ण युद्ध हमें नहीं भुलाना चाहिए।

अक्साइ-चिन का पूरा इलाका अब चीन के क़ब्ज़े में था और वह लेह की ओर बढ़ने की सोच रहे थे। अरुणाचल की तो संपूर्ण पट्टी मिलाकर 32 हज़ार वर्ग-मील अब चीन के कब्जे में थी। जनरल कौल जैसे-तैसे जान बचा कर दिल्ली भागे।

19 नवंबर को नेहरू जी ने केनेडी को चिट्ठी लिखी। यह चिट्ठी भारत के अनुरोध पर लगभग पाँच दशक तक गुप्त रखी गयी और 2010 में ही इसे सार्वजनिक किया गया। अमरीका ने अब तक हथियार तो भेजे थे, लेकिन खुद मैदान में नहीं आया था। इस चिट्ठी में अमरीकी वायु सेना को युद्ध में आने का न्यौता था। नेहरू जी ने लिखा कि अगर वे नहीं आए तो हम संपूर्ण पूर्वोत्तर खो बैठेंगे।

भारत की वायुसेना इस युद्ध में अकेले भी आ सकती थी, लेकिन इसके बदले चीन की वायुसेना कितना आतंक मचाती, इसका ठिकाना न था। इसकी आलोचना होती रही कि भारत ने वायुसेना क्यों नहीं भेजी, लेकिन चीन के आधुनिक और सशक्त वायुसेना के ख़िलाफ़ यह संभव ही नहीं था। गालब्रेथ का भी यही सुझाव था कि जब तक अमरीकी का बैक-अप नहीं आता, हवाई आक्रमण न करें। नेहरू ने केनेडी को स्पष्ट लिखा था कि कम से कम 12 सुपरसॉनिक फाइटर स्क्वाड्रन, दो B-47 बॉम्बर स्क्वाड्रन और दस हज़ार ट्रूप की जरूरत है।

केनेडी ने जवाब तुरंत भेजा, "हम अभी तुरंत बंगाल की खाड़ी में अपना नौसेना जहाज भेज रहे हैं।"

नेहरू ने नौसेना तो माँगा ही नहीं था, लेकिन केनेडी को अंदेशा था कि अमरीका का जहाज लगते ही, चीन युद्ध रोक देगा। चीन को भी यह खबर भिजवा दी गयी। और जादू!

ठीक अगले ही दिन, 20 नवंबर को माओ ने घोषणा कर दी, "हम युद्ध रोक रहे हैं। और हम वचन देते हैं कि दिसंबर की पहली तारीख तक LOC के बीस कि.मी. पीछे चले जाएँगे। लेकिन, भारतीय फौज भी बीस कि.मी. पीछे रहे और फिर कभी इस सीमा में घुसने की हिमाकत न करे।"

गालब्रेथ लिखते हैं, "उस रात किसी चोर की तरह चुपचाप भारत में शांति आयी।"

माओ के युद्ध रोकने की और भी महत्वपूर्ण वजह हैं (जैसे दिसंबर का प्रतिकूल मौसम); केनेडी तो आखिरी वजह ही थे। लेकिन, 20 नवंबर की तारीख चुनने की वजह भी दर्ज़ कर लेनी चाहिए। नेहरू-केनेडी की वह बरसों से दबी हुई चिट्ठी। यह चिट्ठी क्यों दबी, इस पर राजनीति के धुरंधर दिमाग लगाते रहें।

फिलहाल, इसे किताबों में दबा 'लव-लेटर 'मान लिया जाए। अमरीका भारत का वह प्रेमी रहा, जिससे वह वर्षों तक खुल कर प्रेम जता ही नहीं सका।

◆ ◆ ◆

“1945 के बाद, कुछ अपवादों को छोड़ कर कोई भी देश दूसरे देश पर कब्जे के लिए आक्रमण नहीं करता।”

- युवाल नोआ हरारी, सैपिएन्स

अब युद्ध नहीं होते, युद्ध की शक्ल में बिजनेस डील होते हैं। यह सोचना हास्यास्पद है कि अमेरिका के डर से चीन रुक गया या सोवियत ने मिसाइल वापस मोड़ लिया। इसे यूँ ज़रूर कहा जा सकता है कि अमेरिका से डील के तहत ये दोनों मुड़ गए। सोवियत की डील तो पहले चर्चा की है। लेकिन, चीन की क्या डील थी?

चीन ने युद्ध जीत कर यह सिद्ध किया कि एशिया के बॉस वह हैं, और अगर कोई डील करनी है तो उनसे की जाए (भारत से नहीं)। कम्युनिस्ट हैं तो क्या हुआ?

सबसे पहले तो अयूब ख़ान ही उनकी तरफ आ गये। जब संयुक्त राष्ट्र में चीन की स्थायी सीट की बात हुई, तो अमरीका के ना कहने के बावजूद पाकिस्तान ने चीन का समर्थन किया। चीन ने खुश होकर पाकिस्तान को एक बड़ी जमीन दी और बदले में कश्मीर (POK) की कुछ जमीन ले ली। 1965 में पाकिस्तान ने चीन के सहयोग से भारत से युद्ध ही लड़ लिया।

अमरीका ने भी चीन से बैर भुलाया और व्यापार-डील शुरू किए। चीन की कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था बदल कर औद्योगिक अर्थव्यवस्था होती गयी। चीन को समृद्ध बनाने में सोवियत का नहीं, बल्कि अमरीका का हाथ है। रिचर्ड निक्सन और हेनरी किसिंगर के समय चीन, पाकिस्तान और अमेरिका ने मिल कर भारत को लगभग ‘आइसोलेट ’ही कर दिया।

लेकिन, क्या इस भविष्य की सोच से ही चीन ने केनेडी की बात मान ली?

हम दरअसल इस खेल के ओपेनर बल्लेबाज को ही भूल रहे हैं। चीन ने युद्ध की शुरुआत जहाँ फ़ोन घुमा कर की, क्या अंत में वहाँ फ़ोन नहीं गया होगा? अगर क्यूबा के बाद केनेडी का ध्यान भारत और चीन पर था, तो ख्रुश्चेव क्या बैठ कर भुट्टे सेंक रहे होंगे? समस्या यह है कि माओ-ख्रुश्चेव बातचीत पर दस्तावेज ही नहीं मिलेंगे।

KGB उन्हें पल-पल की खबर दे रहा था और एक मास्टर-प्लान के कयास तो हैं ही।

मित्रोखिन आर्काईव के अनुसार, "सोवियत के आदेश पर KGB मई, 1962 से कृष्णा मेनन को नेहरू का उत्तराधिकारी बनाने की तैयारी करने लगी। मिग विमानों की डील भी मेनन की वजह से ही मुमकिन हुई....लेकिन, अक्तूबर में चीन के आक्रमण ने मेनन के भविष्य पर बट्टा लगा दिया!"

यूँ तो मित्रोख़िन अविश्वसनीय सूत्र ही माने जाते हैं, लेकिन अगर यह बात सच थी, तो सोवियत ने रक्षा मंत्री कृष्णा मेनन की छवि बचाने की कोशिश ज़रूर की होगी। संभव है, युद्ध रोकने की गुज़ारिश चीन से की हो? आखिर सोवियत ने चीन में परमाणु बम तकनीक हस्तांतरित की थी, तो क्या एक ऐसा अनुरोध नहीं कर सकती जिससे भारत पर पकड़ मजबूत हो?

आर्काइव में आगे लिखा है, "युद्ध में हार के बाद नेहरू ने मेनन से इस्तीफ़ा माँग लिया... KGB ने एक प्रमुख भारतीय अखबार के माध्यम से मेनन के लिए समर्थन जुटाना शुरू कर दिया।"

सोवियत ने भले युद्ध के समय मिग विमान नहीं भेजे, लेकिन युद्ध के बाद मिग विमान की एक बड़ी डील भारत से की। उनका प्रयोग भारत ने पाकिस्तान के साथ दोनों युद्धों में किया। '65 युद्ध के बाद भारत-पाकिस्तान की संधि भी सोवियत के आंगन में ही हुई।

तो फिर अमेरिका क्या कर रहा था?

केनेडी ने भारत-चीन युद्ध के तुरंत बाद हैरीमान मिशन भेजा। उसकी तीन योजनाएँ थी—

1. भारत को रक्षा-सहयोग
2. कश्मीर के संबंध में भारत-पाकिस्तान समझौता (अयूब ख़ान को कश्मीर दिलाना)
3. भारत के साथ तिब्बती गुरिल्लाओं को संयुक्त प्रशिक्षण देना

पहली योजना के तहत कुछ संयुक्त ड्रिल भी हुए। दूसरी योजना के तहत भारत-पाक की छह वार्ता हुई, लेकिन नेहरू कश्मीर छोड़ने को राजी नहीं हुए। तीसरी योजना आई.बी. और सी.आई.ए. के संयुक्त ऑपरेशन से चलती रही, जिसकी वजह से चीन से संबंध खराब ही होते रहे। 1964 में चीन ने परमाणु परीक्षण कर लिया, फिर तो यह सभी योजनाएँ धरी की धरी रह गयी। नेहरू और केनेडी नहीं रहे, तो यूँ भी यह प्रेम फीका पड़ गया।

जब अमेरिका 1971 युद्ध में पाकिस्तान का साथ दे रही थी, तो जैक के छोटे भाई सीनेटर टेड केनेडी भारत आए और कहा, “मैं अपने भाई का अधूरा सपना पूरा करना चाहता हूँ, और अमेरिका-भारत संबंध वापस सुदृढ़ करना चाहता हूँ।”

विपक्ष के नेता अटल बिहारी वाजपेयी ने पूछा, “सीनेटर केनेडी, आप यह बताइए कि राष्ट्रपति कब बनेंगे?”

केनेडी के भारत-प्रेम की वजह से CIA नाराज़ चल रहा था। पाकिस्तान जैसा मजबूत ख़ुफ़िया बेस हाथ से निकल कर चीन के हाथ जा रहा था। पाकिस्तान चीन के दम पर इस कदर तन गया था कि जुल्फिकार अली भुट्टो जब अमेरिका आए तो केनेडी ने कहा, “आप इतने काबिल आदमी हैं कि अगर अमरीकी नागरिक होते, तो मैं आपको कैबिनेट में रखता।”

भुट्टो ने कहा, “नहीं मिस्टर केनेडी। तब मैं राष्ट्रपति होता और आप जैसों को कैबिनेट में रखता।”

केनेडी ने कई समीकरण बिगाड़ कर लोगों को नाराज़ किया। पाकिस्तान से समीकरण बिगाड़ कर CIA को। माफ़िया से समीकरण बिगाड़ कर जिमी होफ़्फ़ा को। और अश्वेतों से समीकरण बिगाड़ कर गोरों को।

अलाबामा विश्वविद्यालय के इतिहास में पहली बार दो अश्वेत एडमिशन लेने जा रहे थे, और यह गोरों को बरदाश्त नहीं था।

◆ ◆ ◆

मार्टिन लूथर किंग

सितंबर, 1962. मिसिसिपी, अमेरिका

केनेडी गोरे थे। सिर्फ़ गोरे ही नहीं थे, गोरों में गोरे थे। रॉबर्ट डालेक उनकी जीवनी में उन्हें 'अमेरिकन ब्राह्मण 'कहते हैं। वह उच्च समाज में ही रहे। उनके या उनके भाईयों ने कभी नीग्रो के साथ कंधा नहीं मिलाया, न कोई क्रांतिकारी सोच ही रही। वे तो अय्याश जिंदगी जीते हुए और निग्गरों को पाँव की धूल समझते ही बड़े हुए। लेकिन, ऐसी सोच के व्यक्ति को अगर राजधर्म निभाना पड़े, तो वह क्या करे?

दक्षिण में अब नीग्रो जागने लगे थे, और मताधिकार के लिए लड़ने लगे थे। रेस्तराँ, दुकानों और रेलवे-स्टेशनों पर श्वेत-अश्वेत पृथक्करण (Segregation) का विरोध हो रहा था। अल्बानी में यह एक संगठित आंदोलन बन चुका था, और मार्टिन लूथर किंग नेतृत्व कर रहे थे।

वहीं, गोरे सामंत और रूढ़िवादी इस आंदोलन को अमरीकी संस्कृति पर हमले की तरह देख रहे थे। इनमें कुछ धनाढ्य तेल व्यवसायी थे, जो अश्वेतों को दबाने के लिए 'कु क्लुक्स क्लान 'जैसी 'वाइट 'टोलियों को समर्थन दे रहे थे। KGB के मित्रोख़िन आर्काइव की मानें तो केनेडी की हत्या में भी दक्षिण के इन 'राइट-विंग 'व्यवसायियों की ही साजिश है। उन्हें लगा कि केनेडी खुद को गांधी समझने लगे थे और अमरीकी अछूत प्रथा के पीछे पड़ गए, इसलिए मरवा दिया। जबकि केनेडी का ऐसा कोई समाज-सुधारक इरादा नहीं था। वह तो बस अमरीकी कानून और संघ-संरचना से चल रहे थे।

केनेडी ने अमरीकी कांग्रेस को दिए भाषण में कहा, “नीग्रो लोगों के दो गिरजाघर जला दिए गए, मिसिसिपी में गोलियाँ चलायी गयी। बस इसलिए, कि नीग्रो अपना मताधिकार माँग रहे हैं? ये घृणास्पद और कायरतापूर्ण कृत्य हैं।”

जॉन मेरेडिथ नामक अश्वेत फौजी मिसिसिपी विश्वविद्यालय में दाखिला चाह रहे थे, लेकिन वहाँ अश्वेत वर्जित थे। उन्होंने याचिका दायर की, और जीते। जब वह एडमिशन के लिए गए, तो मिसिसिपी के गवर्नर ही रास्ता रोक कर खड़े हो गए। उन्हें लगा कि वह श्वेतों के समर्थन में हंगामा करेंगे तो अगले चुनाव में मदद मिलेगी। लेकिन वहाँ हज़ारों श्वेत गुंडों की भीड़ आ गयी, और पुलिस पर हमला कर दिया। केनेडी ने पाँच सौ मार्शल भेजे थे, लेकिन वे इस उन्मादी भीड़ का मुकाबला न कर सके। एक विदेशी पत्रकार की मौत हुई और सौ से अधिक मार्शल घायल हुए। बस एक नीग्रो के एडमिशन की वजह से लोगों ने अपने देश की ही पुलिस पर हमला कर दिया! एडमिशन उस वक्त नहीं हो सका।

लेकिन, केनेडी के लिए यह अब एक मुहिम बन गयी। वह कहाँ दुनिया भर में अपनी बिसात बिठा रहे थे, और अपने ही देश में न्यायपालिका और राष्ट्रपति की कोई सुन नहीं रहा था।

अगले वर्ष (1963) जून में दो अश्वेत छात्रों ने बर्मिंघम विश्वविद्यालय में दाखिला लिया। यह अलाबामा राज्य में था, जो ‘कु क्लुक्स क्लान ’का गढ़ था, और पहले भी नीग्रो ‘फ्रीडम राइडर्स ’को बुरी तरह पीटा जा चुका था।

वहाँ के गवर्नर वालेस कट्टर नस्लवादी थे, और दहाड़े, “नीग्रो कभी हमारे बराबर न थे, न हैं, न होंगे।”

बॉबी केनेडी ने इस बार पूरी तैयारी कर रखी थी। अलाबामा के पुलिस-कर्मियों और तमाम मार्शल को सख्त निर्देश थे। जैसे ही ये दो अश्वेत विश्वविद्यालय के दरवाजे पर पहुँचे, गवर्नर वालेस ने उनका रास्ता रोक लिया। अटॉर्नी जनरल बॉबी ने आदेश दिया कि अगर गवर्नर नहीं हटते तो उनको जबरन हटाया जाए।

गवर्नर वालेस के अपने ही राज्य के पुलिस अधिकारी ने उनको आकर कहा कि आप रास्ता छोड़ दें, अन्यथा गिरफ्तार कर लिए जाएँगे। वालेस अब भी जोर-जोर से विरोध करते रहे, लेकिन उन्हें हटना पड़ा।

आखिर केनेडी ने अश्वेतों को अलाबामा विश्वविद्यालय में दाखिला दिला ही दिया। 'कु क्लुक्स क्लान 'के गुंडे कैम्पस में भेजे गए, लेकिन अब सुरक्षा इतनी पुख़्ता थी कि कुछ कर न सके।

बॉब डायलन ने मशहूर गीत लिखा, 'समय बदल रहा है '(Times they are changin')

"आओ सीनेटर, सांसदों,
सुनो हमारी बात
न रोको हमारा रास्ता
न रोको हमारा हॉल
क्यूँकि लगेगी जिसे चोट
वही हुआ होगा दमित
बिगुल बज रहा क्रांति का
बदल रहा है अब समय"

लिंकन का अधूरा स्वप्न आखिर पूरा हुआ। अश्वेत अब जाकर मुक्त हुए।

चार महीने बाद लिंकन की तरह केनेडी की भी हत्या कर दी गयी।

◆ ◆ ◆

"हमें युद्ध के लिए सभी साधन तैयार रखने है, लेकिन उनका प्रयोग तभी हो जब शांति के सभी साधन खर्च हो जाएँ।"

- जॉन एफ. केनेडी, मृत्यु से एक महीने पहले, 1963

जब बिना तैयारी के, दिल से आवाज निकलती है, तो वह सत्य के करीब होता है। केनेडी अपना भाषण हमेशा कई ड्राफ्ट के बाद, अभ्यास करने के बाद ही बोलते थे। वह खुद को 'प्रेजेंटेबल 'बनाने के लिए भी मशक़्क़त करते। उनकी लंबी बीमारी के लिए वह जो इंजेक्शन लेते, उससे उनका चेहरा फूल जाता। इसलिए भाषण से पहले वह इंजेक्शन नहीं लेते कि चेहरा ठीक दिखे, भले दर्द से तकलीफ़ में हों।

उन्होंने 1963 में अश्वेतों के विश्वविद्यालय एडमिशन के बाद टी.वी. पर पहली बार बिना तैयारी के भाषण दिया। वह भाषण मार्टिन लूथर किंग के 'आज मैंने एक स्वप्न देखा 'भाषण के समकक्ष ही कहा जा सकता है। केनेडी ने कहा,

"हम आज एक नैतिक समस्या से गुजर रहे हैं। यह धार्मिक ग्रंथों से लेकर संविधान में लिखा है कि हम सभी अमरिकी नागरिकों को समान अधिकार, समान अवसर मिले। राष्ट्रपति लिंकन ने ग़ुलामों को सौ साल पहले मुक्त कर दिया, लेकिन आज भी उनके वंशज मुक्त नहीं हैं। वे अन्याय से मुक्त नहीं है। वे सामाजिक और आर्थिक दमन से मुक्त नहीं हैं।

जब तक इस देश के नागरिक आज़ाद नहीं होंगे, क्या यह देश आज़ाद कहलाएगा? अब समय आ गया है कि हम इस देश को स्वतंत्र करें। पूर्व से पश्चिम तक। उत्तर से दक्षिण तक।

मैं कांग्रेस में इस प्रस्ताव की सिफ़ारिश करने जा रहा हूँ कि अमरिकी जीवन में, और कानून में नस्लवाद का कोई स्थान न हो। यह सिर्फ मेरा ही नहीं, आप सबका सामूहिक कर्तव्य है।"

राष्ट्रपति केनेडी के भाषण के ठीक अगले दिन एक अश्वेत कार्यकर्ता मेडगर एवर्स की, उनकी पत्नी और बच्चों के सामने गोली मार कर हत्या कर दी गयी। मेडगर एवर्स द्वितीय विश्व-युद्ध में जर्मनी पर जीत दिलाने वाली अमरीकी सेना में थे।

केनेडी इस घटना के बाद 'सिविल राइट्स बिल 'को संसद में पास कराने के लिए युद्ध-स्तर पर जुट गए। उनके सहयोगी कहते रहे कि वह अगला चुनाव हार जाएँगे। केनेडी ने कहा कि मुझे ऐसी चुनाव हारने का कोई पछतावा नहीं होगा। इस बिल का अर्थ था कि अमेरिका से अश्वेत

पृथक्करण (segregation) पूरी तरह खत्म हो जाएगा। अश्वेत किसी भी होटल में खा सकते थे, गोरों के साथ बैठ कर फ़िल्म देख सकते थे, बस-ट्रेन में साथ सफर कर सकते थे, और बिना किसी समस्या के वोट डाल सकते थे।

वह अपने विपक्षी नेता आइजनहावर से समर्थन माँगने गए कि हम अपने मतभेद भुला कर इस बिल को पास कराएँ।

जब तक इस बिल पर काम चल रहा था, केनेडी एक दूसरे मिशन पर लग गए। यह उससे भी अधिक कठिन था। शीत-युद्ध की समाप्ति।

क्यूबा से जब सोवियत के परमाणु मिसाइल वापस लौटे, और तुर्की से अमेरिका ने अपने मिसाइल हटाए, यह एक मार्गदर्शक पहल थी। इसके बाद ही परमाणु बमों के निर्माण पर रोक की कोशिशें तेज होने लगी। निकिता ख्रुश्चेव ने भी पहली बार कहा कि अब वह किसी भी परमाणु बम का जमीन से ऊपर परीक्षण नहीं करेंगे। और तभी भूमिगत परीक्षणों पर जोर दिया जाने लगा, जो बाद में एक नियम बन गया।

केनेडी ने वाइट हाउस के एक भाषण में कहा, “मैं इन परमाणु आक्रमण के भय, मिसाइल-रेस की बातों और सोवियत के षडयंत्र-कथाओं से अब तंग आ गया हूँ। हम किस मुँह से शांति की बात कर सकते हैं, जब हमारे ही हाथ खून से सने हैं? क्या हम मुर्दों की शांति चाहते हैं?

मैं मानता हूँ कि साम्यवाद एक ग़लत मान्यता है। लेकिन रूसी संस्कृति, विज्ञान, अंतरिक्ष-ज्ञान, और उनकी सेना के साहस का हमें आदर करना चाहिए।

अगर हमारी या उनकी ग़लती से कभी युद्ध हो गया तो हमने जो सदियों में हासिल किया है, वह सब खत्म हो जाएगा। हम युद्ध की तरफ बढ़ना क्यों चाह रहे हैं?”

विशेषज्ञों का मानना है कि यह भाषण एक ‘डेथ नोट ’था। शीत-युद्ध के समय अगर एक अमरीकी राष्ट्रपति सोवियत से बेइंतहा नफ़रत नहीं करता, तो वह उस पद पर रहने लायक़ नहीं। यह भाषण अमेरिकी मीडिया ने दबा दिया। ख़ास चर्चा ही नहीं की।

कमाल की बात है कि इस भाषण का रूसी अनुवाद मॉस्को में प्रचारित किया गया। इस भाषण के बाद ही मॉस्को में 'वॉय्स ऑफ़ अमेरिका 'से पाबंदी हटी।

ख़ुश्चेव ने कहा, "रूज़वेल्ट के बाद अमेरिका में पहला दमदार राष्ट्रपति आया है।"

केनेडी का यह भाषण भले उदारवादी लगे, लेकिन उन्होंने अपने सहयोगियों, दबंग फौजी ज़नरलों, और CIA की इच्छा के विपरीत अपनी बात रखी थी। यह एक भय-मुक्त राष्ट्रपति का भाषण था, जिसे ऐसे किसी विरोध की परवाह नहीं थी। बिल्कुल, रूज़वेल्ट की तरह।

इसके साथ ही केनेडी ने एक ऐतिहासिक शुरुआत की- 'हॉटलाइन'।

1963 से पहले क्रेमलिन और वाइट हाउस/पेंटागन के मध्य सीधी संचार-सुविधा थी ही नहीं। वहाँ से कोड भेजे जाते थे, जो सोवियत दूतावास से डिकोड होकर आते थे। इसमें घंटों लगते थे। क्यूबा परमाणु-संकट के समय ख़ुश्चेव की चिट्ठी को डिकोड होने में बारह घंटे लगे! इतनी देर में तो बम ही फट जाता।

केनेडी ने एक सीधी संचार-सुविधा स्थापित की, और अमेरिका से जब पहला टेस्ट-मेसैज क्रेमलिन आया तो सोवियत वाले सोच में पड़ गए कि इसका मतलब क्या हुआ? युद्ध की धमकी तो नहीं? इस सुविधा से हमारे संवाद बेहतर होंगे या कन्फ्यूजन बढ़ेगा?

फिर उन्हें बताया गया कि यह बस जाँच कर रहे थे कि सभी अक्षर पहुँचते है या नहीं, तो रूसी हँस पड़े।

मेसैज था— A quick brown fox jumps over the lazy dog

◆ ◆ ◆

उस दिन 'डूम्सडे क्लॉक 'पीछे चला गया।

यह परमाणु वैज्ञानिकों की काल्पनिक घड़ी है जो बताती है कि मानव-निर्मित प्रलय कब आएगा। आज यह अपने सबसे खतरनाक स्थिति में है। यह अर्धरात्रि से लगभग 100 सेकंड पीछे है, यानी तनिक भी ग़लती हुई तो दो मिनट से भी कम में दुनिया खत्म। लेकिन, अक्तूबर 1963 में हम प्रलय से बारह मिनट दूर हो गए थे। मॉस्को में पहली बार अमरीका, सोवियत, और इंग्लैंड ने परमाणु परीक्षण निषेध संधि (Partial Nuclear Ban Treaty) पर हस्ताक्षर किए।

केनेडी पहले राष्ट्राध्यक्ष नहीं थे, जिसने इस तरफ कदम बढ़ाया। इसकी शुरुआत 1954 में भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने संयुक्त-राष्ट्र में सिफारिश कर की थी। उसके बाद अमरीका और सोवियत के मध्य खींच-तान चलती रही कि तुम पहले बंद करो। यह बात कोई लिखे न लिखे, लेकिन यह अंशत: सत्य है कि मार्टिन लूथर किंग गांधी से और केनेडी नेहरू से प्रेरित थे। इसकी व्याख्या पहले भी की है। यह इत्तिफाक है कि दोनों (केनेडी और किंग) एक साथ, एक समय विश्व में बदलाव लेकर आए।

इन दोनों से दक्षिणपंथी गुटों का मतभेद रहा। FBI निदेशक एड्गर हूवर ने मार्टिन लूथर किंग को साम्यवादी सिद्ध करने की पुरजोर कोशिश की। उनके दोनों सहयोगी पहले साम्यवादी पार्टी से जुड़े भी थे। यह एक विडंबना है कि जब भी नागरिक अधिकार के आंदोलन होते हैं, तो उन पर ऐसे आक्षेप लगते ही हैं। जबकि मार्टिन लूथर किंग तो पादरी थे, उनके भाषण गिरजाघर में होते थे और हर भाषण में ईश्वर होते ही थे। किंग पर आरोप लगने से मीडिया में भी उनको सोवियत का दलाल कहा जाने लगा।

केनेडी ने मार्टिन लूथर किंग को बुलाया और वाइट हाउस के बाग़ में टहलते हुए कहा,

“तुम्हें मालूम है इंग्लैंड में क्या हुआ? एक बहुत ही काबिल मंत्री और मेरे मित्र किसी महिला के साथ रात बिताते पाए गए। वह महिला एक सोवियत जासूस निकली। अब उसकी वजह से उनके सभी अच्छे काम अब गौण हो जाएँगे। तुम समझ रहे हो, मैं क्या कह रहा हूँ?”

किंग ने कहा, “ठीक है राष्ट्रपति महोदय! मैं वचन देता हूँ कि अपने कम्युनिस्ट सहयोगियों से संबंध तोड़ लूँगा। मेरे लिए यह ‘सिविल राइट्स बिल ’जरूरी है।”

और फिर किंग ने अपने दोनों सहयोगियों को मना लिया कि वे संपर्क तोड़ दें।

एक विशाल मार्च की योजना बनायी। यह मार्च सीधे देश की राजधानी में ‘कैपिटल हिल ’की ओर थी। केनेडी इस विरोध-मार्च का समर्थन प्रत्यक्ष तो नहीं कर सकते थे, लेकिन परोक्ष रूप से बॉबी केनेडी ने ढाई लाख समर्थक जुगाड़ने में सहयोग दिया। इसमें श्वेत-अश्वेत, अमीर-गरीब, कैथॉलिक-प्रोटेस्टेंट सभी तरह के लोग थे।

वहीं लिंकन मेमोरियल पर मार्टिन लूथर किंग खड़े हुए। वह एक काग़ज पर लिखा वक्तव्य पढ़ रहे थे जिसमें अब्राहम लिंकन द्वारा गेटीसबर्ग में दी गयी कालजयी भाषण को याद किया। यह पढ़ते-पढ़ते वह भावुक हो गए, और आगे बिना किसी स्क्रिप्ट के कहने लगे—

> *“मेरा एक स्वप्न है कि जॉर्जिया की लाल पहाड़ियों पर ग़ुलामों के वंशज और सामंतों के वंशज एक भाईचारे की मेज पर साथ बैठेंगे। मेरे चारों बच्चे एक ऐसे अमेरिका में बड़े होंगे जहाँ वह गोरे लोगों के बच्चों के साथ खेल सकें और पढ़ सकें। हमारे मध्य सभी दूरियाँ, सभी बाधाएँ खत्म हो जाएगी और ईश्वर की सत्ता स्थापित होगी...और जब यह होगा तो ईश्वर के सभी संतान, अश्वेत और श्वेत, यहूदी और ग़ैर-यहूदी, कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट, सब मिल कर एक साथ वह नीग्रो गीत गाएँगे— ‘मुक्त हुए, हम मुक्त हुए, हे ईश्वर! आखिर हम मुक्त हुए’”*

उसके बाद वे लाखों लोग हाथों में हाथ डाले वह गीत गाते गए, जो इस ‘सिविल राइट्स ’आंदोलन का मुख्य-गान था— We shall overcome some day (हम होंगे कामयाब एक दिन)

बाद में यह गीत दुनिया भर में अलग-अलग आंदोलनों में प्रतीक के तौर पर गाया जाता।

परमाणु-परीक्षण निषेध और नस्लवाद के ख़िलाफ़ बिल के साथ केनेडी की एक आखिरी तमन्ना और थी। यह ऐसी इच्छा थी, जिससे समाज को कुछ भी प्रत्यक्ष हासिल नहीं होता। अरबों डॉलर खर्च होते। उनके सरकारी सहयोगी तो खैर हमेशा की तरह राजी नहीं ही थे। लेकिन, केनेडी को लगता था कि यह संपूर्ण मानवता के लिए एक प्रतीकात्मक जीत होगी, जब सोवियत और अमरीका मिल कर कुछ ऐसा करेंगे।

सितंबर, 1962 में राइस विश्वविद्यालय में खड़े होकर केनेडी ने कहा, "हम चाँद पर जा रहे हैं" (We chose to go to the moon)

◆ ◆ ◆

केनेडी की हत्या

22 नवंबर, 1963. डल्लास (टेक्सास).

अमेरिका के 35वें राष्ट्रपति जॉन एफ. केनेडी की 12.30 बजे दिन में हत्या कर दी गयी। वह अपनी खुली लिमोज़ीन गाड़ी में अपनी पत्नी जैक्वेलिन केनेडी, टेक्सास के गवर्नर जॉन कोनोली और उनकी पत्नी के साथ बैठे थे। उनका क़ाफ़िला डीली प्लाजा से हज़ारों दर्शकों के मध्य से गुजर रहा था, और केनेडी मुस्कुराते हुए हाथ हिला कर अभिवादन रहे थे। प्लाजा पर गाड़ी के मुड़ते ही कुछ धमाके हुए, और राष्ट्रपति केनेडी गाड़ी में लुढक गए। उनको शीघ्र पार्कलैंड मेमोरियल अस्पताल ले जाया गया, जहाँ आधे घंटे बाद उनकी मृत्यु हो गयी। राष्ट्रपति केनेडी को एक गोली सर में, और एक गोली पीठ पर लगी। उनके आगे बैठे गवर्नर कोनोली भी घायल हुए, लेकिन वे बच गए। राष्ट्रपति केनेडी अमरीका के चौथे राष्ट्रपति थे, जिनकी हत्या की गयी।

केनेडी की मृत्यु के ठीक 70 मिनट बाद एक पूर्व अमरीकी फौजी ली हार्वे ओसवाल्ड को गिरफ्तार किया गया। उसने केनेडी की हत्या के ठीक 45 मिनट बाद एक पुलिसकर्मी जे. डी. टिपिट की हत्या की थी। ओसवाल्ड

को दोनों हत्याओं का मुजरिम बताया गया, लेकिन उसने स्वयं को बेगुनाह कहा।

केनेडी का शरीर एयर फोर्स वन से वाशिंगटन ले जाया गया। वहाँ उपराष्ट्रपति लिंडन जॉनसन ने राष्ट्रपति पद की शपथ ली।

दो दिन बाद 24 नवंबर को दिन के 11.21 बजे जेल ले जाने के दौरान टेलीविजन कैमरा के सामने ओसवाल्ड की हत्या एक नाइट-क्लब के मालिक जैक रूबी ने कर दी। यह ऑरिज़िनल लाइव विडियो यूट्यूब पर उपलब्ध है। ओसवाल्ड का कोई भी ट्रायल नहीं हो सका। ओसवाल्ड की हत्या करने वाले जैक रूबी की भी चार साल बाद जेल में ही मृत्यु हो गयी।

वारेन कमीशन की विस्तृत रिपोर्ट के अनुसार जब केनेडी का क़ाफ़िला डीली प्लाजा पर मुड़ा तो गाड़ी की गति 25 मील/घंटा से घट कर 10 मील/घंटा हो गयी। उसी समय किनारे एक इमारत के छठे तल पर एक किताब गोदाम की खिड़की से ओसवाल्ड ने तीन गोलियाँ चलायी, जिनमें से दो केनेडी को लगी। इस हत्या में ओसवाल्ड के अतिरिक्त किसी की लिप्तता नहीं पायी गयी। ओसवाल्ड एक मार्क्सवादी-लेनिनवादी व्यक्ति था, और फिदेल कास्त्रो का समर्थक था।

सरकारी एजेंसियों का कयास था कि फिदेल कास्त्रो की हत्या की साजिश (ऑपरेशन मॉन्गूज़) की वजह से कास्त्रो ने केनेडी की हत्या करवायी होगी। इसमें सोवियत खुफ़िया एजेंसी KGB की लिप्तता का भी संदेह था, क्योंकि ओसवाल्ड न सिर्फ़ पिछले तीन वर्ष रूस में बिता चुका था, बल्कि उसकी पत्नी भी रूसी थी।

इसे एक 'ऑपेन ऐन्ड शट 'केस की तरह भुला दिया गया। बाद में जॉन के भाई बॉबी केनेडी के अनुरोध पर ऑटोप्सी के काग़ज़ और मेडिकल रिकॉर्ड भी नष्ट कर दिए गए।

अब वापस कालक्रम में थोड़ा पीछे चलते हैं। केनेडी की मृत्यु से एक महीने पूर्व जब संयुक्त राष्ट्र के राजदूत स्टीवेंसन डल्लास आए थे तो दक्षिणपंथी गुटों ने उन पर हमला किया था। चार नवंबर को डल्लास के

जॉन बिर्च सोसाइटी (दक्षिणपंथी संस्था) ने अखबार में एक कथन दिया, "केनेडी इस दुनिया पर एक बोझ हैं।"

20 नवंबर को FBI को एक संदेश मिलता है कि केनेडी की जान को खतरा है। कुछ रिपोर्ट के अनुसार यह संदेश हत्यारे ओसवाल्ड ने ही भेजा था, लेकिन कोई पुष्टि नहीं हो सकी। लेकिन, इतनी चेतावनियों के बाद भी केनेडी को डल्लास जाने से न रोका गया, और न ही ख़ुफ़िया सुरक्षा व्यवस्था पुख़्ता की गयी। ओसवाल्ड बड़े आराम से हत्या के कुछ दिन पूर्व इतालवी राइफल खरीदता है, और FBI कुछ नहीं करती।

हत्या से एक दिन पूर्व 'डल्लास मॉर्निंग न्यूज़ 'में एक विज्ञापन छपा, जिसमें केनेडी को एक अपराधी कहा गया और सोवियत का दलाल कहा गया। जब उनकी पत्नी ने यह विज्ञापन दिखा कर उन्हें रोकना चाहा, केनेडी ने कहा,

"यह देश पागल हो रहा है। लेकिन जैकी! अगर कोई सनकी किसी खिड़की से राइफ़ल चला कर मुझे गोली से उड़ा ही दे, तो उसे कौन रोक सकता है? इसकी चिंता क्या करना?"

केनेडी का पूर्वानुमान तो बिल्कुल ठीक था, लेकिन वह सनकी आखिर किसका आदमी होगा? KGB? कास्त्रो? जिमी होफ्फा? माफिया? CIA? हूवर? लिंडन जॉनसन? दक्षिणपंथी गुट? या बॉबी?

◆ ◆ ◆

संदिग्ध 1: फिदेल कास्त्रो

> *"कास्त्रो हमारे द्वारा रचा गया, और खड़ा किया व्यक्ति है। हम भ्रष्ट तानाशाह बतिस्ता की ज्यादतियों को अनदेखा करते रहे, इसलिए कास्त्रो का जन्म हुआ। और अब हम कास्त्रो से डर रहे हैं।"*

- जॉन एफ. केनेडी (एक फ्रेंच पत्रकार से)

कास्त्रो केनेडी को क्यों मरवाएँगे? ख़ास कर तब, जब केनेडी को उनके देश में ही कम्युनिस्ट कहा जा रहा था। परमाणु-संकट के बाद केनेडी ने क्यूबा पर कभी आक्रमण नहीं करने का वादा किया था। कास्त्रो-विरोधी माफ़िया और होफ्फ़ा के पीछे बॉबी केनेडी हाथ धोकर पड़ गए थे। बल्कि केनेडी के मरने के बाद अगर रिचर्ड निक्सन सत्ता में आते, तो कास्त्रो को अधिक खतरा था। फिर भी क्यों?

'ऑपरेशन मॉन्गूज '(नेवला) एक माकूल वजह हो सकती है, जो कास्त्रो रूपी साँप को कुचलने के इरादे से केनेडी ने बनवाया था। यह एक CIA ऑपरेशन था जो मियामी विश्वविद्यालय के अंदर चल रहा था। इसमें हर तरह की योजना थी। क्यूबा के खेत और उद्योग चुपके से जलाने से लेकर जनता को भड़काने, और गुरिल्ला-प्रशिक्षण से लेकर ख़ुफ़िया तरीके से मरवाने तक। इसके राजनैतिक बॉस थे— बॉबी केनेडी।

लेकिन, बॉबी केनेडी को तो गोली मारी ही नहीं। निशाना ग़लत लग गया? या शुरुआत राष्ट्रपति से की?

CIA इस ऑपरेशन के लिए घिनौने जाल बुन रहा था। केनेडी के माफ़िया दोस्त गियांकानो को सुपारी दी गयी। एक योजना बनी कि एक सोवियत का फाइटर-प्लेन जुगाड़ कर, उससे अपने ही देश पर हमला कर देंगे; और फिर इस आधार पर अमरीका आक्रमण कर देगा। कभी कास्त्रो के एक सहयोगी मंत्री को तैयार किया गया कि वह जहर का इंजेक्शन दे देंगे। और कभी कास्त्रो के सिगार में जहर डालने की योजना बनी।

केनेडी ने इस ऑपरेशन के लिए एक तरफ सहमति तो दी थी, लेकिन उन्हें लगता था कि कास्त्रो की शहादत क्यूबा को अधिक खूँखार बना देगी। फिदेल में कूटनीतिक अवसरवादिता थी। वह सोवियत की भी निंदा करते रहते थे। जब केनेडी ने उन्हें मृत्यु से पूर्व वार्ता का संदेश भिजवाया, वह तुरंत तैयार हो गए थे। डर तो यह था कि अगर फिदेल मर गए तो सत्ता उनके भाई राउल और सहयोगी चे गुवैरा के हाथ चली जाएगी।

ये दोनों क्रांतिकारी लड़ाके थे, जो दक्षिण अमेरिका में पहले से गुरिल्ला गतिविधियाँ भड़का रहे थे।

इस वजह से केनेडी ने जनवरी 1963 से यह कहना शुरू कर दिया था कि CIA को अब यह ऑपरेशन बंद कर देना चाहिए। इसके बदले एक क्यूबा मामलों की कमिटी बनाई गयी। CIA के अधिकार घटाने की बात हुई।

लेकिन कुछ दलदल ऐसे होते हैं, जिसमें एक बार फँसे तो धँसते ही चले जाते हैं। केनेडी की कुर्बानी तो शायद एक शुरुआत थी।

जाहिर है, कास्त्रो को यह बातें पता थी, और वह अपनी तैयारी रखते थे। उनकी अपनी बहन युआनिता अमेरिका के साथ मिल गयी थी। डोमिनिकन रिपब्लिक और वियतनाम के तानाशाहों को CIA मरवा चुकी थी। कास्त्रो को लगने लगा कि हिट-लिस्ट में अब उन्हीं का नंबर है।

कास्त्रो के जासूस CIA के ऑपरेशन मॉन्गूज में घुस गए। यह आसान था क्योंकि वहाँ सभी क्यूबा के लोग ही थे, जिनको प्रशिक्षण दिया जा रहा था।

केनेडी के कथित हत्यारे ओसवाल्ड का चरित्र कुछ अजीब है। उसने मरने से पहले कहा कि उसे बलि का बकरा बनाया गया है, लेकिन किसका? यह नहीं बताया।

हाल में डोनाल्ड ट्रंप द्वारा सार्वजनिक किए गए फाइलों के अनुसार ओसवाल्ड क्यूबा की ख़ुफ़िया एजेंसी से संपर्क में था। वह सोवियत के मिंस्क शहर में उनके साथ रहा था। केनेडी के हत्या से कुछ दिन पूर्व उसने कास्त्रो के समर्थन में पर्चे बाँटे थे, और कास्त्रो-विरोधियों से झड़प हुई थी।

वहीं दूसरी ओर, गैरीसन रिपोर्ट के अनुसार उसके कास्त्रो-विरोधी ऑपरेशन मॉन्गूज के लोगों से गहरे ताल्लुक थे। वह एक दक्षिणपंथी व्यवसायी का ख़ास दोस्त था, और उसके साथ एक समलैंगिक पार्टी में भी देखा गया था।

मेक्सिको सिटी के क्यूबा दूतावास में जब ओसवाल्ड को बुला कर इस 'डबल-गेम 'की पूछताछ की गयी, उसने अपनी बंदूक निकाल कर कहा,

"मैं अपनी निष्ठा सिद्ध करुँगा। मैं उस हरामजादे केनेडी को अपने हाथों से मारूँगा।"

◆ ◆ ◆

संदिग्ध 2: जे. एड्गर हूवर, निदेशक, FBI

"राष्ट्रपति केनेडी की अस्पताल में मृत्यु हो गयी" डलास एजेंट ने FBI निदेशक हूवर को फ़ोन किया

"राष्ट्रपति कैसे हैं?" हूवर ने पूछा

"जी। मैंने कहा कि मृत्यु हो गयी।"

"मैं पूछ रहा हूँ, राष्ट्रपति कैसे हैं?"

एड्गर हूवर अमरीकी इतिहास के अमात्य राक्षस कहे जा सकते हैं। राज्य के लिए समर्पित एक काबिल व्यक्ति। उन्होंने आठ राष्ट्रपतियों को आते-जाते देखा। केनेडी की मृत्यु होते ही जहाँ अमरीका शॉक में था, उनके लिए अगले राष्ट्रपति महत्वपूर्ण थे। जो मर गया, वह तो मर गया। उन्होंने टी.वी. पर देखा कि लिंडन जॉनसन छाती पर हाथ धरे खड़े हैं, तो उन्हें चिंता हो गयी कि हृदयाघात तो नहीं आ गया? इसलिए पूछा— (नए) राष्ट्रपति कैसे हैं?

हूवर और लिंडन जॉनसन एक उम्र के थे, जिनकी दोस्ती पुरानी थी। जैक और बॉबी केनेडी तो उनके लिए रईस लड़के थे जो वाइट हाउस आ गए। वह किसी अभिभावक की तरह उन पर नजर रखते और चेतावनी देते रहते। केनेडी कई महिलाओं के साथ 'नेकेड पूल पार्टी 'करते, जिससे उन्हें कोई शिकायत नहीं थी। वह बस ये जाँचते रहते कि कोई कम्युनिस्ट तो

नहीं। जैसे ही मिल गयी, वह चेतावनी देते कि इससे दूरी बना लो। किसी अय्याश राजा के कुशल महामंत्री की तरह।

जब केनेडी की हत्या के लिए ली हार्वे ओसवाल्ड पकड़े गए, रिचर्ड निक्सन ने फ़ोन कर पूछा, "कोई सनकी दक्षिणपंथी है क्या?"

हूवर ने कहा, "नहीं नहीं। कम्युनिस्ट है।"

केस क्लोज्ड!

हूवर ने हत्या के तीसरे ही दिन घोषणा कर दी—

"पूर्व राष्ट्रपति केनेडी की हत्या ली हार्वे ओसवाल्ड ने की। वह मार्क्सवादी-लेनिनवादी था। उसने अकेले ही यह काम किया। किसी भी बाहरी ताकत या अंदर की एजेंसी का हाथ नहीं। ली अब मर चुका है। इसलिए यह जाँच अब बंद की जाती है।"

सभी चौंक गए कि अमरीका के राष्ट्रपति की दिन-दहाड़े हत्या कर दी गयी, और मात्र दो दिन में जाँच समाप्त? जैसे वह हत्यारे को करीब से जानते थे?

बात ग़लत नहीं थी। ओसवाल्ड पर पिछले एक साल से नजर रखी जा रही थी। वह सोवियत में तीन साल रह कर लौटा था, और ऐसे हर व्यक्ति के पीछे एक FBI का एजेंट लगा दिया जाता है। एजेंट होस्टी उसकी गतिविधियों पर नजर रख रहे थे। एक दिन ओसवाल्ड की पत्नी ने एजेंट की गाड़ी का नंबर नोट कर लिया।

ओसवाल्ड राष्ट्रपति की हत्या के दो हफ्ते पहले FBI के ऑफिस पहुँचता है और सेक्रेट्री को एक लिफाफा पकड़ाता है। उसमें संदेश था— "अगर मेरी पत्नी को परेशान किया तो तुम्हारा ऑफिस उड़ा दूँगा।"

एजेंट यह चिट्ठी पढ़ कर ध्यान नहीं देते। FBI को ऐसी धमकी भरी चिट्ठियाँ मिलना आम बात थी। इसके अलावा उन्हें जानकारी होती है कि ली हार्वे के माफिया संबंध हैं। उन्हें यह भी मालूम था कि वह उसी किताब गोदाम में काम करता है जो राष्ट्रपति केनेडी के क़ाफ़िले के रास्ते में था।

आखिर जनता के बढ़ते सवालों पर राष्ट्रपति लिंडन जॉनसन ने हत्या की जाँच के लिए एक वारेन कमीशन बिठाया। उन्होंने हूवर से तलब की।

हूवर ने कहा, “हमने ओसवाल्ड के संबंध में मिली जानकारियों को उस वक्त जरूरी नहीं समझा। हमें नहीं मालूम था कि वह राष्ट्रपति को मारने की हिमाक़त करेगा।”

यह तर्क ठीक था। टेक्सास में सैकड़ों गुंडे होंगे। कई कम्युनिस्ट भी होंगे। अब इनमें कौन राष्ट्रपति की हत्या कर सकता है, यह कैसे मालूम होगा? और यूँ भी धमकियाँ दक्षिणपंथी गुटों से आ रही थी, वामपंथी गुटों से नहीं। तो इंटेलिजेंस का ध्यान उधर ही था।

आखिर अमरीका की सबसे विस्तृत FBI जाँच की गयी। पच्चीस हज़ार साक्षात्कार किए गए। छब्बीस वॉल्यूम की रिपोर्ट बनी, लेकिन निष्कर्ष वही। हूवर अब भी अड़े थे— ली हार्वे ओसवाल्ड ने अकेले ही केनेडी को मारा। इस थ्योरी के ख़िलाफ़ कोई भी सबूत आता तो हूवर उसे दबा देते या उसे महत्व नहीं देते।

FBI की जाँच में ग़लतियाँ नहीं, ब्लंडर थे। मात्र तीन गोलियों की बात हुई थी। एक गोली छिटक कर बाहर खड़े एक व्यक्ति के बगल से गुजरी। बची दो गोलियाँ केनेडी को लगी। उनमें से एक गोली ‘मैजिक बुलेट’ थी!

वह जादुई गोली केनेडी की पीठ से घुस कर उनकी गर्दन से निकल कर सामने बैठे गवर्नर कोनोली के छाती में लगी। और फिर उनके दाहिने कलाई से गुजरती हुई बायीं जाँघ में लगी। एक ही गोली ने इतना घुम-फिर कर यू-टर्न लेते हुए सफर तय किया। यह गोली ऑटोप्सी के बाद भी बिल्कुल नयी गोली की तरह चमक रही थी। यह असंभव था। लेकिन, हूवर इस बात पर अड़ गए थे कि बस तीन ही गोलियाँ और एक ही शूटर था।

FBI के शूटरों ने जाँच के लिए उसी छठे तल की खिड़की से निशाना साध कर देखा, और किसी से निशाना लगा ही नहीं। खिड़की और सड़क के मध्य एक पेड़ था, जिससे दृष्टि बाधित हो रही थी। फिर एक चलती गाड़ी में हज़ारों की भीड़ के बीच इतना अचूक निशाना?

22 जनवरी, 1964 को वारेन कमीशन को एक चौंकाने वाली खबर मिली — हत्यारा ली हार्वे ओसवाल्ड FBI का वैतनिक मुखबिर था। उसे FBI से पैसे मिलते थे!

हूवर ने इसका खंडन किया, और कहा कि ऐसी कोई बात नहीं थी।

जिस दिन राष्ट्रपति केनेडी की मृत्यु हुई, FBI के अफसर गाइ बैनिस्टर और उनके सहयोगी जैक मार्टिन न्यू ऑर्लींस की एक बार में बैठे थे। उनमें कुछ विवाद हुआ, और ऑफिस पहुँचते ही बैनिस्टर ने मार्टिन के सर पर रिवॉल्वर के कुंदे से मारना शुरु किया।

मार्टिन चिल्लाए, "क्या कर रहे हो? मार डालोगे? जैसे केनेडी को मार डाला?"

मार्टिन ने इस बात की बाद में गवाही दी कि ऑफिस में कुछ योजनाएँ बन रही थी। उनकी गवाही से पहले ही जून, 1964 में आरोपी एजेंट गाइ बैनिस्टर की हृदयाघात से मृत्यु हो गयी थी। एजेंट होस्टी को अगले तीन साल तक चुप रहने कहा गया, और मना करने पर हूवर उनके तबादले पर तबादले करते रहे।

हूवर ने हत्या भले नहीं करवायी हो, लेकिन उनके जीवनीकार लिखते हैं, "वह इस पूरे प्रकरण में कोई बड़ा 'कवर अप 'कर रहे थे।"

सवाल है कि किसका 'कवर-अप 'कर रहे थे। अपने एजेंसी की ग़लतियों का? CIA का? या (नए) राष्ट्रपति लिंडन जॉनसन का?

◆ ◆ ◆

संदिग्ध 3: KGB

"हम पृथ्वी के दो बड़े देश हैं। हमारे लोग एक जैसे दिखते हैं। एक ही पानी पीते हैं। एक ही हवा में साथ लेते हैं। और सबसे बड़ी बात, कि हम सभी को एक न एक दिन मरना ही है। तो क्या, कुछ दिन साथ नहीं रह सकते?"

— केनेडी (सोवियत-अमेरिका विवाद पर)

मॉस्को के प्रिय थे केनेडी। ख़ुश्चेव और KGB के लोगों का यह मानना था कि राष्ट्रपति केनेडी ही रहें। बल्कि, आने वाले चुनाव में उनको जिताने के लिए ख़ुफ़िया गतिविधि भी चल रही थी। यह बात CIA को भी मालूम थी, और कई अमरीकी दक्षिणपंथी केनेडी को सोवियत का एजेंट कहते थे। फिर भी, क्या यह मुमकिन है कि KGB ने केनेडी को मारने की साज़िश रची हो?

सबसे महत्वपूर्ण तथ्य तो यही है कि कथित हत्यारा ली हार्वे ओसवाल्ड सोवियत में तीन साल बिता कर आया था। उस जमाने में अगर कोई अमरीकी सोवियत जाकर रहने लगे, तो उसे गद्दार करार दिया जाता था। यह 'प्वाइंट ऑफ नो रिटर्न 'था। ओसवाल्ड ने भी मॉस्को पहुँचते ही शरणार्थी नागरिकता की अर्जी डाल दी। क्योंकि उसे लगा अमेरिका वापस जाना नामुमकिन है?

लेकिन, मात्र उन्नीस साल का अमरीकी फौजी भाग कर सोवियत गया क्यों?

ओसवाल्ड का बचपन और यौवन निराशाओं से भरा था। उसने तीस अलग-अलग स्कूलों में पढ़ाई की। एक स्थान से दूसरे स्थान भटकते हुए। न्यूयॉर्क में वह छोटे-मोटे अपराध से भी जुड़ा था। उसकी मानसिक हालत की वजह से सुधार-केंद्र में भी रखा गया, जहाँ उसे सनकी और गुस्सैल बताया गया।

उस जमाने में अमरीकी युवकों को फौज में कुछ दिन गुजारना एक मजबूरी भी थी। सरकार ऐसा चाहती थी। सत्रह साल की उम्र में ओसवाल्ड ने सान डिएगो में प्रशिक्षण शुरू किया, जिसमें M-1 राइफल की ट्रेनिंग भी मिली। तीन हफ्ते के अंदर वह फौज के सबसे काबिल 'शार्पशूटर 'में था। वह दो सौ गज की दूरी से पक्का 'बुल्स-आई 'निशाना साध सकता था। वह दोस्तों या लड़कियों से दूर ही रहता, और बाद में यह भी कयास मिले कि वह समलैंगिक था। उसके साथ जो भी प्रशिक्षु थे, उस पर खूब धौंस जमाते।

अकेले पड़ जाने के बाद उसने किताबें पढ़नी शुरू की। मार्क्स और लेनिन को पढ़ना। हालांकि उसके दोस्तों ने बताया कि वह दो-चार पेज पढ़ कर सो जाता, लेकिन अपने पढ़ाई की डींग ज़रूर हाँकने लगा।

जब एक अफसर ने पूछा कि तुम वामपंथी साहित्य क्यों पढ़ रहे हो, तो ओसवाल्ड ने कहा, "मैं दुश्मनों के दिमाग को समझना चाहता हूँ"

उसके बाद वह अपने ग़ुस्सैल स्वभाव में वापस आ गया था। एल टोरो में प्रशिक्षण के दौरान मार-पीट के लिए उसे दो बार कोर्ट मार्शल किया गया, और रडार ऑपरेशन से हटा कर शौचालय सफाई का काम दे दिया गया।

एक बुरे बचपन और दो साल फौज में बिता कर वह अमेरिका से नफरत (?) करने लगा था। अब उसे सर्वहारा का तिलिस्मी स्वर्ग देखना था, जो किताबों में पढ़ा था। वह पहले फ्रांस के रास्ते फिनलैंड पहुँचा, और वहाँ से हफ्ते भर की यात्रा वीसा लेकर मॉस्को। मॉस्को ने उसकी शरणार्थी अर्जी ठुकरा दी, तो उसने होटल में अपनी कलाई काट ली।

ख़ुश्चेव अभी अमरीका से घूम कर लौटे थे, और एक अमरीकी होटल में आत्महत्या कर रहा था। इससे तो हंगामा हो जाता। KGB के अनुसार वह किसी काम का नहीं था। अब इस कथन में पेंच है, कि क्या एक अमरीकी शार्पशूटर फौजी किसी काम का नहीं? या फिर उसकी पहचान पता नहीं लगी? या KGB ने उसको केनेडी की हत्या के लिए प्रशिक्षण देना शुरू किया? इस थ्योरी में सबसे बड़ी विसंगति यह है कि केनेडी उस वक्त राष्ट्रपति ही नहीं थे, तो हत्या की योजना तो दूर की बात थी।

जो बात पक्की है, वह ये कि ओसवाल्ड को मॉस्को से भगा कर मिन्स्क (अब बेलारूस की राजधानी) भेज दिया गया। वह भी एक टी.वी.-रेडियो की फैक्टरी में। उसको एक रूसी भाषा प्रशिक्षक दिए गए। वहाँ अंग्रेज़ी जानने वाले कम ही लोग थे, तो वह प्रशिक्षण शुस्केविच नामक गणितज्ञ ने दिया। यह व्यक्ति उस समय तो साधारण व्यक्ति थे, लेकिन तीस साल बाद जब बेलारूस एक देश बना तो वह वहाँ के पहले राष्ट्राध्यक्ष बने!

मिन्स्क में वह अमरीकी मेहमान था, तो उसका वेतन भी औरों से कहीं अधिक था। ओसवाल्ड ने अपनी डायरी में लिखा है कि उसे अय्याशी

करने लायक वेतन मिलता था, लेकिन मिन्स्क शहर में कुछ था ही नहीं। यह विश्व-युद्ध का ध्वस्त शहर था, जो धीरे-धीरे खड़ा हो रहा था। उसके एक सहयोगी ने बताया कि वह वहाँ भी राइफल-शूटिंग प्रतियोगिता में भाग लेता था, लेकिन उसका निशाना बहुत ही बुरा था। वहीं उसने एक रूसी महिला मरीना से शादी कर ली। उससे एक बेटी भी जन्मी।

लेकिन तीन साल एक नीरस शहर में बिता कर वह बोर हो गया। उसके पास अब भी अमरीकी पासपोर्ट था, जिस आधार पर उसकी पत्नी को भी अमरीकी वीसा मिल गया। वह आखिर अपने परिवार के साथ 1962 में अपने शहर डल्लास, अमेरिका लौट आया।

उसके ठीक अगले साल उसने अमेरिका के राष्ट्रपति केनेडी की हत्या कर दी!

FBI की हालिया सार्वजनिक की गयी फ़ाइलों के अनुसार उसने केनेडी की हत्या से दो महीने पूर्व मेक्सिको की सोवियत दूतावास में फ़ोन किया था। यह फ़ोन टैप किया गया था, जिसमें उसने पूछा था, “वाशिंगटन के टेलीग्राम में कुछ बात आगे बढ़ी?”

यह कयास लगाए जाते हैं कि उसकी पत्नी उस पर वापस सोवियत जाने का दबाव बना रही थी, और इसलिए वह दूतावास से संपर्क कर रहा था। लेकिन, एक दूसरा सच भी था। उसने जिस दूतावास अधिकारी से बात की, उनका नाम कास्तिकोव था, और वह दूतावास में उप-उच्चायुक्त थे।

FBI निदेशक हूवर को जब बाद में यह जानकारी मिली तो उन्होंने कहा, “हमें इस बात को अधिक आग नहीं देनी चाहिए। हमारे सोवियत से संबंध खराब होंगे।”

कास्तिकोव का दूसरा परिचय यह था कि वह KGB के 13वें डिवीजन के इनचार्ज थे। KGB का यह डिवीजन ‘Sabotage और Assassination ’(तोड़-फोड़ और हत्या) विभाग था!

◆ ◆ ◆

संदिग्ध 4: माफ़िया

"अच्छा हुआ। मर गया। उसकी आँखों को कीड़े खाएँ अब।"

- जिमी होफ्फा (केनेडी की हत्या पर)

हत्या माफ़िया का धंधा है। उनकी पूरी संरचना ही इस इर्द-गिर्द बनी है। हत्या की योजना बनाना उनका काम है। शार्प-शूटर से लेकर प्वाइंट-ब्लैंक उड़ाने वाले लोग मौजूद होते हैं। पकड़े जाने या जेल जाने का कोई ख़ास डर नहीं होता। जेल की यातनाओं पर भी मुँह नहीं खोलते। अमरीका के इतालवी माफ़िया एक संगठित अपराध-तंत्र थे। अगर वे वाकई चाहते, तो केनेडी को मारना उनके लिए कोई बड़ी बात नहीं थी। लेकिन, हर संदिग्ध से एक ही प्रश्न मन में उठता है- क्यों?

एक तर्क यह बैठता है कि माफ़िया ने केनेडी को राष्ट्रपति बनाने में एँड़ी-चोटी लगा दी थी। चुनाव में धाँधली करवायी थी, लाखों डॉलर खर्च किए थे; बस इसलिए कि केनेडी कास्त्रो को खत्म करें, और क्यूबा का धंधा उन्हें वापस मिल जाए। केनेडी यह कर न सके। माफ़िया ने सजा मुक़र्रर कर दी। खत्म कर दिया।

केनेडी को मारने की और भी वजह थी। बॉबी केनेडी ने माफ़िया और उनके सहयोगी यूनियन नेता जिमी होफ्फा के ख़िलाफ़ जंग छेड़ दी थी। FBI की एक यूनिट ही इस काम पर लगा दी थी। जिमी होफ्फा को बॉबी केनेडी ने, सीनेट में बुला कर पत्रकारों के सामने पूछताछ की थी। माफ़िया संबंधों पर उधेड़ा था। जिमी होफ्फा के लिए केनेडी से बड़ा दुश्मन कोई था ही नहीं। और उनके पास इतने माफ़िया संपर्क और धन था कि केनेडी को मरवा सकते थे।

जिमी होफ्फा के वकील रोगानो ने अपनी किताब में लिखा है, "जिमी होफ्फा ने सान्तोस और कार्लोस मार्चेलो नामक माफ़िया डॉन के साथ मिल कर केनेडी की हत्या की योजना बनायी थी...सान्तोस ने '87 में मरते

हुए आखिरी शब्द कहे कि मुझ से ग़लती हो गयी। राष्ट्रपति को नहीं, उसके भाई बॉबी को मारना था।"

कार्लोस मार्चेलो की निजी दुश्मनी भी थी। उसे ग्वाटेमाला से पकड़ कर अमेरिका लाया गया था और सीनेट कमिटी के सामने जैक और बॉबी केनेडी ने लंबी पूछताछ की थी।

मार्चेलो को जब '62 में पूछा गया था कि बॉबी को मारना जरूरी है तो उसने कहा, "अगर बॉबी को मारा तो उसका भाई हमें छोड़ेगा? कुत्ते को मारना है तो पूँछ नहीं काटते, सर ही काट देते हैं।"

बॉबी केनेडी ने भी कहा, "मेरे माफ़िया के पीछे पड़ने की वजह से भाई की हत्या हुई। वे मुझे मार देते तो अच्छा होता।" (उनको तो खैर बाद में कार्लोस के आदमी द्वारा मार ही दिया गया)

जिमी होफ्फ़ा के सहयोगी फ्रैंक शीरन ने कहा, "मैंने केनेडी की हत्या से पहले तीन राइफल डल्लास पहुँचाए थे। मुझे नहीं मालूम कि उनमें से एक हत्या में प्रयोग हुए या नहीं, लेकिन राइफल ठीक वैसे ही थे।"

हत्यारे ली हार्वे ओसवाल्ड के चाचा भी माफ़िया से जुड़े रहे थे, और स्वयं ओसवाल्ड भी संपर्क में था। लेकिन, वह चौबीस साल का लड़का कोई डॉन-वॉन नहीं था। न ही वह किसी गैंग का सदस्य था। वह तो सोवियत से लौट कर छोटे-मोटे काम करता था, और हत्या के समय भी वह किताब गोदाम में ही काम कर रहा था।

लेकिन, ओसवाल्ड की दिन-दहाड़े हत्या जिस व्यक्ति ने की, वह खेला-खिलाया गैंगस्टर था। जैक रूबी नामक वह व्यक्ति तीस के दशक में अल कपोन गैंग का सदस्य था। उसके बाद वह शिकागो में माफ़िया गतिविधियों में रहा। और बाद में डलास में जुए का धंधा फैलाने के लिए भेजा गया। इससे पहले कि ओसवाल्ड कुछ खुलासा करता, जैक रूबी ने टी.वी. कैमरा के सामने उसे गोली मार दी। बिल्कुल माफ़िया अंदाज में।

केनेडी की हत्या के पंद्रह मिनट बाद जैक रूबी महज पाँच सौ मीटर दूर एक अखबार कार्यालय में बैठा था। एक चश्मदीद के अनुसार वह हत्या से ठीक पहले एक पिक-अप ट्रक से कुछ सामान हत्या-स्थल के पास ही

उतार कर गया। वारेन कमीशन की अब सार्वजनिक की गयी रिपोर्ट के अनुसार हत्या से ठीक पहले जैक रूबी ने एक मुखबिर को कहा, “देखना! अब थोड़ी देर में पटाखे फटेंगे”

ओसवाल्ड के गिरफ्तार होते ही वह पुलिस मुख्यालय में पत्रकार भेष में देखा गया। वह संभवत: उसी दिन ओसवाल्ड को मार देना चाहता था। लेकिन ताज्जुब की बात यह है कि वारेन कमीशन ने छह महीने तक जैक रूबी से कोई पूछताछ ही नहीं की। आखिर उसकी बहन ने अर्जी दी, तब जाकर कमीशन ने बुलाया।

जैक रूबी ने कहा, “मेरे पास कहने को बहुत कुछ है। लेकिन डल्लास में मेरी जान को खतरा है। आप वाशिंगटन ले चलिए।”

कमीशन ने वाशिंगटन ले जाने से इन्कार कर दिया। जैक रूबी की अंतत: बिना किसी ख़ास पूछताछ के, जेल में ही मृत्यु हो गयी।

जैक रूबी ने एक अजीब बात ज़रूर कही कि ओसवाल्ड एक कास्त्रो-विरोधी दल का सदस्य था, और क्यूबा की कास्त्रो से आज़ादी चाहता था। जबकि इससे पहले उसे कास्त्रो और सोवियत का एजेंट कहा गया था।

उसके दोस्तों ने बाद में कहा कि जैक रूबी केनेडी की मृत्यु से दुखी था, इसलिए हत्यारे को गोली मार दी। लेकिन, यह बात सही नहीं लगती क्योंकि वह माफ़िया गैंगस्टर और नाइटक्लब का मालिक था, जो पहले से ओसवाल्ड को जानता था। उसने योजना बना कर ही हत्या की होगी।

संभव है कि ओसवाल्ड अकेला शूटर नहीं था। उसके अलावा भी शूटर मौजूद थे। कई चश्मदीदों ने कहा कि गोलियाँ सड़क किनारे लगे बाड़ के पीछे से चली। बिल्कुल केनेडी की गाड़ी के पास से। और वहीं जैक रूबी को पिक-अप ट्रक के साथ भी देखा गया था। कुल छह-सात गोलियाँ चली। केनेडी को दो गोलियाँ लगी, और सामने बैठे कोनोली को तीन गोलियाँ लगी। एक गोली बाहर खड़े एक दर्शक के बगल से गुजरी।

माफ़िया यह सब कर सकता है। लेकिन माफ़िया को इससे मिला क्या? माफ़िया तो पैसे के लिए काम करता है। हत्या के एक दशक बाद यूनियन

नेता जिमी होफ्फ़ा अचानक हमेशा के लिए गायब हो गए। आज तक मिले ही नहीं। जाँच करने पर पाया गया कि जिमी होफ्फा ने यूनियन पेंशन फंड से कई मिलियन डॉलर गायब कर दिए गए थे। क्या यह केनेडी हत्या की सुपारी थी?

प्रश्न तो यह उठता है कि इतनी जानकारियों के बाद भी कमीशन ने माफ़िया पर उंगली क्यों नहीं उठायी? सबसे आसान तो यही कहना था कि माफ़िया ने केनेडी की हत्या कर दी। लेकिन, इस पूरे मसले को ही क्यों गायब कर दिया गया? कमीशन का निष्कर्ष यह था कि माफ़िया का इस हत्या में कोई हाथ नहीं। जबकि बॉबी ने बाद में भी कहा कि यह माफ़िया का ही काम है।

डोनाल्ड ट्रंप के द्वारा सार्वजनिक की गयी हज़ारों काग़जों के बाद भी CIA और FBI ने कहा कि कुछ कागज़ात सार्वजनिक नहीं किए जा सकते। उससे हमारे राष्ट्रीय संस्थानों पर खतरा है। किस संस्थान पर? पाँच दशकों बाद आखिर क्या खतरा है? क्या माफ़िया और ओसवाल्ड किसी और की कठपुतली थे?

◆ ◆ ◆

संदिग्ध 5: कु क्लुक्स क्लान (KKK)

“केनेडी के आस-पास हज़ारों अंगरक्षक होंगे”

“यह तो और भी अच्छा है”

“कैसे मारने का इरादा है?”

“किसी ऑफिस की बिल्डिंग से। एक अच्छे राइफल से।”

(9 नवंबर, 1963 को दक्षिणपंथी जोसेफ मिलटियर और उसके सहयोगी सोमरसेट के मध्य बातचीत, जिसे मियामी पुलिस ने रिकॉर्ड किया। दो हफ्ते बाद केनेडी की इसी तरह से हत्या हुई।)

दक्षिणपंथ को केनेडी से नफ़रत थी। इसलिए नहीं कि वह डेमोक्रैट नेता थे, बल्कि इसलिए कि वह अमरीकी संस्कृति की मूल अवधारणा को ही तोड़ रहे थे।

अमरीका समानतावादी देश है ही नहीं। वहाँ अमीर-गरीब के बीच एक खाई बनायी जाती है, कि गरीब को अमीरों पर रश्क आए और वह मेहनत कर अमीर बने। यही पूँजीवाद का दर्शन है— विषमता, प्रतिस्पर्धा, प्रगति। अगर विषमता खत्म हो जाए तो प्रतिस्पर्धा खत्म, और प्रगति रुक जाएगी।

इसी का सांस्कृतिक पक्ष था— सामंत-गुलाम और गोरा-काला भेद। दक्षिणी राज्यों के लोग (Southerners) यह मानते थे कि वे असल अमरीकी संस्कृति के रक्षक हैं, उत्तर के लोग संस्कृति भ्रष्ट करते हैं। वे मानते थे कि इन दलित, अनपढ़, बुद्धि से कमजोर, सदियों ग़ुलामी काट चुके अफ्रीकी को समानाधिकार नहीं दिया जा सकता। इन्हें अगर अपने साथ बिठाया तो ये मवाली-गुंडे भले बन जाएँ, समाज में ऊँची जगह न पा सकेंगे। उनकी भलाई भी इसी संरचना में है कि गोरों के घर में नौकर रहें, और अपने परिवार का पालन-पोषण करें। केनेडी ने यह सदियों से चली आ रही परंपरा तोड़ने की ठान ली। उन 'राइट विंग 'लोगों की नजर में यह देश तोड़ने के बराबर था। आखिर एक पचास-साठ साल का गोरा, जिसने कभी किसी नीग्रो को साथ में नहीं बिठाया, वह उसके साथ बैठ भोजन कैसे करेगा?

लिंडन जॉनसन दक्षिण के नेता थे, पुराने खयालातों के थे। उनके दोस्त दक्षिण के ये रुढ़िवादी धनाढ्य गोरे ही थे। यह सुनना आम था, "राष्ट्रपति तो अपने टेक्सास का हो, इस केनेडी को निकालो!"

केनेडी के मरते ही यह संभव हो गया। लिंडन जॉनसन राष्ट्रपति बन गए।

KGB के मित्रोखिन आर्काईव के अनुसार— "दक्षिण के तीन कट्टर दक्षिणपंथी तेल व्यवसायियों मचिन्सन, हंट और रिचर्डसन ने मिल कर केनेडी के हत्या की साजिश की"

इस थ्योरी में पहली विसंगति तो यह है कि यह सोवियत के लीक काग़ज़ हैं, जो ग़लत प्रोपोगैंडा हो सकते हैं। दूसरी बात यह कि इसमें एक व्यक्ति (रिचर्डसन) केनेडी के राष्ट्रपति बनने से पहले ही मर चुके थे।

लेकिन, इसमें सत्य यह है कि जिस जैक रूबी ने सरे-आम ली हार्वे ओसवाल्ड की हत्या की, वह हत्या से ठीक पहले डल्लास के एक बड़े तेल व्यवसायी से मिलने गया था। यह बात अमेरिका के हालिया रीलीज़ दस्तावेज में दर्ज़ है।

मित्रोखिन आर्काइव में आगे लिखा है, "बाल्टिमोर सन अखबार के एक पत्रकार ने कहा कि जैक रूबी ने ओसवाल्ड को केनेडी की हत्या के लिए पैसे दिए थे, जो उसके परिवार के खर्च के लिए था। हत्या के बाद जैक रूबी ने खुद ओसवाल्ड को मार दिया"

ओसवाल्ड को दक्षिणपंथी गुट ने क्यों चुना, इसके भी तर्क हैं। ओसवाल्ड सोवियत से लौटा था, तो शक यही होता कि यह सोवियत की साजिश है। इससे जो शीत युद्ध की दुश्मनी अब कमजोर पड़ने लगी थी, वह वापस खड़ी हो जाती। अमेरिका में बैठे कम्युनिस्टों का शिकार भी आसान होता।

एक और तथ्य यह है कि ओसवाल्ड ने सोवियत से लौटने के बाद एक कट्टर दक्षिणपंथी के कंपनी में नौकरी शुरु की। उसके सभी दोस्त दक्षिणपंथी थे। एक सोवियत से लौटा कम्युनिस्ट ऐसा क्यों कर रहा था? क्या यह उसकी चाल थी?

यह तो तय है कि ओसवाल्ड एक महज प्यादा था। एक 24 साल का युवक इतनी बड़ी योजना अकेले बना रहा होगा, यह संभव नहीं। हत्या से ठीक पहले वह दक्षिणपंथ के गढ़ में था, जहाँ केनेडी का स्वागत ही इस पोस्टर से हुआ कि केनेडी एक सोवियत दलाल है और अपराधी है। वहाँ ऐसे सैकड़ों लोग थे जो केनेडी के मरने से खुश होते।

हत्या के चार साल बाद न्यू ऑर्लीन्स जिले के अटॉर्नी जिम गैरीसन ने एक तफ़्तीश शुरु की। इस साजिश के सबसे करीब अगर कोई पहुँचा तो वह जिम गैरीसन ही थे। उन्होंने ही हत्या के पहले मुजरिम को कचहरी तक

पहुँचाया। वह मुजरिम न्यू ऑर्लींस का धनाढ्य दक्षिणपंथी व्यवसायी क्ले शॉ था।

गैरीसन रिपोर्ट के अनुसार उसने ही ओसवाल्ड को हत्या के लिए तैयार किया था। वह एक समलैंगिक क्लब चलाता था, जिसमें ओसवाल्ड भी देखा गया था। और क्लब के एक सदस्य के अनुसार उन्होंने मिल कर केनेडी हत्या की योजना बनायी थी। उनके साथ CIA के कास्त्रो-विरोधी ऑपरेशन मॉन्गूज़ का नेता डेविड फेरी भी था। डेविड फेरी, माफ़िया डॉन कार्लोस मार्चेलो का ख़ास आदमी था, जिसे केनेडी हत्या के पीछे माना जाता है।

यह संभव है कि इन सबने मिल कर योजना बनायी हो। आखिर केनेडी की हत्या का सबसे बड़ा फायदा अगर किसी को हुआ, तो वह दक्षिणपंथ को। कुछ साल बाद मार्टिन लूथर किंग और बॉबी केनेडी को भी मार ही दिया गया। ये तीनों ही आखिर 'सिविल राइट्स बिल 'के तीन स्तंभ थे, और तीनों का खात्मा हो गया।

अगर ये सब सच था, तो लिंडन जॉनसन के लिए उनका आकलन ग़लत था। उन्होंने राष्ट्रपति बनने के बाद केनेडी का स्वप्न पूरा किया। 'सिविल राइट्स बिल 'पास हुआ और लिंडन जॉनसन ने ही उस पर हस्ताक्षर किए।

क्या यह सब चाल लिंडन जॉनसन की ही तो नहीं थी?

केनेडी के बाद वह राष्ट्रपति तो बने ही, अगला चुनाव भी जीते। FBI निदेशक एड्गर हूवर उनके इस हद तक चमचे थे कि उनकी बेटियों का कुत्ता गुम हो जाता, तो वह हूवर को फ़ोन घुमाते।

लिंडन जॉनसन ने एक दूसरा कुत्ता भी खरीदा। एक दिन एड्गर हूवर सामने दिखे तो लॉन की ओर देख चिल्लाए, "एड्गर! एड्गर!"

हूवर ने कहा, "राष्ट्रपति महोदय! मैं तो सामने खड़ा हूँ।"

जॉनसन ने हँस कर कहा, "तुम्हें नहीं, कुत्ते को बुला रहा हूँ। उसका नाम एड्गर रखा है।"

एक ही आदमी था, जिसके एक हाथ में दक्षिणपंथ, दूजे में FBI और CIA था। इस बूढ़े शेर को दबा कर युवा केनेडी राष्ट्रपति तो बन गए थे, लेकिन ज्यादा दिन टिक न सके। जॉनसन के अपने गढ़ टेक्सास में उनकी हत्या कर दी गयी।

राजतंत्र के जमाने से, राजा की हत्या का तो एक ही मतलब होता है- तख्तापलट।

• • •

संदिग्ध 6: CIA

युद्ध एक व्यवसाय है। यह आधुनिक पूँजीवाद का एक मजबूत स्तंभ है। अगर अमरीका 'ग्रेट डिप्रेशन 'से बाहर आया, तो इसकी बड़ी वजह द्वितीय विश्व-युद्ध थी। अमेरिका ने प्रथम विश्वयुद्ध के बाद ही अपने हथियारों का ज़ख़ीरा तैयार करना शुरु किया था, लेकिन उनका बिक्री या प्रयोग ही नहीं हो रहा था। ऊपर से आर्थिक मंदी भी आ गयी। यह तो धन्य हो विश्व-युद्ध कि अमेरिका ने सोवियत, इंग्लैंड और यहाँ तक कि जर्मनी से हथियारों के सौदे किए और खूब धन बनाया।

यहाँ बात मात्र अमरीकी फौज की नहीं हो रही। अमेरिका में एक फौज-व्यवसायी गठबंधन (मिलिट्री-इंडस्ट्री कॉम्प्लेक्स) रहा है, जिसमें देश के धन्ना सेठों (जैसे रॉकेफेलर, फोर्ड) का पैसा लगता रहा है। यही लॉबी सबसे शक्तिशाली लॉबी भी है, जिसका नियंत्रण राजनीति से लेकर पेन्टागन तक है। अगर अंबानी भारतीय सेना के लिए मिसाइल बनाने लगें, तो उनके व्यवसाय के लिए जरूरी है कि मिसाइल चलते भी रहें।

आइजनहावर ने कहा था, "आने वाले समय में हमारे देश में पल रहा सैन्य हथियारों का व्यवसाय सबसे शक्तिशाली भी होगा, और हमारे देश के लिए सबसे बड़ा खतरा भी"

विश्व-युद्ध के बाद भी अगर देखें, तो अमेरिका अनवरत युद्ध में है, जबकि उसकी मुख्य भूमि पर कोई युद्ध हुआ ही नहीं (स्वतंत्रता संग्राम और गृह-युद्ध के अतिरिक्त)। अमेरिका ने कहाँ-कहाँ नहीं लड़ा? कोरिया,

वियतनाम, इराक, इथोपिया, इरान, अफ़ग़ानिस्तान, सीरिया, लीबिया। हर जगह हथियार जा रहे हैं। बाकी देशों के साथ हथियार डील चलते रहे हैं। भारत-पाकिस्तान युद्ध हो या भारत-चीन युद्ध, अमरीकी हथियार वहाँ भी लगे। डॉलर वहाँ के व्यवसायियों के जेब में जा रहा है, और घूम-फिर कर अमरीकी खजाने में भी।

इसमें सब मिले हुए हैं। शांति पुरस्कार बाँटने वाला नॉर्वे हथियारों और फौजी इंटेलिजेंस का बड़ा धंधा चलाता है। इसमें कोई दो राय नहीं कि ISIS जैसे संगठनों को हथियार इन्हीं देशों से जाते हैं। ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, सोवियत (अब रूस) भी अपनी धरती पर नहीं लड़ते, बाकी देशों से हथियार डील करते रहे हैं।

अब अगर कोई राष्ट्रपति युद्ध ही रोक दे? क्यूबा पर आक्रमण न करने की ठान ले। सोवियत से अच्छे संबंध बना ले। घोषणा कर दे कि वियतनाम से अगले दो साल के अंदर फौज वापस बुला ली जाएगी। शांति की अपील करता फिरे। तो यह धंधा ही बंद? हथियार जंग खाकर सड़ जाएँगे, लेकिन बिकेंगे नहीं। अरबों डॉलर पानी में?

बल्कि, हालात तो ऐसे बनाने चाहिए कि आतंकवाद बढ़े, अशांति बढ़े, तमस बढ़े। फिर राष्ट्रपति के पास असीम ताकत होगी, कि वह चाहे तो आतंकवाद के नाम पर पूरे इराक को ध्वस्त कर डाले। अफ़ग़ानिस्तान मिटा दे। या फिर, क्रांति और तख़्तापलट के बीज बोए, और आंदोलनकारियों तक हथियार पहुँचाए। इस तरह की पौध उगाते रहने का काम ही CIA का है। कन्फ्लिक्ट बना रहे। भारत और पाकिस्तान अपनी सकल उत्पाद का बड़ा प्रतिशत रक्षा-बजट में लगाते रहें, और उनका स्वास्थ्य-शिक्षा बजट बस 2-3 % बना रहे।

जिस साल केनेडी की हत्या हुई, उसी साल दो और राष्ट्राध्यक्षों की हत्या हुई। फरवरी में इराक में रमजान क्रांति हुई और 'बाथ पार्टी 'ने तख्तापलट कर दिया। प्रधानमंत्री को गोली मार दी गयी। नवंबर में दक्षिण वियतनाम में तानाशाह डिएम को मार दिया गया। इन दोनों में CIA का हाथ था। संभव हो कि हैट्रिक भी बना ली हो, केनेडी को मार कर।

लेकिन, यह CIA ने अगर किया, तो किया कैसे?

ली हार्वे ओसवाल्ड को किसी ने केनेडी की हत्या करते नहीं देखा। उसे उस बिल्डिंग के दूसरे तल पर जरूर देखा गया, जिसके छठे तले की खिड़की से गोली चली थी। और फिर उसने एक पुलिसकर्मी की हत्या भी कर दी, जिसके चश्मदीद थे। उसके बाद वह पकड़ा गया, और दो दिन बाद मारा गया। पता नहीं लगा कि वह था कौन?

लेकिन, यह हम जानते हैं कि वह अमरीका के फौज से निकल कर सोवियत गया था। सोवियत को यह बात पता नहीं लगी, अन्यथा एक फौजी को कभी अपने देश में रहने नहीं देते। एक पाकिस्तानी फौजी अगर भारत में भेष बदल कर काम करे, तो वह क्या कहलाएगा? ISI एजेंट? सीधा सा तर्क तो यही है कि ओसवाल्ड को फौज ने इंटेलीजेंस (CIA) का प्रशिक्षण देकर सोवियत में प्लांट कर दिया। इसके लिए उसे बाक़ायदा रूसी भाषा का प्रशिक्षण भी दिया गया, और उसने अमरीकी फौज में ही इस भाषा की परीक्षा भी दी थी। वह रूसी थोड़ा-बहुत बोल लेता था, और उसके दोस्त उसे 'ओस्वाल्डोविच 'बुलाते थे।

तीन साल बाद वह रूसी भाषा सीख कर, और सोवियत को करीब से देख कर लौट आता है। या यूँ भी कह सकते हैं कि एक ख़ास मिशन के लिए बुला लिया जाता है। यह वही वक्त था जब क्यूबा मिसाइल संकट चल रहा था, और केनेडी-CIA में अनबन भी चलने लगी थी। ओसवाल्ड एक बेहतरीन एजेंट तो नहीं, लेकिन एक अच्छा बलि का बकरा ज़रूर बन सकता था। आपराधिक प्रवृत्ति का था ही, परिवार और जीवन से निराश। अच्छा शार्प-शूटर। कोई ख़ास संपत्ति नहीं। उसकी रूसी पत्नी की देख-भाल कोई बड़ी बात नहीं थी।

इसके अलावा भी CIA के माफ़िया सहयोगी मौजूद थे ही, जो कास्त्रो के ख़िलाफ़ गुप्त षडयंत्र में खुल कर सहयोग दे रहे थे। CIA और माफ़िया के इन संयुक्त षडयंत्रों पर एक डॉक्यूमेंट्री बनी थी— कास्त्रो को मारने के 638 तरीके। केनेडी इसमें भी रोड़ा अटकाने लगे थे।

उस वक्त तक CIA और KGB, दोनों का काम ही आपराधिक हो गया था। भिन्न-भिन्न देशों में राजनैतिक षडयंत्र और हत्याएँ, वह भी बेदाग़

रह कर। उनसे बेहतर राष्ट्रपति की हत्या का मास्टरप्लान आखिर कौन बनाता? FBI भी उनकी सहयोगी ही थी।

केनेडी ने CIA के कर्ता-धर्ता एलन डुल्लेस को निकाल दिया। यह उनकी पहली ग़लती थी। विडंबना यह कि केनेडी हत्या जाँच की जो वारेन कमीशन बनायी गयी, उसका एक प्रभारी एलन डुल्लेस को ही बनाया गया। भला राष्ट्रपति ने जिसको काम से निकाला हो, वह कैसी जाँच करेगा? ख़ास कर तब, जब वह इस षडयंत्र में स्वयं लिप्त रहा हो। उन्हें इस कमीशन में बिठाया था स्वयं राष्ट्रपति लिंडन जॉनसन ने।

सिर्फ एलन डल्लेस ही नहीं, केनेडी ने CIA के डिप्टी-डायरेक्टर चार्ल्स कबाल को भी निकाल दिया था। ये सभी खुफ़िया 'क्रिमिनल माइंड 'के लोग थे, जो काम से बाहर भी CIA से पूरी तरह जुड़े थे।

केनेडी की हत्या जहाँ हुई, उनका काफ़िला वहाँ से गुजरने वाला ही नहीं था। टेक्सास के मेयर अर्ल कबाल ने यह रास्ता आखिरी मोमेंट पर बदलवा दिया।

अर्ल कबाल CIA के पूर्व उपनिदेशक चार्ल्स कबाल के भाई थे!

◆ ◆ ◆

वारेन कमीशन की अंतिम रिपोर्ट

जून, 1962 में ली हार्वे ओसवाल्ड सपरिवार मॉस्को से टेक्सास (अमेरिका) आया। अगले महीने उसे वहीं एक मेटल फैक्ट्री में काम मिल गया। सोवियत से लौटने के कारण FBI ने उससे जुलाई-अगस्त के दौरान पूछताछ की। उसने भरोसा दिलाया कि वह सोवियत का जासूस नहीं है। अक्तूबर, 1962 में उसे डल्लास की फ़ोटोग्राफ़ी कंपनी में नौकरी मिल गयी। उसी दौरान उसकी दोस्ती एक महिला रुथ पेन से हुई, जिसकी रुचि रूसी भाषा में थी। वह ओसवाल्ड की रूसी पत्नी और बच्ची को लेकर पास के ही इरविन शहर में अपने घर ले जाती है।

20 मार्च, 1963 को वह डाक से एक इतालवी राइफ़ल मंगाता है, जो शिकागो के कंपनी से आता है। इस मंगाने के लिए वह 'हिडेल 'छद्मनाम का प्रयोग करता है, जो संभवत: फिडेल (कास्त्रो) से प्रेरित है। 6 अप्रिल, 1963 को उसकी नौकरी चली जाती है।

10 अप्रिल, 1963 को वह अपनी पत्नी के लिए चिट्ठी छोड़ जाता है, जिसमें तमाम जानकारियों के साथ यह भी लिखा होता है कि अगर मैं न लौटूँ तो जेल में पता कर लेना। उसी दिन वह एक दक्षिणपंथी नेता और रिटायर्ड फौजी ए. वाकर पर छुप कर गोली चलाता है, लेकिन वह बच जाते हैं। यह जानकारी जाँच के दौरान बाद में मिली।

मई, 1963 में वह न्यू ऑर्लींस शहर में एक कॉफी कंपनी में नौकरी करने चला जाता है। वहाँ वह 'हिडेल 'छद्मनाम से ही एक कास्त्रो-समर्थक संगठन (Fair play for Cuba) बनाता है, जिसका वह अकेला ही सदस्य होता है। जुलाई में उसकी नौकरी चली जाती है।

अगस्त, 1963 में उसे कास्त्रो-समर्थक पर्चे बाँटने की वजह से FBI पकड़ कर ले जाती है। वह दो बार रेडियो पर साक्षात्कार भी देता है, जिसमें वह खुद को 'कम्युनिस्ट नहीं, मार्क्सवादी-लेनिनवादी 'कहता है। वह कहता है कि दोनों दो चीजें है।

23 सितंबर, 1963 को वह अपने परिवार को रुथ पेन के साथ वापस इरविन, टेक्सास भेज देता है; और चार दिन बाद, खुद मेक्सिको सिटी के सोवियत और क्यूबा दूतावास चला जाता है। उसे दोनों ही देशों का वीसा नहीं मिलता।

अक्तूबर, 1963 में वह वापस टेक्सास लौट जाता है। रुथ पेन का पड़ोसी डल्लास के एक किताब गोदाम में काम कर रहा होता है, जहाँ उसकी भी 14 अक्तूबर को नौकरी लग जाती है। वह वहीं पेयिंग-गेस्ट बन कर रहता है, और सप्ताहांत में अपने परिवार से मिलने इरविन शहर आता रहता है। 20 अक्तूबर को उसकी दूसरी बेटी जन्म लेती है।

21 नवंबर (गुरुवार) को वह अपने सहकर्मी के साथ परिवार से मिलने इरविन गया।

उसके सहकर्मी ने पूछा, “तुम तो शुक्रवार को घर जाते थे। एक दिन पहले क्यों?”

उसने कहा, “मुझे कुछ पर्दे के रॉड लेकर आने हैं।”

वह पर्दे के रॉड नहीं, राइफ़ल लाने गया था। शाम को उसने रुथ पेन के बच्चों के साथ खेला, और रात को राइफ़ल खोल कर पैक कर लिया।

22 नवंबर, यानी हत्या की सुबह अपने सहकर्मी की गाड़ी पर ही वह ‘पर्दे के रॉड ’(राइफ़ल) एक भूरे गत्ते के बैग में लेकर ऑफिस आ गया।

केनेडी का काफ़िला 12.30 बजे उसकी बिल्डिंग के बगल से गुजरा, जब उसने छठे तल की खिड़की से तीन गोलियाँ चलायी। उनमें एक केनेडी के गले को चीरती हुई आगे बैठे गवर्नर कोनोली के लगी। दूसरी केनेडी के सर में लगी।

वह राइफ़ल वहीं छोड़ कर दूसरे तल पर भोजन-कक्ष में आता है। वहाँ हत्या के तुरंत बाद बिल्डिंग की जाँच करने आए एक पुलिसकर्मी उसे देखते हैं। बाहर अफरा-तफरी मची थी, और वह कोला खरीद कर पी रहा था। उस पर शक नहीं होता।

लगभग 12.33 बजे वह बिल्डिंग से निकल गया, और 1 बजे अपने कमरे पर पहुँचा। घर से निकल कर वह बाहर टहलने निकला। तब तक किसी चश्मदीद ने एक ब्यौरा दिया कि छठे तल पर एक गोरा युवक गोली चला रहा था। यह बात रेडियो पर कही जा रही थी।

एक कि.मी. की दूरी पर 1.16 बजे उसे पुलिस अफसर टिपिट रोक कर पूछताछ करते हैं। वह उन्हें गोली मार देता है। उसके बाद वह चल कर टेक्सास थिएटर गया, जहाँ से उसे रिवॉल्वर के साथ गिरफ्तार कर लिया गया।

राइफ़ल भी कुछ देर में गोदाम से बरामद हुआ, हालांकि इस पर उंगलियों के निशान नहीं मिल सके। ओसवाल्ड की एक राइफ़ल लिए तस्वीर उसकी पत्नी के माध्यम से मिली, जो मिलती-जुलती थी। एक जेल से दूसरी जेल ले जाने की प्रक्रिया में जैक रूबी नामक केनेडी-समर्थक गुस्से में उसे गोली मार देता है।

इस हत्या में किसी भी बाहरी या आंतरिक एजेंसी, या किसी माफ़िया गिरोह का संबंध नहीं साबित किया जा सका। किसी और के गोली चलाने के सबूत भी नहीं मिले। हत्या अकेले ली हार्वे ओसवाल्ड ने की।

केनेडी के साथ बैठी उनकी पत्नी जैकलीन और दो गाड़ी पीछे चलते लिंडन जॉनसन सुरक्षित रहे। हत्या के आधे घंटे बाद केनेडी की अस्पताल में मृत्यु हो गयी, और लिंडन जॉनसन ने राष्ट्रपति पद संभाल लिया।

◆ ◆ ◆

केनेडी की मृत्यु पर नास्तिक साम्यवादी देश सोवियत में गिरजाघर की घंटी बजायी गयी, और ख्रुश्चेव ने इसे सोवियत का शोक बताया।

भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा, “आज ही के दिन सौ साल पहले अब्राहम लिंकन ने वह गेटीसबर्ग का भाषण दिया था, जिसने दास-प्रथा खत्म की। आज सौ साल बाद उन्हीं के पथ पर चलते राष्ट्रपति केनेडी की उनकी तरह हत्या हो गयी। लेकिन, ये शांति और मुक्ति के प्रतीक दुनिया में सदैव मौजूद रहेंगे।”

◆ ◆ ◆

उपसंहार

“मार्टिन लूथर किंग की हत्या हो गयी है। शहर में दंगा फैल गया है। आप अश्वेतों के इलाके में कैम्पेन नहीं कर सकते।”
“फिर तो मुझे जाना ही होगा।”
(रॉबर्ट ‘बॉबी ’केनेडी, इंडियानापॉलिस, अप्रिल 1968)

उस दिन अश्वेतों की बस्ती में एक ट्रक के ऊपर खड़े होकर बॉबी केनेडी ने अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ भाषण दिया,
“आज मैंने अपने दूसरे भाई को खोया है। उसी तरह खोया है। उसी लड़ाई में खोया है। मैं आपके साथ बैठ रोने आया हूँ। आपके मन में आक्रोश होगा कि गोरे लोग इसके जिम्मेदार हैं। तो यह गोरा आपके बीच खड़ा है। आप अपना आक्रोश मुझ पर उतार लें। यह वक्त अमेरिका को एक साथ खड़े होने का है, मार्टिन लूथर किंग के वाशिंगटन में देखे स्वप्न के पूरा करने का। उस नयी सुबह देखने का। जब एक गोरा किसी अश्वेत की मौत पर उसके कंधे पर सर रख कर साथ रोए, और एक अश्वेत एक गोरे की मौत पर।”

एक समय वह भी था जब बॉबी केनेडी उस जोसेफ़ मैकार्थी के बायें हाथ थे, जिसने निग्गरों के ख़िलाफ़ जहर उगले थे। एक दशक बाद यह व्यक्ति अश्वेतों का चहेता बन गया। यह फ़िल्म ‘अमेरिकन हिस्ट्री X ’में एडवर्ड नॉर्टन के किरदार की याद दिलाता है, जो अश्वेतों से बेइंतहा नफ़रत करता है, लेकिन उनके बीच रह कर उसका हृदय-परिवर्तन हो जाता है।

जैक केनेडी की हत्या के बाद जब बॉबी न्यूयॉर्क में अपना पहला सीनेटर चुनाव लड़ने आए, तो वह एक गाड़ी की छत पर खड़े होकर लोगों से हाथ मिलाते रहते। उनके चुनाव-मैनेजर ने कहा, “उस आदमी से उदास चेहरा अमेरिका तो क्या, दुनिया ने नहीं देखा।”

बॉबी को यह जीवन भर लगता रहा कि अपने भाई के मृत्यु के ज़िम्मेदार वह स्वयं हैं। यही बात जैक के बेटे जॉन एफ. केनेडी जूनियर ने भी कही — 'बॉबी को सब पता था'। बॉबी CIA के कॉस्त्रो-विरोधी ऑपरेशन मॉन्गूज़ के संचालक थे, और माफ़िया विरोधी मुहिम के भी। उन्हें लगता रहा कि हत्या इनमें से एक वजह से हुई।

वह आदमी बदल गया था।

कैलिफ़ोर्निया में अंगूर के खेतों में स्पैनिश भाषी खेतिहरों ने हड़ताल किया। उन्हें दिन भर काम कर महज दो डॉलर मिलते थे, और एक छोटे कमरे में छह-छह लोग रहते थे। एक झोपड़पट्टी की तरह उनकी कॉलोनी, सामूहिक शौचालय की लाइन। और यह एक 600 बिलियन डॉलर सकल उत्पाद वाले देश की स्थिति थी। उन पर पुलिस और पूँजीपति अलग अत्याचार कर रहे थे।

पहली बार, बॉबी केनेडी उनके घर पहुँचे। उनके साथ बैठ कर बात की। संभव है कि चुनावी पैंतरा हो, लेकिन उन लोगों के बच्चे आकर बॉबी से लिपट रहे थे। ये विडियो अब भी उपलब्ध हैं और उन आँखों को पढ़ना बहुत आसान है। यह व्यक्ति किसी पश्चाताप में जी रहा था।

वियतनाम युद्ध अपने सबसे बुरे रूप में आ रहा था। अमरीका का धन बह रहा था, और इसके फौजियों का खून भी उसी गति से बह रहा था। पूरे अमेरिका में इसका विरोध हो रहा था। हर तरफ अशांति थी, और हिप्पियों का उदय हो रहा था। बॉबी सरकार में थे, लेकिन कहा,
"हमारे देश में इतनी गरीबी बची है तो हम किस मुँह से वियतनाम में डॉलर बहा रहे हैं। यह मेरे भाई से विरासत में आयी, लेकिन अब इसे खत्म करने का वक्त आ गया है।"

यह बात ग़लत नहीं थी। मिसिसिपी डेल्टा में ऐसी अश्वेत बस्तियाँ थीं, जिनकी हालत अफ्रीका से भी बुरी थी। बच्चों की हड्डियाँ निकल रही थी, पेट फूले हुए। कोई सोच भी नहीं सकता था कि यह दुनिया की महाशक्ति अमरीका का एक कोना है।

यहाँ भी पहली बार बॉबी केनेडी ही पहुँचे, और जब एक झोपड़ी में सर झुका कर घुसे तो पत्रकार ने कहा,

“अमेरिका के सबसे रईस का बेटा आज अमेरिका के सबसे गरीब के घर में आया है।”

सीनेटर बॉबी ने दो पहल की। एक तो ‘न्यूनतम वेतन विधेयक ’लाया कि हर व्यक्ति को एक ख़ास वेतन तो मिले ही। दूसरा काम कि मिसिसिपी डेल्टा में एक प्रोजेक्ट शुरू किया गया, जहाँ इन अश्वेतों को नौकरी मिले। और इसके प्रभाव दिखने शुरू हो गए।

बॉबी केनेडी को हर अश्वेत गले लगा रहा था और चिल्ला रहा था—हमारा राष्ट्रपति बॉबी केनेडी!

जून, 1968 में बॉबी केनेडी ने लॉस एंजेल्स में अपना राष्ट्रपति चुनावी भाषण दिया। भाषण खत्म होते ही एक फ़िलिस्तीनी ने तीन गोलियाँ चला कर सरे-आम हत्या कर दी।

अरब-इजरायल विवाद पर यह पहली राजनीतिक हत्या थी। वियतनाम युद्ध से फौज वापस बुलाने की कवायद चल रही थी। अमेरिकी हथियार-लॉबी को नया युद्ध मिल गया था।

कॉन्फ़्लिक्ट दुनिया से कहाँ खत्म होते हैं? उसे सुलझाने वाले एक-एक कर गिरते जाते हैं। यही नियति है। डेस्टिनी।

कुछ संदर्भ:

1. An unfinished life: John F. Kennedy. Robert Dellek
2. Why England Slept. John F. Kennedy (इंटरनेट पर मुफ़्त उपलब्ध)
3. The making of the president. Theodore White
4. Prelude to leadership. John F. Kennedy (आर्काइव पर मुफ़्त उपलब्ध)
5. The Second World War. Antony Beevar
6. A people's history of the United States. Howard Zinn
7. Freedom from fear. David M. Kennedy
8. Capone. Dierdre Blair
9. Cold War: A new history. Gaddis and Lewis
10. Documentary: World War I, The American Legacy (यूट्यूब पर उपलब्ध)
11. Documentary: WW2 (Now in colour) नेटफ्लिक्स पर उपलब्ध
12. Documentary: Cold war. CNN (यूट्यूब पर उपलब्ध)
13. Documentary: Al Capone Gangster (यूट्यूब पर उपलब्ध)
14. India's China War. Neville Maxwell
15. J. Edgar Hoover. Curt Gentry
16. Post War. Tony Judt

17. US Archive (Kennedy assassination Warren Commission files)
18. Documentary: Bobby for president
19. The autobiography of Martin Luther King Junior
20. India. J K Galbraith